R.N.I. No.HIN/2002/8718 www.aksnews.com M.P./BHOPAL/642/2021-23

In Pursuit of Truth

पाक्षिक

अक्स

वर्ष : 21 । अंक : 09
01 से 15 फरवरी 2023
पृष्ठ : 48
मूल्य : 25 रु.

KHELO INDIA YOUTH GAMES

- 13 दिन • 27 खेल
- 9 शहर • 23 गेम वेन्यू
- 6000+ खिलाड़ी

खेलों की दुनिया में छाया मध्य प्रदेश

खेलो इंडिया में ओलंपिक की तर्ज पर किए गए सारे इंतजाम

5वें खेलो इंडिया के आयोजन से युवाओं को मिलेगी उड़ान

26th JANUARY | HAPPY REPUBLIC DAY

ANU SALES CORPORATION

We Deal in Pathology & Medical Equipment

Address : M-179, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023

9329556524, 9329556530 Email : ascbhopal@gmail.com

इस अंक में

प्रशासनिक

9 | 6 साल बाद आईएएस...

मप्र के गैर राज्य प्रशासनिक सेवा (एनएएस) के अधिकारियों को बीते 6 साल से प्रमोट नहीं किया जा रहा है। इस कारण करीब 70 अधिकारी बनने का सपना लिए ही रिटायर हो गए। साथ ही 100 से ज्यादा अधिकारी इस कतार में हैं।

राजपथ

10-11 | जनता के दर पर...

मप्र को बीमारू राज्य से आज विकसित राज्य बनाने वाली शिवराज सरकार विकास को और गति देने के लिए अब जनता के दर पर दस्तक देगी। इसके लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपनी कैबिनेट के सभी...

बजट

14 | विकास पर फोकस

मप्र में इस साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। इसके पहले शिवराज सरकार वर्तमान कार्यकाल का अंतिम बजट मार्च में प्रस्तुत करेगी। चुनावी वर्ष होने के कारण सरकार का सबसे अधिक फोकस विकास पर है। साथ ही सरकार सभी वर्गों...

राजकाज

16-17 | पार्टियों का कास्ट...

मप्र में चुनावी साल आते ही राजनीतिक महारथियों का फोकस एससी-एसटी और आदिवासी वर्ग पर मुड़ गया है। भाजपा और कांग्रेस ने अपना चुनावी प्लान अनुसूचित जाति को साधने के हिसाब से बना लिया है और जमीनी स्तर पर काम भी शुरू कर दिया है। कांग्रेस...

आवरण कथा 24, 25, 26, 27, 28

वर्ष 2023 आत्मनिर्भर मप्र के लिए मील का पत्थर साबित होने वाला है। इस साल में पहले प्रवासी भारतीय सम्मेलन, फिर ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट और अब खेलो इंडिया यूथ गेम्स से मप्र की पहचान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूत हुई है। खेलो इंडिया यूथ गेम्स से तो मप्र खेलों की दुनिया में छा गया है। इस आयोजन के लिए प्रदेश के 8 शहरों में ओलंपिक की तर्ज पर सारे इंतजाम किए गए हैं। इस पांचवे खेलो इंडिया यूथ गेम्स के आयोजन से मप्र के युवाओं को खेलों की दुनिया में नई उड़ान मिलने वाली है।

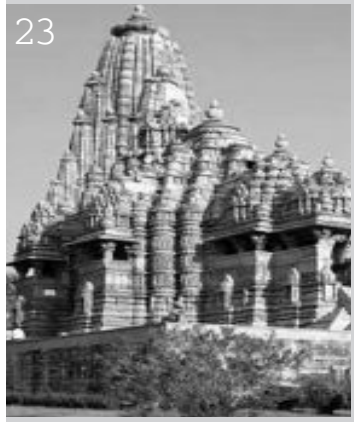

राजनीति

30-31 | चुनावी साल, चुनौतियां...

2022 का साल खट्टी-मीठी यादों को समेटे गुजर गया है, 2023 का आगाज हो चुका है। नए साल में आम लोगों के साथ-साथ राजनीतिक पार्टियां भी नए जोश और उत्साह के साथ 2023 की चुनौतियों के साथ दो-दो हाथ करने को तैयार हैं। पॉलिटिकल पंडित 2023...

महाराष्ट्र

35 | ट्रिपल इंजन सरकार...

लोकसभा चुनाव के नतीजे भी विधानसभा जैसे ही हों, जरूरी नहीं होता। महाराष्ट्र को लेकर भी भाजपा नेतृत्व के मन में कहीं न कहीं ये सवाल जरूर होगा और यही वजह है कि भाजपा छोटी से छोटी चूक की भी गुंजाइश नहीं छोड़ रही है। 2018 के मप्र, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में...

बिहार

38 | जैसे को तैसा!

नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव अपने-अपने बुद्धि चातुर्य, राजनीतिक कौशल और अनुभव के हिसाब से एक-दूसरे को शिकस्त देने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। तेजस्वी यादव के पास नीतीश कुमार जैसा अनुभव तो है नहीं, लिहाजा अपने पिता...

6 -7 अंदर की बात
41 महिला जगत
42 अध्यात्म
43 कहानी
44 खेल
45 फिल्म
46 व्यंग्य

अपनी बात

बहुत देर कर दी हुजूर आते–आते...

शा यर जिगर मुरादाबादी का एक शेर है...

जिंदगी इक हादसा है और कैसा हादसा
मौत से भी खत्म जिसका सिलसिला होता नहीं

यह शेर मप्र में निरंतर हो रहे सड़क हादसों पर सटीक बैठता है। मप्र में सड़क हादसे और उनमें होने वाली मौत के आंकड़े रोंगटे खड़े कर रहे हैं। एक साल में मौत का आंकड़ा 12 हजार पार कर गया है। हाल में आई रिपोर्ट में पता चला है कि सबसे ज्यादा सड़क हादसे तेज गति से गाड़ी चलाने के कारण हो रहे हैं। और इसमें सबसे बड़ी संख्या युवाओं की है जो ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कई बार राज्यों को निर्देश दिया है कि वे यातायात नियमों को सख्त बनाएं। खासकर दोपहिया वाहन चालकों के लिए हेलमेट अनिवार्य करें। इस बात को केंद्र सरकार भी कह चुकी है, लेकिन हैरानी की बात यह है कि मप्र सरकार के कान पर जूं काफी देर बाद रेंगी। मप्र की सड़कों पर बिना हेलमेट वाहन चलाया तो ऐसे वाहन चालकों को अब 250 की जगह 300 रुपए जुर्माना देना होगा। बिना सीट बेल्ट के वाहन चलाते पाए जाने पर लगने वाला जुर्माना यथावत 500 रुपए रखा गया है। गाड़ी मॉडिफाई कराने वाले वाहन चालकों पर 1 लाख का जुर्माना होगा। कैप में ओवरलोडिंग करने पर अभी तक प्रति यात्री 750 रुपए जुर्माना था उसे घटाकर प्रति पैसेंजर 200 रुपए कर दिया गया है। बता दें कि 9 अक्टूबर 2019 को पार्लियामेंट ने नियमों में संशोधन कर धारा 200 में समन शुल्क लगाने का अधिकार राज्यों को दिया था। अधिकांश राज्यों ने संशोधन के बाद जुर्माने की राशि बढ़ा दी है। मप्र में यह अब तक नहीं हो पाया था। 24 मई 2022 को कैबिनेट की बैठक में यह प्रस्ताव आया तो मंत्रिमंडल उपसमिति बनाकर जुर्माने की दरें तय करने के लिए उन्हें अधिकृत किया गया था। इस समिति में लोक निर्माण मंत्री गोपाल भार्गव, सहकारिता मंत्री अरविंद भदौरिया, परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत शामिल थे। समिति ने 6 दिसंबर 2022 को अपनी अनुशंसाएं कर दी थीं। इसके बाद जनवरी में हुई कैबिनेट बैठक में जुर्माने की राशि पर मुहर लगाई गई। करीब सवा 3 साल बाद सरकार ने यह कदम उठाया। इस दौरान हजारों लोग सड़क हादसे के शिकार हुए। स्टेट पुलिस ट्रेनिंग एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट ने मप्र में सड़क हादसों पर रिपोर्ट तैयार की है। ये इंस्टीट्यूट सुप्रीम कोर्ट द्वारा बनाई गई रोड सेफ्टी कमेटी की नोडल एजेंसी भी है। रिपोर्ट के अनुसार शहर के मुकाबले ग्रामीण सड़कों में सबसे ज्यादा हादसे और उनमें मौत हो रही हैं। मप्र में साल 2021 में कुल 48,877 सड़क हादसे हुए। इनमें 12,057 मौत और 48,956 लोग घायल हुए। ग्रामीण क्षेत्र में 58 प्रतिशत (28,175) और शहरी क्षेत्र में 42 प्रतिशत (20,702) सड़क हादसे हुए। ग्रामीण क्षेत्र में शहर की तुलना में 71 प्रतिशत (8,562) मृत्युदर है। शहरी क्षेत्र में मृत्युदर 29 प्रतिशत है। पीटीआई की रिपोर्ट के अनुसार साल 2021 में हुए सड़क हादसों में सबसे ज्यादा मौत 25 से 35 आयु वर्ग के बीच के लोगों की हुई है। इनमें 84 प्रतिशत (10,077) पुरुष और 19 प्रतिशत (1,980) महिलाएं हैं। प्रदेश में ओवर स्पीडिंग में कुल सड़क दुर्घटनाओं की संख्या 36,895 है। इनमें मरने वालों की संख्या 9,541 है। दो पहिया वाहन सबसे ज्यादा भिड़े। 21,941 हादसों में 5,742 लोगों की मौत और 23,442 लोग घायल हो गए। सड़क हादसों में 24 प्रतिशत (2,841) लोगों की मौत हिट एंड रन के कारण हुईं। अगर सरकार 2019 में ही सख्ती दिखाती तो इन मौतों पर विराम लग सकता था। खैर देर आए दुरुस्त आए।

– राजेन्द्र आगाल

पाक्षिक अक्स

वर्ष 21, अंक 9, पृष्ठ-48, 1 से 15 फरवरी, 2023

प्रकाशक एवं संपादक : राजेन्द्र आगाल

सम्पादकीय कार्यालय :
प्लाट नम्बर 150, जोन-1 मनोरमा कॉम्पलेक्स,
एफ-03, 04, प्रथम तल, एम.पी. नगर
भोपाल- 462011 (म.प्र.),
फोन नं. 0755-2557777, टेलीफेक्स - 0755-4017788
email : akshmagazine@gmail.com
Website : www.akshnews.com
RNI NO. HIN/2002/8718 MPBPL/642/2021-23

ब्यूरो
कोलकाता:- इंद्रकुमार, **छत्तीसगढ़:**- संजय शुक्ला, मार्केण्डेय तिवारी,
जयपुर:- आर.के. बिन्नानी, **लखनऊ :**- मधु आलोक निगम।

प्रदेश संवाददाता
094251 25096 (इंदौर) विकास दुबे
098276 18400 (जबलपुर) धर्मेन्द्र कथूरिया
094259 85070, (उज्जैन) श्यामसिंह सिकरवार
098934 77156, (गंजबासौदा) ज्योत्सना अनूप यादव
089823 27267, (रतलाम) सुभाष सोमानी
075666 71111, (विदिशा) मोहित बंसल

क्षेत्रीय कार्यालय
नई दिल्ली : ईसी 294 माया इंक्लेव मायापुरी
फोन : 9811017939
जयपुर : सी-37, शांतिपथ, श्याम नगर (राजस्थान)
मोबाइल-09829 010331
रायपुर : एमआईजी 1 सेक्टर-3 शंकर नगर,
फोन : 0771 2282517
भिलाई : नेहरू भवन के सामने, सुपेला, रामनगर,
भिलाई, मोबाइल 094241 08015
इंदौर : नवीन रघुवंशी, रघुवंशी कॉलोनी, इंदौर,
मो.-9827227000
देवास : जय सिंह, देवास
मो.-7000526104, 9907353976

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक, राजेन्द्र आगाल द्वारा आगाल प्रिंटर्स, प्लाट नं. 150, जोन-1, प्रथम तल, एफ-03, मनोरमा काम्पलेक्स, एम.पी. नगर भोपाल 462011 (म.प्र.), से मुद्रित एवं प्रकाशित

इस अंक में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने विचार हैं इनसे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।

पत्र–संपादक के नाम

akshnews.com

एकता से लड़ें चुनाव

मप्र के आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मजबूती से आगे आना होगा। कांग्रेस को प्रदेश में टिके रहने के लिए इस चुनाव में जीतोड़ मेहनत करनी होगी। तब कहीं जाकर वह भाजपा को टक्कर दे पाएगी। कांग्रेस को गुटबाजी न करके एकता के साथ ये चुनाव लड़ना चाहिए।

● **मिथुन सोनी,** राजगढ़ (म.प्र.)

बिजली एक बड़ी समस्या

प्रदेश सहित देशभर में अभी भी बिजली एक बड़ी समस्या के रूप में खड़ी है। एक आम आदमी को बिजली देना सरकार का दायित्व है। इसलिए राज्य सरकारों को इस ओर ध्यान देना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति बिजली से वंचित न रहे। ये उनका हक है। सरकार को इस समस्या को देखना होगा।

● **विजय पुरोहित,** इंदौर (म.प्र.)

किसानों की परेशानी

सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद आज भी कई जगह किसानों को अपने हक का पैसा नहीं मिल रहा है। विभागों में तमाम शिकायतें रोजाना पहुंच रही हैं। सरकार को सख्ती के साथ इस ओर कार्यवाही करनी चाहिए और घूसखोरों को कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए।

● **कुमेर सेन,** ग्वालियर (म.प्र.)

विकास की ओर बढ़ता मप्र

मप्र में इस वर्ष विधानसभा होने हैं। इसको लेकर सरकार कई आयोजन कर रही है। मप्र में होने वाले उपरोक्त बड़े आयोजनों को भाजपा पहले विधानसभा और फिर लोकसभा चुनाव में इसे अपनी उपलब्धि के रूप में पेश करेगी। गौरतलब है कि मप्र सरकार द्वारा प्रदेश को कंपलीट बिजनेस ऑल्यूशन के साथ फ्यूचर रेडी स्टेट बनाने से प्रदेश में निवेश के लिए देश–विदेश के निवेशकों का रूझान बढ़ रहा है। यहां बिजनेस स्टार्ट करने के लिए शासकीय अनुमतियों से लेकर इंडस्ट्री प्रारंभ करने के बाद उसके सफल संचालन के लिए आवश्यक सभी सुविधाएं आसानी से प्राप्त हो जाती हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा राज्य मप्र भारत का हृदय है और आज ये सबसे तेज गति से विकास पथ पर अग्रसर है।

● **दिनेश प्रजापति,** भोपाल (म.प्र.)

मेट्रो का इंतजार

जबसे भोपाल और इंदौर में मेट्रो का काम शुरू हुआ है, तब से यहां के रहवासियों में मेट्रो में घूमने की चाहत है। अब ये दोनों शहर भी मेट्रो सिटी कहलाएंगे। भोपाल और इंदौर में मेट्रो ट्रेन प्रोजेक्ट का काम तेजी से चल रहा है। 2023 के अंत तक शायद मेट्रो में घूमने का मौका मिल पाएगा। भोपाल में पहले ट्रायल और लोकार्पण होगा, वहीं स्थानीय दिक्कतों के चलते इंदौर में तीन महीने बाद लोग मेट्रो की सवारी कर सकेंगे।

● **ऋतिक वर्मा,** सीहोर (म.प्र.)

कांग्रेस के लिए वरदान होगी भारत जोड़ो यात्रा

राहुल गांधी ने कांग्रेस को पुनर्जीवित करने के लिए भारत जोड़ो यात्रा निकाली है। उनकी ये यात्रा कांग्रेस को मजबूती जरूरी देगी। कांग्रेस का यह प्रयोग अन्य राजनीतिक दलों के लिए चुनौती बनेगा। इस साल कई राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। कांग्रेस की यह यात्रा इन चुनावों में उसे मजबूत बनाएगी। वहीं अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों में भी कांग्रेस मजबूत विपक्ष के रूप में खड़ी दिखेगी। भारत जोड़ो यात्रा ने अखबारी सुर्खियों से गायब हुई कांग्रेस को एक बार फिर घर–घर में पहुंचा दिया है।

● **प्रीति सिंह,** नई दिल्ली

पाठकों से निवेदन

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएं पक्ष या विपक्ष जो भी संभव हो इस पते पर भेजें

अक्स

150 जोन–1, मनोरमा काम्पलेक्स,
एफ–02, 03, एमपी नगर, भोपाल

भाजपा से वरुण का मोहभंग

वरुण गांधी द्वारा हाल में दिए गए बयानों को टटोलें तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे वरुण गांधी का अब भारतीय जनता पार्टी से मोहभंग हो गया है। हाल के एक बयान में वरुण गांधी ने किसानों और नौजवानों को लेकर भाजपा की नीतियों पर सवाल उठाए। उन्होंने बढ़ती महंगाई को लेकर भी मौजूदा सरकार पर निशाना साधा। वरुण ने ट्वीट कर लिखा 'भ्रष्टाचार, महंगाई और आर्थिक नीतिगत अर्थव्यवस्था के कारण बड़ी संख्या में छोटे उत्पादक और दुकानदार काम-धंधा बंद करने पर मजबूर हैं। अमेजन, वॉलमार्ट के बजाय अपने पड़ोस के छोटे दुकानदारों से खरीदारी करके इनका साथ दीजिए। वैश्विक मंदी के समय इन्होंने ही देश की अर्थव्यवस्था को संभाला था।' वरुण गांधी ने बढ़ती बेरोजगारी के लिए भी सरकार को जिम्मेदार ठहराया। ऐसे में अब चर्चा है कि भाजपा के बाद वरुण गांधी के पास समाजवादी पार्टी में जाने का एकमात्र रास्ता बचा है। वरुण गांधी लंबे समय से उप्र की राजनीति कर रहे हैं। राज्य के किसान और युवा वर्ग वरुण की राजनीति से काफी प्रभावित हैं। विश्लेषकों का मानना है कि उप्र की राजनीति में वरुण एक बड़ा चेहरा हैं। ऐसे में अगर वह भाजपा का साथ छोड़ते हैं तो जाहिर तौर पर पार्टी को इसका नुकसान होगा।

फिर वही रार

राजस्थान में कांग्रेस पार्टी के बुरे दिन आ सकते हैं। सचिन पायलट और अशोक गहलोत की जुबानी जंग तो पहले से ही जारी थी, अब पायलट ने अपने चुनावी दौरे भी तेज कर दिए हैं। किसान सम्मेलन के नाम पर वे खुद को उसी रूप में पेश कर रहे हैं जैसा 2018 में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष रहते किया था। चर्चा है कि भाजपा विधानसभा चुनाव से पहले अशोक गहलोत की सरकार को गिरा सकती है। उनके पांच मंत्रियों और कुछ विधायकों के भाजपा नेतृत्व के संपर्क में होने की खबरों से यह संभावना तेज हुई है। भाजपा अब जोड़-तोड़ से अपनी सरकार बनाने के बजाय राष्ट्रपति शासन में चुनाव कराने की रणनीति बुन रही है। सूबे में हर चुनाव में सरकारें बदलने की परंपरा रही है। हिमाचल प्रदेश की तरह। इस नाते भाजपा मानकर चल रही है कि चुनाव बाद सरकार उसी की बनेगी। इससे सचिन पायलट की बेचैनी और बढ़ी है। आलाकमान ने तो उन्हें 2018 में ही मुख्यमंत्री बनाने का भरोसा दे रखा था। पर, अशोक गहलोत की हेकड़ी ने पानी फेर दिया। उन्हें उपमुख्यमंत्री का पद पाकर ही संतोष करना पड़ा। पार्टी के सूबेदार भी वे थे ही। लेकिन, 2020 की उनकी बगावत ने उन्हें फायदे की जगह नुकसान पहुंचाया। उपमुख्यमंत्री और पार्टी अध्यक्ष दोनों पद जाते रहे। तभी से वे खुद को हाशिए पर पा रहे हैं। मुख्यमंत्री उनके बारे में अभद्र टिप्पणी तक कर रहे हैं।

प्रमोद ने बढ़ाया पारा

राजस्थान कांग्रेस में सियासी बयानबाजी और नेतृत्व बदलने की चर्चाएं भले ही शांत हो गई हों लेकिन इशारों-इशारों में निशाना साधने का सिलसिला जारी है। कांग्रेस नेता और सचिन पायलट के करीबी कहे जाने वाले आचार्य प्रमोद कृष्णम् के एक ट्वीट ने फिर सियासी गलियारों में अटकलों को हवा दे दी है। आचार्य ने हाल में ट्वीट किया कि राजतिलक की तैयारी है, पर अभी जंग जारी है। प्रियंका गांधी के सलाहकार आचार्य प्रमोद के ट्वीट के बाद सूबे में एक बार फिर चेहरा बदलने की चर्चाओं को बल मिला और कयास लगाए जाने लगे हैं कि राज्य में जल्द ही कोई बड़ा फैसला हो सकता है। दरअसल, आचार्य प्रमोद कृष्णम् का जन्मदिन था। इस मौके पर भरतपुर से मंत्री विश्वेन्द्र सिंह के बेटे अनिरुद्ध सिंह ने उन्हें ट्वीट कर बधाई दी थी जिसको स्वीकार करते हुए आचार्य ने लिखा कि मुराद पूरी होने का समय आ गया है अनिरुद्ध, खुश रहो। वहीं आचार्य प्रमोद ने अपने जन्मदिन पर सचिन पायलट की बधाई देने के जवाब में कहा कि राजतिलक की तैयारी है, पर जंग अभी भी जारी है, बहुत-बहुत साधुवाद। आचार्य के इन दोनों ही ट्वीट के बाद राजनीतिक हल्कों में कई तरह के मायने निकाले जाने लगे हैं।

विघ्नसंतोषी

उपेंद्र कुशवाहा विघ्नसंतोषी लगते हैं। नजरिया भी अतिवादी दिखता है। समर्थन करते हैं तो पूरे भक्तिभाव से और चिढ़ जाएं तो जड़ें खोदने पर आमादा हो जाते हैं। बिहार की सियासत में बड़ा वजूद नहीं बना पाए बेचारे। बेशक पिछड़े तबके के नेता की छवि रही। नीतीश और उपेंद्र को कभी क्रमशः कुर्मी और काछी समुदाय के कद्दावर नेता के तौर पर देखा जाता था। लालू यादव जब सूबे में पिछड़े तबके के सबसे बड़े नेता की छवि बना चुके थे तब सियासी पंडित यही कहते थे कि नीतीश-उपेंद्र की जोड़ी से वे घबराते हैं। आजकल नीतीश कुमार के साथ उनका चूहे-बिल्ली वाला खेल चल रहा है। नीतीश के खिलाफ खुली बगावत पर उतारू हैं। नीतीश ने उन्हें पार्टी के संसदीय बोर्ड का मुखिया बना रखा है। विधान परिषद् का सदस्य तो खैर शुरू में ही बना दिया था। पर उपेंद्र कुशवाहा की महत्वाकांक्षा उपमुख्यमंत्री नहीं तो कम से कम काबीना मंत्री बनने की जरूर रही होगी। तभी तो आजकल असंतुष्ट हैं।

देखा एक ख्वाब तो...

केसीआर ने तेलंगाना राष्ट्र समिति यानि टीआरएस का नाम बदलकर बीआरएस यानि भारत राष्ट्र समिति किया था। खुद फरमाया था कि पार्टी के नाम में तेलंगाना होने से इसके क्षेत्रीय होने का संदेश जाता है। कुल मिलाकर तीन मुख्यमंत्री और एक पूर्व मुख्यमंत्री ही उनके बुलावे पर जुटे। केसीआर के अपने तेलंगाना में लोकसभा की महज 17 सीटें हैं। पिछले दो चुनावों का विश्लेषण करें तो 2014 की तुलना में 2019 में उनकी सीटें 12 से घटकर नौ रह गई। रही अरविंद केजरीवाल की बात तो दिल्ली में लोकसभा की महज 7 सीटें हैं। केजरीवाल के खाते में एक भी नहीं। कुछ यही स्थिति भगवंत मान के पंजाब की ठहरी। कहने को सूबे में 13 सीटें हैं, पर आम आदमी पार्टी के पास एक भी नहीं। पिछली बार अकेले मान जीते थे। मुख्यमंत्री बने तो लोकसभा सीट छोड़नी पड़ी। उपचुनाव में वह भी जाती रही। अब बचे पी विजयन, सो केरल में जरूर बीस सीटें हैं। सबको जोड़ लें तो चारों मुख्यमंत्रियों की ताकत 54 लोकसभा सीटों से आगे नहीं जाती।

प्रदेश का नया मामा कौन ?

प्रदेश की राजनीतिक और प्रशासनिक वीथिका में इन दिनों एक और मामा चर्चा का विषय बने हुए हैं। वैसे बता दें यह मामा स्वयंभू हैं। इन मामा की चर्चा इसलिए हो रही है कि यह सुलझी चीजों को उलझा देते हैं और उलझी चीजों को सुलझा देते हैं। वर्तमान में ये राजधानी के एक उपनगर में एक टॉकीज की बिक्री करवाने के कारण चर्चा में हैं। सूत्रों का कहना है कि उक्त टॉकीज को लेकर पारिवारिक विवाद था। बताया जाता है कि इन नए मामा ने ही दोनों भाईयों के बीच में मामला उलझाया था। इस कारण यह टॉकीज विवादों में फंस गया था। फिर मामा ने हस्तक्षेप करते हुए मामला सुलझाने का जिम्मा उठाया और पारिवारिक विवाद पर पर्दा डालने के लिए टॉकीज को करोड़ों में बिकवा दिया। सूत्रों का कहना है कि इस खेल में मामा की भी झोली लक्ष्मीजी से भर गई है। यहां यह बता दें कि जिस मामा की बात हो रही है वे प्रदेश के कद्दावर मंत्री के लिए काम करते हैं। यहां एक बात का उल्लेख करना समुचित होगा कि इन माननीय के कारण प्रदेश की कानून व्यवस्था भले ही लचर है लेकिन अपराधी अपने आप को सुरक्षित मान रहे हैं। ऐसा ही एक निगरानीशुदा सट्टा किंग राजधानी में सुरक्षित बैठा है और उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर पा रहा है। बताया जाता है कि माननीय ने उसके सिर पर हाथ रख दिया है इस कारण सबकुछ जानकर भी पुलिस अनजान है।

साहब की महिलाओं से दुश्मनी

प्रदेश की प्रशासनिक वीथिका में एक आईपीएस अफसर छाए हुए हैं। ऐसा नहीं है कि उन्होंने कोई बड़ा काम कर दिया है, बल्कि उन्होंने काम ही ऐसा किया है जिस कारण लोग उन्हें महिलाओं का दुश्मन मानने लगे हैं। जिस साहब की बात हो रही है, वे राजधानी और व्यावसायिक राजधानी के बीच के जिले के पुलिस अधीक्षक हैं। वैसे इस जिले के पुलिस अधिकारी अपनी अजब-गजब हरकतों के कारण चर्चा में रहते हैं। इसी कड़ी में बड़े साहब भी किसी से पीछे नहीं हैं। बताया जाता है कि साहब जबसे जिले के एसपी बने हैं उनके नजरिए में बदलाव आ गया है। इसका अनुमान इससे भी लगाया जा रहा है कि गत दिनों उन्होंने एसपी ऑफिस में कार्यरत अधिकारियों-कर्मचारियों की सीआर तैयार की। लेकिन इस सीआर को उन्होंने दो भागों में बांट दिया। पुरुषों की सीआर को बेहतर बताते हुए उन्हें महिलाओं से अच्छा करार दिया गया, जबकि महिला अधिकारियों-कर्मचारियों की सीआर को दोयम दर्जे का बताया गया। साहब की इस कार्यप्रणाली पर लोग सवाल उठाने लगे हैं और इसकी पड़ताल में जुट गए हैं कि आखिर साहब ने यह कदम किस कारण उठाया है।

बगैर बेल के खेल

अल्लाह मेहरबान तो गधा पहलवान वाली कहावत तो आपने सुनी ही होगी। इसी तरह सरकार मेहरबान तो घोटालेबाज पहलवान का उदाहरण हृदय प्रदेश में देखने को मिला। दरअसल, प्रदेश के बहुचर्चित ईटेंडरिंग घोटाले में ऐसा कुछ घटा है, जिसे देख-सुनकर हर कोई हैरान-परेशान है। सूत्रों के अनुसार इस घोटाले में कई आरोपी जेल की सलाखों के पीछे पहुंच गए, वहीं एक आरोपी ऐसा था, जिसका गिरफ्तारी वारंट निकला था। इस दौरान उसने हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में जमानत के लिए याचिका भी लगाई, लेकिन मामले की गंभीरता को देखते हुए उसको जमानत नहीं दी गई। सूत्रों का कहना है कि गिरफ्तारी वारंट निकलने के बाद से ही पुलिस तथाकथित तौर पर उक्त आरोपी को गिरफ्तारी के लिए ढूंढती रही। लेकिन राजधानी में रहने के बाद भी पुलिस उसके पास तक नहीं पहुंच पाई। या यूं कहें कि पुलिस उसे पकड़ने नहीं गई। बताया जाता है कि उस घोटालेबाज को राजनीति का वरदहस्त प्राप्त था। इसलिए पुलिस सबकुछ जाते हुए भी अनजान बनी रही। धीरे-धीरे सारे घोटालेबाज एक-एक करके बरी होते चले गए। अंत में उक्त घोटालेबाज भी बिना जेल गए बिना बेल के ही बरी हो गया। बगैर बेल के इस खेल को हर कोई नहीं समझ सकता। यानी अगर आपको राजनीतिक संरक्षण प्राप्त हो तो आपका कोई बाल बांका भी नहीं कर सकता। हालांकि बगैर बेल के इस खेल के पीछे के खेल को लोग समझने में लगे हुए हैं।

नाम पट्टिका तक गायब

प्रदेश की प्रशासनिक वीथिका में इन दिनों कुछ वरिष्ठ आईएएस अधिकारी खासे नाराज चल रहे हैं। इसकी वजह यह बताई जा रही है कि वे प्रदेश के मुख्य सचिव की दौड़ में शामिल थे, लेकिन सरकार ने उनमें से किसी को मौका न देकर वर्तमान सीएस को ही एक्सटेंशन दे दिया। सूत्रों का कहना है कि इस कवायद के बाद 1988 बैच की एक वरिष्ठ महिला आईएएस अधिकारी इस कदर नाराज हैं कि एपीसी का चार्ज मिलने के बाद से उन्होंने मंत्रालय जाना ही बंद कर दिया है। आलम यह है कि किसी कक्ष में उनके नाम की नाम पट्टिका भी नहीं लगी है। दरअसल, मैडम को जिस विभाग का एपीसी बनाया गया है, वे उसके लिए तैयार भी नहीं थीं। वहीं सूत्रों का कहना है कि जितने आईएएस अधिकारी मुख्य सचिव बनने की कतार में थे। उन सब ने लामबंदी शुरू कर दी है और भूले-बिसरे दिनों को याद करते हुए सरकार को नीचा दिखाने का प्रयास शुरू कर दिया है। सूत्रों का कहना है कि प्रदेश के प्रशासन में शायद पहली बार इस तरह की स्थिति निर्मित हुई है। अब देखना यह है कि इस परिस्थिति में शासन का क्या रुख होता है।

मंत्री का दर्द न जाने कोय

प्रदेश के एक कद्दावर मंत्री इन दिनों काफी व्यथित हैं। मंत्रीजी ने अपनी व्यथा को कई बार सार्वजनिक भी कर दिया है, लेकिन उसके बाद भी कोई उनकी परवाह नहीं कर रहा है। मंत्रीजी की व्यथा यह है कि उनके विभाग में ही उनसे पूछे बिना काम हो जाता है और उनको इसकी भनक बाद में लगती है। मंत्रीजी के विभाग के चीफ इंजीनियर का कार्यकाल बढ़ाने की तैयारी चल रही है। यह तैयारी विधानसभा अध्यक्ष की मंशानुसार हो रही है। लेकिन मंत्रीजी को इसकी भनक भी नहीं लग पाई है। इसकी वजह यह है कि उनका कार्यकाल बढ़ाने की नोटशीट मंत्रीजी के पास न भेजकर सीधे मुख्यमंत्री के पास पहुंचा दी गई है। हालांकि मंत्रीजी के करीबियों ने उन्हें विभाग में चुपचाप चल रहे इस खेल की जानकारी दे दी है। गौरतलब है कि मंत्रीजी के विभाग में उनकी पीठ पीछे चल रहे खेल को मंत्रीजी भलीभांति जानते हैं। तभी तो गत दिनों उन्होंने यहां तक कह दिया कि हमारे पास किसी अनुमोदन के लिए आने की क्या जरूरत है। जहां ऊपर से काम हो रहा है, वहीं से कराया जाए। दरअसल, दूसरी पार्टी से आए मंत्रीजी अभी भी बेगाने हैं।

कोई भी नेता उठकर किसी भी फिल्म के बारे में बोलने लगता है और सारा दिन टीवी पर वही चलता है। तो लोगों को ऐसे कमेंट करने से बचना चाहिए। फिल्में शोध के बाद बनाई जाती है। अगर किसी विषय या दृश्य पर आपत्ति है, तो उसे शांतिपूर्ण ढंग से भी बदलवाया जा सकता है।

● **अनुराग कश्यप**

असली चिंता लोअर मिडिल क्लास की है। इस वर्ग को लेकर अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ी चिंता है। यहां रोजगार की कमी है। बड़े व्यवसाय बढ़िया कर रहे हैं। उन्होंने अपने कर्ज का भुगतान महामारी के दौरान भी किया। बैंकों ने भी अपना बैड लोन राइट ऑफ कर दिया है। ऐसे में बैंक और बड़े कारोबार आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। पर दिक्कत लोअर मिडिल क्लास के साथ है।

● **रघुराम राजन**

कोच पीसीबी से डरते है। क्योंकि उन्हें नहीं पता ना जाने कब मैनेजमेंट बदल जाए और उन्हें टीम से निकाल दिया जाए। मैनेजमेंट चाहता था कि पाक में टीम के पूर्व कोच मिकी आर्थर फिर कोच की भूमिका निभाएं। लेकिन, मिकी ने पाकिस्तान क्रिकेट के हालातों को देखते हुए वहां आने से मना कर दिया। यह चिंताजनक स्थिति है।

● **वसीम अकरम**

कई बड़ी तेल कंपनियों को पता था कि ज्यादा तेल की खपत से क्या हाल हो सकता है। उसके बाद भी दशकों तक इस बात को छिपाए रखा गया। इनकी जवाबदेही तय की जानी चाहिए। 1970 में सबकुछ पता होने के बाद भी इन्होंने धरती को जलने के लिए छोड़ दिया।

● **एंटोनियो गुटरेस**

सुकेश ने कहा था वह मेरा बहुत बड़ा फैन है और साउथ इंडियन फिल्मों में मेरे साथ काम करना चाहता था। दिन में मैं और सुकेश कम से कम तीन-चार बार कॉल और वीडियो कॉल करते थे। वह मेरे शूट पर जाने से पहले कभी-कभी रात में कॉल करता था। लेकिन मुझे इसकी जानकारी नहीं थी कि वह जेल से बात करता है। वह किसी कोने से कॉल करता था। बैकग्राउंड में सोफा और पर्दा भी दिखाई देता था। पिंकी ने सुकेश की आपराधिक पृष्ठभूमि के बारे में पता होने के बाद भी कुछ नहीं बताया। सुकेश ने अपना नाम शेखर बताया था। मुझे शेखर ने बेवकूफ बनाया। सुकेश के साथ मेरी आखिरी बात 8 अगस्त 2021 को कॉल पर हुई थी। उसके बाद उसने मुझे कॉन्टेक्ट नहीं किया। मुझे बाद में उसके क्रिमिनल बैकग्राउंड के बारे में जानकारी हुई थी।

● **जैकलीन फर्नांडीस**

वाक्युद्ध

कांग्रेस झूठ की बुनियाद पर खड़ी है। वह और उसके नेता चौबीस घंटे झूठ बोलते हैं। इसी झूठ के चक्कर में फंसकर धोखे से पिछली बार कांग्रेस की सरकार बन गई थी, जिसका हश्र 15 महीने में ही देखने को मिल गया था। अब अगले चुनाव में भी भाजपा की सरकार बनने वाली है। कांग्रेस ने अगर देश के लिए कुछ किया होता, तो आज उसकी ऐसी दुर्दशा नहीं हुई होती।

● **वीडी शर्मा**

महंगाई और बेरोजगारी देश में चरम पर है। भाजपा इन पर कभी भी बात करने को तैयार नहीं होती है। आश्चर्य की बात तो यह है कि दूसरी पार्टियों में सेंध लगाकर जनता द्वारा चुनी गई सरकार को गिराकर भाजपा महान बनने की कोशिश कर रही है। निकाय चुनाव में जनता ने उसे सबक सिखाया है और अब विधानसभा चुनाव में भी जनता उसे आईना दिखाकर सबक सिखाएगी।

● **पीसी शर्मा**

6 साल बाद आईएएस बन सकते है एनएएस!

मप्र के गैर राज्य प्रशासनिक सेवा (एनएएस) के अधिकारियों को बीते 6 साल से प्रमोट नहीं किया जा रहा है। इस कारण करीब 70 अधिकारी बनने का सपना लिए ही रिटायर हो गए। साथ ही 100 से ज्यादा अधिकारी इस कतार में हैं। इस बीच प्रदेश के राज्य प्रशासनिक सेवा के 19 अधिकारियों का चयन आईएएस संवर्ग में करने के लिए 27 फरवरी को विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक होगी। ये सभी पद वर्ष 2021 के हैं। अब सरकार इस प्रयास में है कि वर्ष 2022 के 14 पदों के लिए भी समिति की बैठक एक साथ हो जाए। इनमें छह पद आईएएस संवर्ग के पुनरीक्षण में प्राप्त हुए हैं। यदि केंद्र सरकार से अनुमति मिल जाती है तो गैर प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को भी आईएएस बनने का मौका मिल सकता है।

बता दें कि दरअसल राज्य प्रशासनिक सेवा का 439 अधिकारियों का कैडर है। इसमें से 33 प्रतिशत पद पदोन्नति से भरे जाने का नियम है। इनमें से 15 प्रतिशत पद गैर राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों से भरने का भी नियम बनाया गया है। लेकिन 2015 के बाद से गैर राज्य प्रशासनिक सेवा का कोई अधिकारी आईएएस के पदों पर पदोन्नत नहीं हो सका है। सामान्य प्रशासन विभाग की तरफ से संबंधित विभागों से योग्य अधिकारियों के आवेदन ही नहीं मंगाए जा रहे हैं। ऐसे में अगर केंद्र सरकार वर्ष 2022 के 14 पदों के लिए अनुमति दे देती है तो एनएएस के अधिकारियों की लॉटरी लग सकती है और वे आईएएस बन सकते हैं।

प्रदेश में वर्ष 2016 से गैर प्रशासनिक सेवा के अधिकारी आईएएस नहीं बने हैं। आईएएस संवर्ग में चयन के लिए राज्य प्रशासनिक सेवा के साथ गैर राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को मौका दिया जाता है। 2016 में चार गैर प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को अवसर मिला था। कमलनाथ सरकार ने वर्ष 2019 में चार पद देने का प्रस्ताव तैयार किया था लेकिन यह केंद्र सरकार को नहीं भेजा गया। इसके बाद से केवल राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को ही मौका मिल रहा है। इसको लेकर बार-बार मांग उठाने पर यही तर्क दिया जाता है कि राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारी पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं, इसलिए अन्य संवर्ग के अधिकारियों के नामों पर विचार ही नहीं किया जा रहा है। जबकि, पूर्व मुख्य सचिव केएस शर्मा का कहना है कि दूसरी सेवाओं के अधिकारियों को भी पर्याप्त अनुभव रहता है, जिसका सरकार को लाभ उठाना चाहिए।

वन विभाग को मुंह की खानी पड़ी

मुख्य वनसंरक्षक अजीत श्रीवास्तव के मामले में वन विभाग को मुंह की खानी पड़ी है। सुप्रीम कोर्ट ने उनकी पदोन्नति का लिफाफा खोलने के निर्देश दिए हैं। श्रीवास्तव ने कोर्ट में तर्क दिया था कि प्रक्रिया का पालन किए बगैर उन पर दंड अधिरोपित किया गया है, जिसे कोर्ट ने गलत माना है। विभाग ने मामले में आगे अपील न करने का निर्णय लेते हुए मुख्यमंत्री कार्यालय को अंतिम निर्णय के लिए नोटशीट भेज दी है। अजीत श्रीवास्तव पिछले सात साल से कानूनी लड़ाई लड़ रहे हैं। जबलपुर के मुख्य वनसंरक्षक रहते हुए 8 दिसंबर 2015 को उनका एक आडियो इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हुआ था। इसमें वे लकड़ी कारोबारी अशोक रंगा से लकड़ी से भरा ट्रक छोड़ने के बदले 50 लाख रुपए और जमीन की मांग कर रहे थे। मामले की जांच गृह विभाग के तत्कालीन अपर मुख्य सचिव (बाद में मुख्य सचिव बने) बीपी सिंह ने की थी। जिसमें वह दोषी पाए गए थे। मामले में श्रीवास्तव को केंद्रीय प्रशासकीय अधिकरण (कैट) ने भी राहत दी थी पर शासन अपील में चला गया। इस कारण उन्हें अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक के पद पर पदोन्नति नहीं मिल पाई। शासन ने बैच के अधिकारियों की पदोन्नति के समय उनका लिफाफा बंद रखा था। ऐसे ही कार्य आयोजना वनमंडल सिवनी भेजे गए हरिशंकर मिश्रा जब कुर्सी छोड़ने का राजी नहीं हुए तो उन्हें एकतरफा रिलीव किया गया। इसके खिलाफ वे कैट चले गए और कैट के आदेश का स्थगन मानकर सितंबर 2022 में कार्यालय पहुंचे और एकतरफा कार्यभार ग्रहण कर लिया। इससे नाराज अधिकारियों ने उन्हें सिवनी में आमद न देने पर निलंबित कर दिया था। अब उनकी बहाली की प्रक्रिया चल रही है। समिति ने शर्त रख दी है कि उनकी पहली पदस्थापना कार्य आयोजना वनमंडल में ही की जाएगी।

विभागीय अधिकारियों का कहना है कि वर्ष 2021 के लिए 19 पदों के लिए राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के नाम प्रस्तावित किए जा चुके हैं। वर्ष 2022 के लिए आठ पद अधिकारियों के सेवानिवृत्त होने के कारण उपलब्ध हैं तो छह अतिरिक्त पद संवर्ग पुनरीक्षण में मिले हैं। यदि केंद्र सरकार इन पदों पर चयन की अनुमति दे देती है तो फिर एक साथ विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक कराने का प्रस्ताव संघ लोक सेवा आयोग को भेज दिया जाएगा। अभी केंद्र सरकार से अनुमति प्राप्त करने के लिए प्रस्ताव शासन को भेजा गया है।

मप्र में गैर राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारी पिछले 6 साल से पदोन्नति का इंतजार कर रहे हैं। इसका कारण नियम होने के बावजूद सरकार की तरफ से उनके आवेदन नहीं मंगाए जाना बताया जा रहा है। सामान्य प्रशासन विभाग की प्रमुख सचिव दीप्ति गौड़ मुखर्जी ने कहा कि नियम है, लेकिन सरकार तय करेगी कि किस कैडर से कितने पद भरने हैं। अधिकारियों का कहना है कि नियमानुसार गैर राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों से 15 प्रतिशत पद पदोन्नति से भरे जाने चाहिए। लेकिन यह भी लिखा गया है कि यह सरकार पर निर्भर करेगा। उनका कहना है कि इससे राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के पदोन्नति के पद कम हो जाते हैं। सरकार बहुत ही अच्छा प्रदर्शन करने वाले अधिकारी को प्रमोशन देने के लिए इस नियम का उपयोग करती है। गैर राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को आईएएस के पदों पर पदोन्नत करने के लिए आयु सीमा 56 साल निर्धारित है। ऐसे में लंबे समय से आवेदन नहीं मंगाने से कई योग्य अधिकारी आयु सीमा पूरी करने से अयोग्य हो गए हैं।

● **कुमार विनोद**

करीब 4 साल के इंतजार के बाद अब विधानसभा चुनावों का काउंटडाउन शुरू हो चुका है। 10, 9, 8, 7 गिनते-गिनते महीने गुजरते जाएंगे और चुनाव आ जाएंगे। मप्र में भाजपा और कांग्रेस दोनों सत्ता में आने के लिए रणनीति बना रहे हैं। भाजपा ने अबकी बार 200 पार के नारे के साथ तैयारियां तेज कर दी हैं। वहीं कांग्रेस का भी दावा है कि वह 150 सीटों के साथ सत्ता में वापसी करेगी। अपने-अपने दावों को साकार करने के लिए दोनों पार्टियों ने मैदानी सक्रियता के लिए रणनीति बना ली है। शिवराज सरकार अब सीधे जनता के दर पर दस्तक देगी।

जनता के दर पर शिवराज सरकार

मप्र को बीमारू राज्य से आज विकसित राज्य बनाने वाली शिवराज सरकार विकास को और गति देने के लिए अब जनता के दर पर दस्तक देगी। इसके लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपनी कैबिनेट के सभी मंत्रियों को निर्देशित कर दिया है। मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार प्रदेश में 5 फरवरी से विकास यात्रा निकाली जाएगी। प्रदेश सरकार के मंत्री जिला मुख्यालय से लेकर ब्लॉक स्तर तक दौरा करेंगे। सभी कलेक्टर और जिला प्रशासन ने विकास यात्रा का रूटमैप तैयार करना शुरू कर दिया है। सरकार की ओर से निकाली जाने वाली विकास यात्रा के दौरान जनप्रतिनिधि आम सभाएं करेंगे और जनता को भाजपा सरकार की योजनाओं और उपलब्धि के बारे में बताएंगे।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का कहना है कि इस विकास यात्रा में हितग्राहियों को लाभ, हितग्राहियों से चर्चा और संवाद होगा। जिला मुख्यालय के अलावा ब्लॉक में भी मंत्रियों के दौरे होंगे। मंत्रियों के दौरे के वक्त विकास के लक्ष्यों का उद्देश्य पूरा हो और मंत्रीगण लौटने के बाद अपनी रिपोर्ट भी देंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि जो काम पूरे हो गए हैं, उनका लोकार्पण किया जाएगा और जो काम शुरू करने बाकी हैं उनका शिलान्यास भी होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी मंत्रियों के पास विधानसभा की सूची होगी, उसी के आधार पर वे यात्रा कार्यक्रम बनाएं। मुख्यमंत्री जनसेवा योजना के हितग्राहियों को हितलाभ देना प्रारंभ होगा। विकास यात्रा में हितग्राही सम्मेलन भी आयोजित किए जाएंगे। गांव या ग्राम पंचायत के हितग्राहियों के सम्मेलन भी होंगे। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंत्रियों से कहा कि विकास यात्रा में ज्यादा से ज्यादा क्षेत्र कवर हो सकें, इस बात का सभी को ध्यान रखना है। विकास यात्रा से पहले एक-दो दिन के दौरे जरूर करें। विकास यात्रा हमारे काम को जनता के बीच ले जाने का काम है। यह दौरे प्रभावी ढंग से होने चाहिए यही हमारी प्राथमिकता भी है।

विकास पर फोकस

यह साल चुनाव का है। इस चुनावी साल में सरकार का सबसे अधिक फोकस विकास कार्यों पर है। सरकार की कोशिश है कि प्रदेश में जितनी भी योजनाएं-परियोजनाएं चल रही हैं, उन्हें जल्द से जल्द अमलीजामा पहनाया जाए। सरकार की मंशानुसार योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए विभागों ने बजट में पिछली बार की अपेक्षा इस बार अधिक बजट की मांग की है। गौरतलब है कि इस साल प्रदेश में विधानसभा चुनाव होना है। इसलिए मप्र सरकार के दिशा-निर्देश पर वित्त विभाग के अधिकारी अभी से बजट की तैयारी में जुट गए हैं। इस बार का बजट चुनावी रंग में रंगा रहेगा। मुख्य बजट में सरकार का कर्मचारियों के बकाया डीए सहित अधोसंरचना विकास पर फोकस रहेगा। चुनावी वर्ष में विकास कार्यों और योजनाओं पर फोकस रहेगा। मौजूदा वित्तीय वर्ष में राज्य का बजट 2.79 लाख करोड़ रुपए का है। बजट का आकार 3 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा होने की संभावना है। बजट बढ़ने का प्रमुख कारण राज्य सरकार द्वारा विकास कार्यों पर फोकस करना, योजनाएं शुरू करना है।

विकास यात्रा की पूरी जानकारी सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर दर्ज की जाएगी। हर विकास यात्रा को एक विशिष्ट नाम, कोड नंबर दिया जाएगा। प्रभारी मंत्री की सलाह से हर यात्रा के लिए यात्रा प्रभारी, सह यात्रा प्रभारी, लोकार्पण, शिलान्यास, हितलाभ वितरण के लिए मुख्य अतिथि को कलेक्टर तय करेंगे। हर जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में होने वाली विकास यात्राओं के रूट और रूपरेखा का निर्धारण जिले के प्रभारी मंत्री से सलाह लेकर कलेक्टर फाइनल करेंगे। विकास यात्रा के लिए आसपास के गांवों, वार्डों के क्लस्टर, समूह बनाकर उसके रूट तय करेंगे। यात्रा से संबंधित क्लस्टर में शामिल पहले गांव से शुरू होकर बाकी सभी गांवों से गुजरती हुई क्लस्टर के आखिरी गांव में समाप्त होगी। विकास यात्रा के रूट का निर्धारण इस प्रकार किया जाएगा जिससे हर ग्राम, नगर में यात्रा के अंतर्गत आयोजित होने वाली गतिविधियों को पर्याप्त समय मिले और निर्धारित समयावधि में जिले के समस्त ग्राम, वार्ड में यात्रा अनिवार्य रूप से पहुंचे।

विकास यात्रा के पहले दिन

रविदास जयंती का कार्यक्रम होगा। इसमें जो काम पूरे हो चुके है उनका लोकार्पण होगा और जो शुरू करने हैं उनका शिलान्यास होगा। सभी मंत्रियों के पास विधानसभा की सूची होगी। इसमें मुख्यमंत्री जनसेवा के हितग्राहियों को उसका लाभ देना भी शुरू किया जाएगा। इसके अलावा यात्रा में हितग्राही सम्मेलन भी होंगे। गांव या ग्राम पंचायत के हितग्राही के सम्मेलन आयोजित होंगे। विकास यात्रा में गांव, नगर में नागरिकों, किसानों, मजदूरों, छात्रों, महिलाओं, स्व-सहायता समूहों आदि के द्वारा अलग-अलग क्षेत्र में की गई अभिनव पहल और उनकी सफलता की कहानियों पर चर्चा की जाएगी। केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं के बारे में जनता को बताया जाएगा। इलाके के भविष्य की विकास रणनीतियों पर चर्चा की जाएगी। यात्रा में आने वाले सार्वजनिक संस्थाओं अस्पताल, डिस्पेंसरी, आंगनवाड़ी, स्कूल, पंचायत कार्यालय, पुलिस थाना, पशु चिकित्सालय, सहकारी समिति का भ्रमण कर उनके सुधार के सुझाव प्राप्त किए जाएंगे। विकास यात्रा के दौरान स्व-सहायता समूहों, शिक्षक पालक संघ के सदस्यों, क्राइसिस मैनेजमेंट ग्रुप्स के सदस्य, ग्राम सभाओं के सदस्य, जल जीवन मिशन के अंतर्गत परियोजना संचालन-संधारणकर्ता समितियों के प्रतिनिधि, जल उपभोक्ता संथाओं के प्रतिनिधि, पेसा नियमों के अंतर्गत निर्मित समितियों के सदस्य आदि विभिन्न समूहों को भी सम्मिलित करते हुए उनके द्वारा किए जा रहे स्थानीय स्तर पर किए जा रहे अच्छे कार्यों का अवलोकन भी किया जा सकता है। सरकार की विभिन्न योजनाओं के ऐसे पात्र हितग्राही, जिन्हें हाल ही में मुख्यमंत्री जनसेवा अभियान के अंतर्गत योजना का लाभ मिला है, उन्हें हितलाभ वितरण की कार्यवाही की जाएगी। यात्रा के दौरान विकास गतिविधियों पर एकाग्र सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जा सकते हैं।

सत्तारूढ़ पार्टी के साथ ही अन्य पार्टियां चुनावी मोड में आ गई हैं। ऐसे में सरकार की कोशिश है कि विकास कार्यों के माध्यम से जनता को अपनी ओर आकृष्ट करें। इसके लिए इस वर्ष विकास कार्यों की भरमार रहेगी। विधायक, मंत्रियों की स्थानीय घोषणाएं, भूमिपूजन और क्षेत्र में विकास कार्यों पर अधिक व्यय होना है। मुख्यमंत्री ने भी विभाग प्रमुखों को स्पष्ट कहा है कि जनप्रतिनिधियों, विधायक, मंत्रियों द्वारा क्षेत्र में बताए गए विकास कार्यों को प्राथमिकता दी जाए। जिसके चलते विभागों ने अधिक बजट उपलब्ध कराने की मांग की है। चुनावी वर्ष को देखते हुए इस वर्ष राज्य सरकार तीन लाख करोड़ रुपए से अधिक बजट का प्रविधान कर रही है। सरकार की चुनावी रणनीति को देखते हुए किसान कल्याण तथा कृषि विकास, सहकारिता, श्रम, स्वास्थ्य, ऊर्जा, वन, नगरीय विकास एवं आवास, स्कूल शिक्षा, लोक निर्माण, पंचायत, जनसंपर्क, जनजातीय कार्य, सामाजिक न्याय एवं निशक्तजन कल्याण, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण, संस्कृति, जल संसाधन, पीएचई, पशुपालन, मछुआ कल्याण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, तकनीकी शिक्षा कौशल विकास, महिला एवं बाल विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण, उद्यानिकी, आयुष, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा, विमुक्त घुमक्कड़ जनजाति कल्याण और उच्च शिक्षा विभाग ने इस वर्ष अधिक बजट मांगा है।

पिछले चुनावों की तरह इस बार के विधानसभा चुनाव में भी मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान केंद्र बिंदु रहेंगे। दरअसल शिवराज चुनाव जीतने के ब्रांड बन गए हैं। मप्र के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का चौथा कार्यकाल पिछली तीन पारियों जैसा नहीं था। चौथी बार मुख्यमंत्री पद का ताज पहनना कांटों का ताज माना जा रहा था। लेकिन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने एक अस्थाई मानी जाने वाली सरकार को स्थाई सरकार में बदल डाला, बल्कि राज्य को विकास के पथ पर सरपट दौड़ाया। उन्होंने राज्य के किसानों से लेकर युवा और आदिवासी समुदाय को भी पूरी तरह साधकर रखा। राजनीतिक क्षेत्रों में यह स्वीकार किया जा रहा है कि मप्र में वे ब्रांड शिवराज बन गए हैं। जिन्हें आसानी से नजरंदाज नहीं किया जा सकता। हाल ही में इंदौर में प्रवासी भारतीय सम्मेलन और निवेशक सम्मेलन के बाद जी-20 के तहत थिंक-20 समूह के सफल सम्मेलन से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की प्रतिष्ठा में चार चांद लग गए। प्रवासी भारतीय सम्मेलन और निवेशक सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संबोधन से और दुनियाभर से आए प्रतिनिधियों की मौजूदगी में राज्य के लोगों में नई ऊर्जा का संचार कर दिया। इस सम्मेलन में अलग-अलग क्षेत्रों के उद्यमियों ने राज्य में कुल 15 लाख 42 हजार 550 करोड़ के निवेश का इरादा जताया, जो कि पिछले सम्मेलन से कहीं ज्यादा है। कोई समय था जब उद्योगपति मप्र में निवेश करने में कोई रूचि नहीं रखते थे। लेकिन अब उन्हें राज्य में निवेश करना हर दृष्टि से फायदे का सौदा लग रहा है।

● कुमार राजेन्द्र

चुनावी साल में एक्टिव होगा हर नेता

चुनावी साल में हर नेता हाईली एक्टिव होगा। कभी जनता के बीच, कभी सभा, कभी रैली और जब फुर्सत मिलेगी, तब नई रणनीति पर सोच विचार। आने वाले कुछ दिन मप्र के प्रमुख और दिग्गज नेताओं का यही हाल होगा जिनके कंधों पर जीत की जिम्मेदारी होगी। कुछ ऐसे नेता भी होंगे जो अपने नए कदम या नए बयान से बवंडर लेकर आएंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमित शाह और जेपी नड्डा जैसे आला नेताओं का प्रदेश में मूवमेंट बढ़ेगा। कांग्रेस से राहुल गांधी, प्रियंका गांधी और आप के अरविंद केजरीवाल भी मप्र का रुख कर सकते हैं। इन सबके बीच प्रदेश के ही कुछ नेता अल्ट्रा एक्टिव होंगे। इन नेताओं में सबसे पहला नाम मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का है। शिवराज सिंह चौहान प्रदेश के मुखिया तो हैं ही, पार्टी की वापसी कराने की जिम्मेदारी भी उन्हीं के कंधों पर हैं। अलग-अलग योजनाओं के ऐलान और सभाओं के जरिए शिवराज पहले से ही एक्टिव हैं। मैदानी एक्टिविटीज बढ़ने के साथ बैठकें, सलाह-मशवरे के दौर भी उनकी तरफ से बहुत ज्यादा होंगे। कुछ के नतीजे सामने होंगे और कुछ क्लोज डोर होंगी। चुनावी मौसम में सबसे ज्यादा सक्रियता कांग्रेस-भाजपा ही होंगी। ये भी तय है कि सरकार इन्हीं में से किसी एक दल की होगी। एक जीत का स्वाद चखेगा और दूसरा हार का कड़वा घूंट पिएगा। इनकी हार-जीत का फैसला इस बार सिर्फ इनकी रणनीतियों के भरोसे नहीं होने वाला है। इस चुनावी सीजन में कुछ और दल हैं जो दोनों बड़े दलों की प्लानिंग को चौपट कर सकते हैं या उसे बदलने पर भी मजबूर कर सकते हैं।

जमीनों के इंतजार में अटके क्लस्टर

उद्योगों को जमीन आवंटन की प्रक्रिया सिर्फ 24 घंटे में पूरी होगी। ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट और प्रवासी भारतीय सम्मेलन के मंच से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इसी अंदाज में घोषणा की। लेकिन जमीनी हकीकत इससे उलट है। जमीन आवंटन की घोषणा और तमाम कवायद के बाद 24 महीने में भी उद्योगों का इंतजार पूरा नहीं हो रहा है। साल-दो साल बाद यदि जमीन आवंटित हो जाती है तो कब्जा पाने और उद्योग शुरू करने के लिए भी महीनों से इंतजार जारी है। इंदौर में तीन नए औद्योगिक क्लस्टर जमीन पाने-मिलने से लेकर विकास पूरा होने के सरकारी मकड़जाल में उलझे हुए हैं। इस बीच क्लस्टर में निवेश का मन बनाकर बाहर आई कुछ कंपनियां धीमी रफ्तार देखकर लौट भी गई हैं। इंदौर में तीन नए औद्योगिक क्लस्टर तैयार हो रहे हैं। ये हैं फर्नीचर, खिलौना और कंफेक्शनरी क्लस्टर। तीनों की घोषणा और शुरुआत को करीब तीन साल तो बीत ही चुके हैं। जमीन पसंद होने और कागजों पर मंजूरी के 24 महीने बीतने के बाद फर्नीचर क्लस्टर वाले अब नाउम्मीद नजर आ रहे हैं। खिलौना क्लस्टर में दो साल में जमीन आवंटन तो हो गई लेकिन अतिक्रमण नहीं हटा। कंफेक्शनरी क्लस्टर सबसे तेज गति से आगे बढ़ा, लेकिन काम पूरा होने का नाम नहीं ले रहा। बिजली की सुविधा नहीं मिलने से उद्योगों के पास इंतजार करने के सिवाय कोई चारा नहीं है।

दो साल पहले फर्नीचर क्लस्टर की घोषणा हुई। प्रदेश सरकार ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्र के विकास में समय ज्यादा लगता है और संसाधन सीमित है। ऐसे में उद्योगों को कच्ची जमीन दी जाएगी। नई नीति में उद्योगपति मिलकर खुद विकास करेंगे। उद्योगपति सहमत हुए और फर्नीचर क्लस्टर की घोषणा हुई। 450 एकड़ में क्लस्टर के विकास का वादा हुआ। कागजों पर जमीन आवंटित भी हो गई। छोटी बेटमा में जमीन पर कब्जा लेने जब उद्योगपति पहुंचे तो वन विभाग ने जमीन पर हक जताकर आपत्ति ले ली। शासन अब तक आपत्ति दूर नहीं करवा सका है। इस बीच उद्योग खोलने के लिए 150 फर्नीचर उद्योग वाले उद्योगपति एकत्र हुए थे। उन्होंने एसोसिएशन के पास रुपया भी जमा करवा दिया था। शासन ने अब कह दिया है कि मौजूदा स्थिति में 50 एकड़ जमीन ही दी जा सकती है। इंतजार में थके उद्योग अपने एसोसिएशन से अपना रुपया लेकर लौट रहे हैं, क्योंकि 50 एकड़ में 40 से 50 उद्योगों को ही जमीन मिल सकेगी। इसके बाद भी इस जमीन तक पहुंचने का रास्ता अब तक निकलता नहीं दिख रहा है। एसोसिएशन ऑफ फर्नीचर मैन्युफेक्चर्स एंड ट्रेडर्स के अनुसार क्लस्टर की विकास योजना पहले अंतरराष्ट्रीय मानकों पर बनाई गई थी। इसमें कॉमन फैसिलिटी सेंटर बनना था। उद्योग से जुड़ी तमाम सुविधाएं और वेंडर भी क्लस्टर में शामिल किए गए थे। इससे आकर्षित होकर बीते समय में कई बहुराष्ट्रीय और बाहरी कंपनियों ने यहां निवेश की रूचि दिखाई थी। मेथोडेक्स, हैटिच और फेदर लाइट जैसी कंपनियां यहां ईकाई खोलने के लिए तैयार थी लेकिन अब जमीन नहीं मिलती देख और क्लस्टर का स्वरूप बदलता देख उन्होंने कदम पीछे खींच लिए हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वदेशी खिलौनों के लिए मन की बात में आव्हान किया तो इंदौर में खिलौना क्लस्टर की मांग उठी। तीन साल पहले एमएसएमई विभाग ने क्लस्टर बनाने की घोषणा की। राऊ-रंगवासा में क्लस्टर के लिए जमीन तय की गई। हालांकि डेढ़ साल जमीन आवंटन और कागजी कार्रवाई में बीत गए। खिलौना क्लस्टर में 3.56 हेक्टेयर जमीन आवंटित की गई। 20 उद्योगों को यहां जुलाई 2022 में भूखंड भी आवंटित कर दिए गए। हालांकि इसके बाद भी कोई उद्योग खड़ा नहीं हो सका है। दरअसल क्लस्टर की जमीन पर अतिक्रमण और अवैध कब्जे हैं। उद्योगपति उद्योग विभाग से लेकर प्रशासन तक को शिकायत कर चुके हैं। 9 महीने बाद भी उद्योग विभाग और प्रशासन न तो कब्जे हटवा सके हैं, न ही पजेशन दे सके हैं। इस बीच उद्योग के लिए रुपया खर्च कर चुके उद्योग परेशान हैं, क्योंकि उन्हें अभी किराये के परिसर पर खर्च करना पड़ रहा है। दूसरी ओर अपनी यूनिट की स्थापना और विस्तार भी टालना पड़ रहा है। पिगडंबर-राऊ में कंफेक्शनरी क्लस्टर की घोषणा और जमीन आवंटन की कार्रवाई कमलनाथ सरकार के समय हुई थी। यह क्लस्टर एमपीआईडीसी के अधीन है। क्लस्टर के लिए करीब 52 एकड़ जमीन आवंटित की गई। साथ ही ऑनलाईन आवंटन के जरिए करीब 52 उद्योगों को जमीन भी दे दी गई। इस क्लस्टर का पूरा विकास कर उद्योगों को आधिपत्य सौंपा जाना है। हालांकि दो साल से विकास कार्य जारी है। इस बीच काम पूरा होने की मियाद बार-बार बीतती रही, लेकिन काम पूरा नहीं हो सका। उम्मीद की जा रही थी कि ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट से पहले इस क्लस्टर का विकास पूरा कर दिया जाएगा। मुख्यमंत्री उद्घाटन भी कर सकते हैं। हालांकि अब तक क्लस्टर का विकास पूरा नहीं हो सका है। तीन फैक्ट्रियां खड़ी भी हो चुकी हैं लेकिन बिजली वितरण का ढांचा तैयार नहीं होने के कारण वे उत्पादन शुरू नहीं कर पा रही। एमपीआईडीसी ने निजी ठेकेदार को काम सौंपा है। बार-बार मियाद बढ़ाई जा रही है।

● **डॉ. जयसिंह सेंधव**

नहीं मिल रही सुविधाएं

एसोसिएशन ऑफ इंडस्ट्रीज मप्र के अध्यक्ष योगेश मेहता दो क्लस्टरों में बहुत छोटी रुकावटें हैं। प्रशासन अतिक्रमण हटा दे तो खिलौना क्लस्टर शुरू हो जाए और शासन बिजली ग्रिड बनवा दे तो कंफेक्शनरी क्लस्टर में उद्योग उत्पादन शुरू कर दें। हालांकि फर्नीचर क्लस्टर वाले उद्योग अब हताश हो गए हैं। वहां जमीन से लेकर एप्रोच रोड तक की दिक्कतें खत्म होती नहीं दिख रहीं। फर्नीचर्स मैन्युफेक्चर्स एंड ट्रेडर्स एसोसिएशन के सचिव हरीश नागर 150 उद्योगों ने भूखंड के लिए अंशदान जमा किया था। अब मुश्किल से 50 को जगह मिल सकेगी। वह भी तब जब जमीन मिले और एप्रोच रोड भी तय हो। 24 महीने से इंतजार कर उद्योग वाले भी परेशान हो गए हैं। वे खुद अपना अंशदान वापस ले रहे हैं। हम रुपया लौटाने में लगे हैं। खिलौना क्लस्टर एसोसिएशन के प्रेम रामचंदानी उद्योग विभाग कह रहे हैं कि प्रशासन अतिक्रमण हटाएगा। उन्होंने पत्र लिख दिया है। हम प्रशासन से भी मिले। प्रवासी भारतीय सम्मेलन और इंवेस्टर्स समिट में व्यस्तता की बात कही गई थी। अब इंतजार है कि अतिक्रमण हटाकर उद्योगों को जमीन दी जाएगी। कंफेक्शनरी एसोसिएशन अध्यक्ष दिनेश चौधरी का कहना है कि कंफेक्शनरी क्लस्टर में बिजली का काम पूरा नहीं होने से उद्योग अटके हैं। एमपीआईडीसी इस बारे में हमें समय-समय पर जानकारी दे रहा है। उन्होंने इस बार ठेकेदार को आखिरी मोहलत दी है। उम्मीद है जल्द काम पूरा हो जाएगा।

आजीविका मिशन में 100 करोड़ का घोटाला

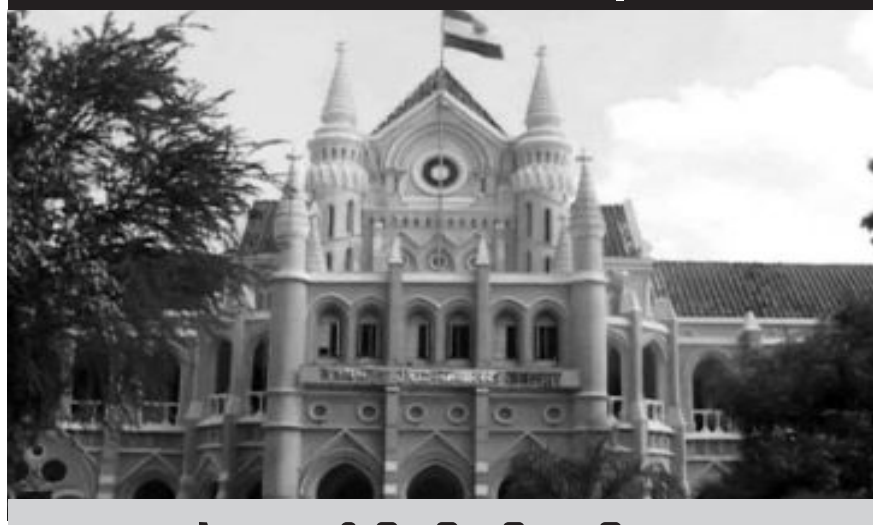

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन में 100 करोड़ रुपए से ज्यादा के हुए घोटाले में हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है कि अब तक मिशन डायरेक्टर ललित मोहन बेलवाल पर क्या कार्रवाई की गई? कोर्ट ने राज्य सरकार को नोटिस जारी कर 6 फरवरी को अगली सुनवाई में घोटाले मामले में लिए गए एक्शन पर रिपोर्ट पेश करने को कहा है। कोर्ट में यह भी तथ्य रखा गया कि ग्रामीण आजीविका मिशन में सीनियर आईएएस को पदस्थ किए जाने का प्रावधान है, लेकिन मप्र सरकार ने नियम विरूद्ध, एक रिटायर्ड आईएफएस ललित मोहन बेलवाल को संविदा आधार नियुक्ति की गई है।

दरअसल, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन में बीमा, नियुक्ति, अगरबत्ती मशीनों की खरीदी और स्कूल ड्रेस खरीदी में **100 करोड़** से ज्यादा का घोटाला सामने आया था। अपर आयुक्त नगरीय प्रशासन और एनआरएचएम की संचालक आईएएस प्रियंका दास, मिशन डायरेक्टर आईएफएस ललित मोहन बेलवाल समेत अन्य पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं। **हाईपावर जांच** कमेटी ने इन सभी के खिलाफ जांच कर मामला दर्ज करने की अनुशंसा की थी। लेकिन जांच रिपोर्ट पर सरकार ने एक साल से कोई कार्रवाई नहीं की है। जिससे मामले को लेकर हाईकोर्ट में एक जनहित याचिका लगाई गई है। इस मामले में सुनवाई करते हुए जबलपुर हाईकोर्ट ने नोटिस जारी कर राज्य सरकार से जवाब मांगा है। मामले में अगली सुनवाई 6 फरवरी को होगी।

जानकारी के अनुसार आजीविका मिशन में बेलवाल ने नियुक्तियों से लेकर हर स्तर पर घोटाले किए हैं। बेलवाल ने सुषमा रानी शुक्ला को फर्जी दस्तावेजों के आधार पर नियम विरूद्ध राज्य स्तरीय प्रोजेक्ट मैनेजर के पद पर नियक्ति दिलाई। इस मामले में आईएएस नेता मारव्या की रिपोर्ट को हाईकोर्ट में पेश किया जा चुका है। हाईकोर्ट में याचिकाकर्ता की पैरवी कर रहे अधिवक्ता रामेश्वर सिंह ठाकुर ने बताया कि नियम विरूद्ध नियुक्ति मामले में आईएएस प्रियंका दास की भूमिका भी संदिग्ध है। बेलवाल पर आरोप है कि आजीविका मिशन से जुड़े साढ़े तीन लाख से ज्यादा समूहों से जुड़ी करीब 45 लाख महिलाओं के बीमा के नाम पर घोटाला किया है। इसके बाद प्रदेश के 22 जिलों में स्कूली बच्चों के ड्रेस के नाम पर बंदरबांट किया गया। कपड़ा व्यापारियों को ठेका देकर 200/- रुपए मूल्य की ड्रेस के 800/- रुपए का भुगतान करवाया गया। उक्त संबंध में कई जिला कलेक्टरों ने जांच करके संबंधित दोषियों के विरूद्ध तथा डिस्ट्रिक्ट प्रोजेक्ट मैनेजरों के खिलाफ एफआईआर करने तथा सेवाएं समाप्त किए जाने की अनुशंसा की गई, लेकिन आजीविका के प्रदेश प्रमुख बेलवाल ने कोई कार्रवाई नहीं की। इसी प्रकार मिशन में 300 से ज्यादा कर्मचारियों की सीधी भर्ती करने के लिए एक बाहर की एजेंसी को अधिकृत किया गया। जिसे लगभग 30 लाख का भुगतान भी किया गया। इस एजेंसी द्वारा चयनित अभ्यर्थियों की सूची आजीविका मिशन को सौंपी गई थी। उक्त चयनित अभ्यर्थियों में से जिन्होंने बेलवाल को पैसा दिया, केवल उनके ही नियुक्तियां की गई तथा शेष पदों पर बेलवाल ने स्वयं अभ्यर्थियों को चयनित करके नियुक्तियां कर दी गई।

बीमा के नाम पर जमा की गई करोड़ों की राशि किसी भी बीमा संस्थान में जमा ही नहीं की गई। आज तक उस राशि का कोई अता-पता नहीं है। इसके बाद प्रत्येक समूह के लिए अगरबत्ती बनाने की हजारों की संख्या में खरीदी गई। मशीनों के नाम पर भी खेल खेला गया। मशीनों की सप्लाई का ठेका बेलवाल द्वारा एक दलाल को दिया गया। जिसे प्रत्येक मशीन का एक से दो लाख तक का भुगतान संबंधित स्वसहायता समूहों पर दबाव बनाकर करवाया गया। जबकि उक्त मशीन की **वास्तविक कीमत** मात्र तीस से चालीस हजार रुपए है। इस संबंध में जिन कर्मचारियों ने शिकायत की उनको बेलवाल ने नौकरी से निकाल दिया। जिन समूहों ने लिखित शिकायतें की उन सभी की बेलवाल ने स्वयं जांच करके उन्हें खत्म कर दिया। उन समूहों के सदस्यों के विरूद्ध बेलवाल ने झूठे आरोप लगाकर कार्यवाही की।

● **विकास दुबे**

बेलवाल की नियुक्ति नियम विरुद्ध

दरअसल आजीविका मिशन में प्रमुख के पद पर किसी सीनियर आईएएस को नियुक्त करने का प्रावधान है। मप्र सरकार ने नियम विरूद्ध इसमें एक रिटायर्ड आईएफएस ललित मोहन बेलवाल को संविदा के आधार नियुक्ति कर दिया था। जिसके बाद बेलवाल द्वारा अपनी एक चहेती महिला कर्मचारी की फर्जी दस्तावेजों के आधार पर नियम विरूद्ध राज्य स्तरीय प्रोजेक्ट मैनेजर के पद पर नियुक्त कर दी गई थी। इसके बाद शुरू हुआ था घोटाले का खेल। बेलवाल ने सबसे पहले प्रदेश के लाखों स्वसहायता समूह में काम करने वाली महिलाओं का बीमा कराने के नाम पर प्रत्येक सदस्य से 300 रुपए प्रतिवर्ष वसूल किए। व्हिसिल लोअर भूपेंद्र प्रजापति ने दस्तावेजों सहित शासन को शिकायत की थी। जिसकी जांच सीनियर आईएएस नेहा मराव्या ने की थी। नेहा मराव्या ने शिकायत को प्रमाणित पाते हुए 2600 पेज की जांच रिपोर्ट सहित 57 पेज का प्रतिवेदन राज्य शासन को कार्रवाई के लिए भेजा था। नेहा मराव्या द्वारा आईएएस प्रियंका दास, ललित मोहन बेलवाल, सुषमा रानी शुक्ला सहित, हैदराबाद के एक बड़े अधिकारी तथा 5 अन्य अधिकारियों के विरूद्ध भारतीय दंड सहिता की धारा 420,467,468,469,472,406,409 120-बी तथा भ्रष्टाचार निवारण नियंत्रण अधिनियम के तहत आपराधिक कार्यवाही करने की अनुशंसा की गई थी। लेकिन सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की। सतना से भाजपा विधायक नारायण त्रिपाठी ने सदन में ध्यानाकर्षण के दौरान प्रश्न भी किया था। यही नहीं पूर्व मंत्री कमलेश्वर पटेल ने भी भ्रष्टाचारी ललित मोहन बेलवाल को तत्काल हटाने एवं आईएएस के प्रतिवेदन के अनुसार दोषियों पर कार्यवाही किए जाने का आग्रह किया गया फिर भी सरकार ने कोई कार्यवाही नहीं की।

विकास पर फोकस

वेतन, पेंशन और ब्याज पर खर्च हो रहा 48 प्रतिशत बजट

प्रदेश सरकार का स्थापना व्यय लगातार बढ़ता जा रहा है। कुल बजट का 48 प्रतिशत हिस्सा केवल वेतन-भत्ते, पेंशन और ब्याज अदायगी पर खर्च हो रहा है। अकेले वेतन-भत्ते को देखें तो वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक 50 हजार करोड़ रुपए से अधिक इस पर व्यय होंगे। जो बजट का 26.47 प्रतिशत होता है। वहीं, पेंशन पर बजट का लगभग 10 प्रतिशत और ब्याज भुगतान पर 11.36 प्रतिशत व्यय अनुमानित है। आगामी वित्तीय वर्ष में यह व्यय और बढ़ेगा क्योंकि सरकार रिक्त पदों पर भर्तियां करने जा रही है। आगामी वित्तीय वर्ष में कर्मचारियों की वार्षिक वेतनवृद्धि, महंगाई भत्ता और पेंशनर की महंगाई राहत बढ़ाने के लिए प्रविधान प्रस्तावित करने के निर्देश सभी विभागों को दिए गए हैं। इससे साफ है कि स्थापना व्यय तो कम हो नहीं सकता है, ऐसे में सरकार के पास विकास कार्यों के लिए अधिक राशि की व्यवस्था करने का एक ही रास्ता है कि स्वयं की आय बढ़ाई जाए।

म प्र में इस साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। इसके पहले शिवराज सरकार वर्तमान कार्यकाल का अंतिम बजट मार्च में प्रस्तुत करेगी। चुनावी वर्ष होने के कारण सरकार का सबसे अधिक फोकस विकास पर है। साथ ही सरकार सभी वर्गों को साधने के जतन भी करेगी। इसलिए बजट में सरकार सभी 55 विभागों के अनावश्यक खर्चों पर कैंची चलाएगी, ताकि राज्य बजट का अधिक से अधिक उपयोग सरकार की प्राथमिकता वाली योजनाओं में किया जा सके। नई योजनाएं वे ही शामिल की जाएंगी, जिनके उद्देश्य की पूर्ति किसी अन्य योजना के माध्यम से नहीं हो सकती है।

जानकारी के अनुसार वित्तीय प्रबंधन के अनुसार विभागों से टैक्स और देनदारियों की जानकारी मांगी गई थी। विभागों ने अपनी रिपोर्ट वित्त विभाग को दे दी है। इसमें यह देखा जाएगा कि कहां-कहां टैक्स में राहत दी जा सकती है या मंदी के चलते टैक्स यथावत रखे जाएं। उधर राज्य में खर्चों में इजाफा हुआ है तो आय भी बढ़ी है। पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में इस बार आय में 15 प्रतिशत तक का इजाफा होने का अनुमान है। पिछले वित्तीय वर्ष में 2.15 लाख करोड़ की आय हुई थी। चालू वित्तीय वर्ष में यह बढ़कर 2.49 लाख करोड़ की आय की संभावना है। जबकि खर्चों में 14 प्रतिशत का अनुमान है। पिछले वित्तीय वर्ष 2.17 लाख करोड़ रुपए खर्च हुए थे। चालू वित्तीय वर्ष में यह खर्च बढ़कर 2.47 लाख करोड़ रुपए होने की संभावना है। बजट मंथन में 6 से ज्यादा विभागों से वित्त विभाग की चर्चा हो चुकी है। इस माह तक बैठकों का दौर पूरा हो जाएगा।

जानकारी के अनुसार नए वित्तीय वर्ष के लिए बजट तैयार कर रही सरकार की चिंता खर्च कम करने को लेकर है, क्योंकि कमाई से ज्यादा खर्चा है। वेतन-भत्ते और ब्याज भुगतान पर बजट का 48 प्रतिशत हिस्सा खर्च हो जाता है। शेष 52 प्रतिशत विकास कार्य, योजनाओं इत्यादि पर खर्च करने होते हैं। अब सरकार का फोकस खर्चों में कमी को लेकर है। इस पर मंथन चल रहा है। वित्त विभाग ने भी सभी विभागों से खर्चों में कमी करने को कहा है। चालू वित्तीय वर्ष में राज्य का बजट 2.79 लाख करोड़ का है। अब यह बढ़कर 3 लाख करोड़ से ज्यादा होने का अनुमान है। चुनावी वर्ष में अधूरे पड़े विकास कार्यों को समय रहते पूरा करने का दबाव सरकार पर है। योजनाओं के लिए भी बजट की दरकार है।

शिवराज सरकार ने वर्ष 2022-23 का बजट 2 लाख 79 हजार 237 करोड़ रुपए का बजट प्रस्तुत किया था। यह अब 3 लाख करोड़ रुपए तक हो सकता है। राजस्व संग्रहण भी लक्ष्य के आसपास चल रहा है। सरकार ने राजस्व बढ़ाने के लिए अनुपयोगी परिसंपत्ति के विक्रय के साथ अन्य माध्यमों से वित्त प्रबंधन करने की दिशा में कदम बढ़ाया है। लोक निर्माण विभाग ने सड़क परियोजनाओं के लिए 500 करोड़ रुपए का अतिरिक्त ऋण लिया है। वहीं, आबकारी नीति के माध्यम से भी राजस्व बढ़ाया जा रहा है। तीन साल बाद रेत खदान नीलाम करने के लिए नीति लाई जा रही है। इसके माध्यम से भी राजस्व बढ़ाने का प्रयास होगा। कुल मिलाकर सरकार अपनी वित्तीय स्थिति मजबूत करने के साथ केंद्रीय योजनाओं के भरपूर उपयोग की कार्ययोजना पर काम कर रही है। वित्त विभाग के अधिकारियों का कहना है कि केंद्र सरकार से केंद्रीय करों के हिस्से में इस वर्ष 64 हजार 107 करोड़ रुपए प्राप्त होने का अनुमान है। वहीं, 44 हजार 595 करोड़ रुपए का सहायता अनुदान मिलना अनुमानित है। इस राशि को प्राप्त करने के लिए लंबित प्रस्तावों को प्राथमिकता पर लेकर स्वीकृत करने के प्रयास किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान लगातार केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात कर रहे हैं तो सभी विभाग प्रमुखों को निर्देश दिए गए हैं कि वे अपने स्तर पर भी केंद्रीय अधिकारियों से संवाद बनाकर रखें। इसका लाभ भी प्रदेश को मिल रहा है। कई योजनाओं में प्रदेश का प्रदर्शन देश के अन्य राज्यों की तुलना में बेहतर है। पूंजीगत व्यय लगातार बढ़ाया जा रहा है। इसे प्रोत्साहन देने के लिए केंद्र सरकार द्वारा अतिरिक्त राशि भी दी गई है। इस वर्ष भी 48 हजार करोड़ रुपए का प्रविधान बजट में किया है।

सूत्रों का कहना है कि सरकार का जोर नई योजनाओं की जगह मौजूदा योजनाओं के क्रियान्वयन पर अधिक रहेगा। इसके लिए पर्याप्त वित्तीय प्रविधान भी किए जाएंगे। वित्त विभाग ने सभी विभागों से कहा है कि हितग्राहीमूलक एक-एक योजना के पिछले तीन साल के लक्ष्य और प्राप्ति का पूरा विवरण दिया जाए। साथ ही यह भी बताया जाए कि आगामी वित्तीय वर्ष में योजना के लिए कितनी राशि की आवश्यकता होगी और उससे कितने लक्ष्य की पूर्ति होगी। नई योजना के प्रस्ताव वित्त विभाग की अनुमति से ही बजट में शामिल किए जाएंगे।

● **प्रवीण सक्सेना**

इंदौरियों से पहले भोपाली चढ़ेंगे मेट्रो में!

मप्र में इंदौर और भोपाल के लिए ड्रीम मेट्रो प्रोजेक्ट का काम तेजी से चल रहा है। सरकार का पूरा प्रयास है कि चुनाव से पहले यहां मेट्रो दौड़ा दी जाए जिससे उन्हें विधानसभा चुनाव में इसका फायदा मिल सके। ऐसे अगर इंदौर और भोपाल में काम के रफ्तार की तुलना करें तो लगता है इंदौरियों से पहले भोपालियों को मेट्रो में पहले चढ़ने का मौका मिलेगा। इंदौर मेट्रो और भोपाल मेट्रो दोनों ही प्रोजेक्ट पर काम साल 2018 में शुरू किया गया था। यानी करीब 4 साल का समय बीतने को है और अभी तक काफी काम होना बाकी रह गया है। अगर बात भोपाल की करें तो यहां 10 पिलर का काम अंतिम चरण में है और 90 प्रतिशत डक्ट का काम लगभग पूरा हो गया है। वहीं इंदौर मेट्रो में अभी तक महज 70 फीसदी डक्ट का काम हुआ है।

भोपाल ओवर ऑल भले ही इंदौर से आगे हो, लेकिन एक मामले में इंदौर आगे निकल गया है। यहां डिपो बनाने का काम राजधानी से आगे और ज्यादा तेजी से चल रहा है। भोपाल में ये काम सुभाषनगर डिपो साइट में पानी भर जाने के कारण पिछड़ गया। हालांकि बाकी मामलों में भोपाल में काम काफी तेजी से हो रहा है। भोपाल में बिजली लाइन बिछाने का लगभग 70 फीसदी काम पूरा हो गया है। दावा किया जा रहा है कि फरवरी तक भोपाल में दो स्टेशन इतने तैयार कर लिए जाएंगे कि यहां यात्री आकर ट्रेन पकड़ सकें। हालांकि, ऐसा होगा नहीं क्योंकि मार्च के बाद से ही ट्रैक और सिग्नलिंग का काम शुरू होगा। भोपाल मेट्रो के लिए सितंबर में ट्रायल का प्लान किया जा रहा है। इसके लिए काम तेजी से चल रहा है। पूरे प्रोजेक्ट में दिन-रात मशीनें चल रही हैं। अगर इसी रफ्तार से वाया डक्ट के साथ स्टेशन और डिपो का काम चलता रहा तो पूरी संभावना है कि सितंबर तक ट्रायल हो जाए और उसके बाद भोपाल की शान में एक और नाम जुड़ जाए।

रानी कमलापति स्टेशन से सुभाष नगर तक 4 किमी के मेट्रो रूट पर वाया डक्ट के सिविल वर्क का काम 90 फीसदी तक हो गया है। फरवरी तक वाया डक्ट का काम पूरा हो जाएगा और स्टेशन भी इतने तैयार हो जाएंगे कि वहां से यात्री मेट्रो में बैठ सकें। ट्रैक और सिग्नलिंग का काम मार्च में शुरू हो जाएगा। मेट्रो का कोच बेंगलुरू में बन रहा है। इस साल सितंबर में मेट्रो के ट्रायल को सुनिश्चित करने के लिए वाया डक्ट के साथ स्टेशन और डिपो का काम तेजी से चल रहा है। हर साइट पर 24 घंटे मशीनें चलते हुए देखी जा सकती हैं। भोपाल और इंदौर में 2018 में वाया डक्ट के सिविल वर्क शुरू हुआ था। भोपाल में यह काम 90 प्रतिशत तक हो गया है। केवल 10 पिलर का काम अंतिम चरण में है। इंदौर में वाया डक्ट का काम 70 प्रतिशत ही हुआ है। वाया डक्ट के ऊपर ही ट्रैक बिछेगा। स्टेशन की बात करें तो भोपाल में सुभाष नगर और डीबी मॉल स्टेशन ट्रैक हाइट यानी 12 मीटर तक आ गए हैं। इन स्टेशन पर एंट्री एंड एक्जिट का काम भी लगभग पूरा हो गया है। इंदौर में यह दोनों काम अभी पिछड़े हुए हैं। डिपो के काम में जरूर भोपाल थोड़ा पीछे है, क्योंकि बरसात के मौसम में सुभाष नगर डिपो की साइट पर पानी भर गया था। अभी ट्रैक एंट्री का काम चल रहा है। कंट्रोल बिल्डिंग की छत डल रही है। लोडिंग-अनलोडिंग-वे का काम चल रहा है। इंदौर में डिपो का काम भोपाल के मुकाबले 10 फीसदी अधिक है। मेट्रो के लिए बिजली लाइन बिछाने का काम भी लगभग 70 फीसदी हो गया है। गोविंदपुरा से सुभाष नगर तक बिजली लाइन बिछाने के बाद ही सिग्नलिंग और इलेक्ट्रिकल के दूसरे काम शुरू हो सकेंगे। फरवरी में इसका काम पूरा होने के बाद मार्च से ट्रैक और सिग्नलिंग का काम शुरू हो जाएगा। इसके लिए कंपनी अगले महीने भोपाल आ जाएगी ताकि तैयारियां पूरी की जा सकें।

राजधानी में भोपाल मेट्रो रेल का ट्रायल रन अब सुभाष नगर डिपो से आरकेएमपी रेलवे स्टेशन तक यानी पांच किलोमीटर का होगा। इसका कारण रानी कमलापति रेलवे स्टेशन के पास बनने वाले स्टील ब्रिज के निर्माण में हो रही देरी है। बता दें कि इससे पहले मेट्रो का ट्रायल रन साकेत नगर स्थित एम्स अस्पताल से सुभाष नगर के बीच होना था। तब इसकी दूरी 6.22 किलोमीटर निर्धारित की गई थी। मप्र मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के अधिकारियों ने बताया कि मेट्रो वायडक्ट के एक पिलर से दूसरे की दूरी 30 से 34 मीटर के बीच होती है। लेकिन रानी कमलापति रेलवे स्टेशन के पास प्लेटफार्म नंबर एक से पांच तक की दूरी 65 मीटर है और इतना लंबा सीमेंट-कांक्रीट का स्लैब नहीं डाला जा सकता है। इसलिए यहां पर स्टील ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि यदि यहां पिलर खड़े कर वायडक्ट का निर्माण किया जाता तो रेलवे से घंटों के लिए ब्लॉक लेना पड़ता, जिससे कई ट्रेनें प्रभावित होतीं। वहीं स्टील का ब्रिज बनाने पर यहां दो से चार घंटे के ब्लॉक में काम हो जाएगा।

● **राकेश ग्रोवर**

350 टन वजनी होगा स्टील ब्रिज

आरकेएमपी रेलवे स्टेशन के पास 65 मीटर लंबा और 10 मीटर चौड़ा स्टील ब्रिज बनाया जा रहा है, इसका वजन 350 टन से अधिक होगा। इसके लिए क्रॉसिंग के दोनों सिरों पर पिलर का निर्माण शुरू हो गया है। मेट्रो रेल कंपनी ने दिल्ली मेट्रो द्वारा पंजाबी बाग रेलवे क्रॉसिंग पर बनाए गए ब्रिज की डिजाइन के आधार पर अपनी डिजाइन रेलवे को सबमिट की है और रेलवे क्रॉसिंग करने के शुल्क के रूप में दस लाख रुपए जमा कराए हैं। बता दें भोपाल मेट्रो की चर्चा सबसे पहले साल 2014 में हुई थी। तब से लेकर आज तक 8 साल का समय बीत गया है। 2018 भूमिपूजन कार्यक्रम में प्रोजेक्ट को 2023 तक पूरा करने का वादा किया था। इस दौरान प्रोजेक्ट में 8 मैनेजिंग डायरेक्टर इस प्रोजेक्ट में काम कर चुके हैं। अभी 9वें डायरेक्टर का कार्यकाल चल रहा है। देरी का एक ये भी कारण माना जा रहा है।

मप्र में चुनावी साल का आगाज होते ही सियासी दलों ने कास्ट पॉलिटिक्स शुरु कर दी है। 2023 विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा और कांग्रेस में जातियों को रिझाने की होड़ लग गई है। सत्तारुढ़ पार्टी भाजपा ने जहां भोपाल में मुख्यमंत्री निवास पर राजपूत समाज के सम्मेलन का आयोजन किया तो दूसरी तरफ सतना में विपक्षी दल कांग्रेस ओबीसी समाज का सम्मेलन कर एक बड़े वोट बैंक को लुभाने की कोशिश की।

पार्टियों का कास्ट प्लान तैयार

मप्र में चुनावी साल आते ही राजनीतिक महारथियों का फोकस एससी-एसटी और आदिवासी वर्ग पर मुड़ गया है। भाजपा और कांग्रेस ने अपना चुनावी प्लान अनुसूचित जाति को साधने के हिसाब से बना लिया है और जमीनी स्तर पर काम भी शुरू कर दिया है। कांग्रेस अनुसूचित जनजातीय विभाग का बड़ा सम्मेलन कर रही है, जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ सियासी कास्ट प्लान तैयार कर रहे हैं। इसी के सहारे 2023 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस अपनी जीत सुनिश्चित करने की उम्मीद लगा रही है। दूसरी तरफ फरवरी से भाजपा विधानसभा वार अनुसूचित जाति वर्ग के सम्मेलन करेगी। भाजपा आलाकमान ने साफ कर दिया है कि प्रदेश की हर छोटी-बड़ी गतिविधियों को इसे ध्यान में रखकर किया जाए। मप्र में साल 2023 में विधानसभा चुनाव हैं।

मप्र की राजनीति को ध्यान से देखें तो पता चलता है कि यहां की सत्ता पाने में आदिवासी वोटबैंक निर्णायक भूमिका में रहते हैं और इसे साधने के लिए प्रदेश की दोनों ही बड़ी पार्टियां समय-समय पर जुगत लगाती रहती है। लोकसभा चुनाव में आदिवासियों के लिए 47 लोकसभा सीटें आरक्षित हैं। वहीं 60 से ज्यादा सीटों पर आदिवासी मतदाताओं का खासा प्रभाव रहता है। ऐसे में भाजपा ने द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति पद पर लाकर 60 से ज्यादा सीटों पर अपनी पकड़ बनाने के लिए मास्टर स्ट्रोक खेला। हालांकि भाजपा का ये कदम सिर्फ मप्र के लिए नहीं था। मप्र के अलावा गुजरात, झारखंड, राजस्थान, छत्तीसगढ़ में भी बड़ी संख्या में आदिवासी वोटर निर्णायक स्थिति में रहते हैं।

राजनीति में जाति का महत्व कैसे बदलता है यह भी दिलचस्प है। 1957 यानी नए मप्र के पहले चुनाव के समय हर पांचवां विधायक ब्राह्मण वर्ग से था, यानी 20 प्रतिशत। 1972 में यह 25 प्रतिशत हो गया पर इसके बाद हालात बदले। डीपी मिश्र और श्यामाचरण शुक्ल के साथ ही इनका वर्चस्व घटता गया। 1980 के बाद से अर्जुन सिंह, दिग्विजय सिंह के जमाने में राजपूत हावी होते रहे। भाजपा के आने के साथ उमा भारती, बाबूलाल गौर और शिवराज सिंह चौहान के युग में ओबीसी को बढ़ावा मिला। जातीय समीकरण किस प्रकार राजनीति को बदलते हैं, उसे सीधे और ऊपरी गिनती से नहीं, अंतरप्रवाह यानी अंडर करेंट से समझा जाना चाहिए। लंबे समय तक आदिवासी और अनुसूचित जाति को कांग्रेस का तय मतदाता ही माना जाता था। जब दिग्विजय सिंह को चुनाव परिणाम की सूचना शुरू में मिली और जैसे ही सुना कि झाबुआ से कांग्रेस हार गई, तब उन्होंने समझ लिया कि कांग्रेस की हार तय है। भाजपा पहले ब्राह्मण और बनियों की पार्टी मानी जाती थी। ओबीसी का साथ मिलने से उसे बहुमत मिला।

अगर जनसंख्या की जातिवार वृद्धि देखें तो 2001-11 के बीच प्रदेश की आबादी 20 प्रतिशत बढ़ी। सामान्य वर्ग की 18 प्रतिशत, एससी की 24 प्रतिशत और जनजाति की 25 प्रतिशत यानी अब इसी अनुपात में वोटर भी बढ़े होंगे। वैसे, यह उल्लेखनीय है कि पहले आदिवासियों की आबादी सबसे कम तेजी से बढ़ती रही थी। पिछले दशक में यह उल्टा हो गया। वजह आदिवासी क्षेत्रों की स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ना और लोगों की सोच में बदलाव है। कांग्रेस को लग रहा है कि 37 प्रतिशत आबादी वाला अनुसूचित वर्ग उसके साथ है। एंटी-इनकम्बेंसी के तौर पर बाकी जनता भी वोट देगी। साल 2022 के अंत में प्रदेश सबसे ज्यादा चर्चा का विषय रहा राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा इसकी काट के लिए भाजपा ने 2023 के चुनाव को देखते हुए जनजातीय बाहुल्य विधानसभाओं और लोकसभा सीटों पर रथयात्रा निकालने का प्लान बनाया। रथयात्रा में

आदिवासी वोटर बनेगा गेमचेंजर

ओबीसी के साथ विधानसभा चुनाव से पहले आदिवासी वोटरों को रिझाने में भाजपा और कांग्रेस दोनों एड़ी-चोटी का जोर लगाए हुए है। दरअसल मप्र की सियासत में आदिवासी वोटर गेमचेंजर साबित होता है। 2011 की जनगणना के मुताबिक मप्र की आबादी का करीब 21.5 प्रतिशत एसटी है। इस लिहाज से राज्य में हर पांचवा व्यक्ति आदिवासी वर्ग का है। राज्य में विधानसभा की 230 सीटों में से 47 सीटें अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित हैं। वहीं 90 से 100 सीटों पर आदिवासी वोट बैंक निर्णायक भूमिका निभाता है। मप्र में सत्ता वापस पाने के लिए कांग्रेस ने ओबीसी वोटबैंक को साधने के लिए सतना में ओबीसी सम्मेलन किया। सम्मेलन में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कहा कि मैं वचन देता हूं कि जब भी हमारी सरकार केंद्र में आएगी तब हम संविधान संशोधन करके पिछड़ा वर्ग की सही जनगणना करवाएंगे और पिछड़ा वर्ग को आरक्षण का लाभ सुनिश्चित करवाएंगे। कमलनाथ ने कहा कि उन्होंने मप्र में अपनी सरकार के दौरान पिछड़ा वर्ग को 27 फीसदी आरक्षण दिया था लेकिन भाजपा जानबूझकर कोर्ट में मामले को ले गई और पिछड़ा वर्ग को आरक्षण का लाभ मिलने में रूकावट की।

जनजातीय गौरव दिवस पर टंट्या मामा बलिदान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित कर आदिवासी वोटबैंक को रिझाने की भरपूर कोशिश की। रथयात्रा कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा की काट कही गई, लेकिन वो कुछ कमाल नहीं कर पाई। भारत जोड़ो यात्रा ने मप्र में 12 दिनों में कई विधानसभाओं और लोकसभा सीटों पर फोकस किया। कहा गया कि द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति बनाने के बाद कांग्रेस ज्यादा सक्रिय हुई और भारत जोड़ो यात्रा पटल पर आई।

भाजपा ने जयस के प्रभाव को कम करने के लिए भी अपनी पार्टी के आदिवासी नेताओं को एक्टिव कर दिया। आदिवासी संगठन जयस ने आदिवासियों के प्रभाव वाली 80 विधानसभा सीटों पर अपने कैंडिडेट उतारने का ऐलान किया तो कांग्रेस ही नहीं भाजपा को भी बड़ा झटका लगा, जिसके चलते दोनों दल जयस को काउंटर करने की रणनीति बनाने में जुट गए। 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को सत्ता की चाबी आदिवासियों के वोटों के सहारे ही मिली थी। 47 सीटों में से कांग्रेस को 30 सीटें मिली थीं, लेकिन इस बार ये इतना आसान नहीं है और ये खुद कांग्रेस भी जानती है। प्रधानमंत्री मोदी को मप्र लाकर और जनजातीय गौरव दिवस मनाकर भाजपा ने कांग्रेस के लिए कड़ी टक्कर देने का काम किया और इसका असर कुछ हद तक नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव में देखने को भी मिला। अब कांग्रेस को डर है कि विधानसभा में भी आदिवासियों का झुकाव भाजपा की तरफ ना चला जाए। जयस संगठन के संरक्षक डॉ. हीरालाल अलावा कांग्रेस से विधायक हैं।

साल के अंत में मप्र राज्य में विधानसभा चुनाव होना है। ऐसे में जातीय समीकरण बैठाने में सत्ताधीश लगे हुए हैं। इस बीच करणी सेना ने भी राजनीति में एंट्री के संकेत दे दिए हैं। बता दें कि भोपाल के जंबूरी मैदान में जुटे लाखों की संख्या में युवा अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहें हैं। करणी सेना की 21 सूत्रीय मांगे हैं और करणी सेना प्रमुख जीवन सिंह शेरपुर का कहना है कि मांगे पूरी नहीं हुई तो सत्ता बदल देंगे। उनका दावा है कि सवर्ण और पिछड़ा वर्ग मेरे साथ में है। मौजूदा स्थिति में अगर मांगें

मानी गई तो ये वोट बैंक भाजपा की तरफ जाएगा, वरना मप्र की राजनीति में एक और बदलाव देखने को मिल सकता है। यानि सरकार ने पेसा एक्ट हो या फिर और कोई योजनाएं जो आदिवासियों के लिए लेकर आ रही है। इसके बावजूद भाजपा आदिवासियों को जोड़ने में पूरी तरह सक्षम नहीं दिखाई दे रही है।

विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए भाजपा ने ओबीसी को साधने के लिए इस बार पाटीदार समाज पर भी दांव खेलने के मूड में है। आपको बता दें कि हाल में ही पार्टी ने राज्यसभा सांसद के रूप में इंदौर की पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष कविता पाटीदार को चुना था। कविता की उम्मीदवारी पर मोहर लगाने में पूरे पाटीदार समाज ने मेहनत की थी। इसके लिए पार्टी के अंदर **बाकायदा एक अभियान** चलाया गया जो मालवा-निमाड़ के पाटीदार समाज से शुरू हुआ था। इससे ये देखा जा रहा है कि भाजपा पार्टी ओबीसी वर्ग को भी रिझाने की कोशिश कर रही है। इसके अलावा आपको बता दें कि कविता पाटीदार का चयन इंदौर की राजनीति में शक्ति के संतुलन के रूप में देखा जा रहा है जो आगामी विधानसभा चुनाव पर काफी असर डाल सकता है। आदिवासियों का साथ पाने के लिए कांग्रेस भी कई कदम चल रही है। कांग्रेस सभी 47 विधानसभा क्षेत्रों में सम्मेलन कर रही है। इसमें कांग्रेस द्वारा किए गए आदिवासी हित के कार्यों को जनता को याद दिलवाया जाएगा। कांग्रेस अनुसूचित जनजातीय विभाग का बड़ा सम्मेलन करने जा रही है। इसके बाद साफ कहा जा सकता है कि कांग्रेस अनुसूचित जनजातीय के ही सहारे है। कमलनाथ सियासी कास्ट प्लान तैयार कर रहे हैं, जो 2023 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत तय करे। इसके लिए अनुसूचित जनजाति विभाग के कार्यकर्ताओं का सम्मेलन प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में हुआ। सम्मेलन में प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ ने अनुसूचित जनजाति विभाग के कार्यकर्ताओं को टिप्स दिए।

बीते 15 नवंबर को मप्र सरकार ने आदिवासियों को अधिकार संपन्न बनाने वाला पेसा (पंचायत, अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार कानून, 1996) कानून लागू किया। ये आदिवासी नायक बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर किया। इसे ही 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाया जाता है। बता दें कि साल 1996 में संसद से पारित यह कानून ग्राम सभाओं को अधिकार संपन्न बनाकर प्रशासन का अधिकार देता है। इससे स्थानीय जनजातियों को जल, जंगल और जमीन का अधिकार व संस्कृति का संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके। साथ ही, यह कानून विवादों के समाधान भी परंपरागत तरीकों से ग्राम सभाओं के स्तर पर निपटाने की बात करता है और ग्राम पंचायतों को बाजारों के प्रबंधन की शक्ति भी प्रदान करता है। आदिवासी या जनजातीय समुदायों को साहूकारी प्रथा से मुक्ति जैसे प्रावधान भी इसमें हैं।

● **सुनील सिंह**

दलित लगाएंगे बेड़ा पार?

मप्र में दलित राजनीति इस समय सबसे केंद्र में है। छिटकते दलित वोट बैंक को अपने साथ एकजुट रखने के लिए भाजपा लगातार दलित नेताओं को आगे बढ़ रही है। बात चाहे बड़े दलित चेहरे के तौर पर मप्र की राजनीति में पहचान रखने वाले सत्यनारायण जटिया को संसदीय बोर्ड और चुनाव समिति में शामिल करना हो या जबलपुर से सुमित्रा वाल्मीकि को राज्यसभा भेजना हो। भाजपा लगातार दलित वोटरों को सीधा मैसेज देने की कोशिश कर रही है। दरसल मप्र में अनुसूचित जाति (एससी) के लिए 35 सीटें रिजर्व हैं। वहीं प्रदेश की 84 विधानसभा सीटों पर दलित वोटर जीत-हार तय करते हैं। मप्र में 17 फीसदी दलित वोटर वोटबैंक है और विधानसभा चुनाव में जिस पार्टी के साथ यह वोटबैंक एकमुश्त जाता है वह सत्ता में काबिज हो जाती है। भाजपा में संभावित बदलाव में भी जाति फैक्टर-मप्र में चुनावी साल में भाजपा में होने वाले संभावित बदलाव पर भी जाति की राजनीति का असर दिखाई देने की पूरी संभावना है। जनवरी के दूसरे पखवाड़े में सरकार और संगठन में होने वाले संभावित बदलाव में आदिवासी या ओबीसी चेहरों का दबदबा देखने को मिल सकता है।

कमलनाथ की नई टीम तैयार

नया साल-नई सरकार का नारा देने वाली मप्र कांग्रेस ने चुनावी साल की शुरुआत में नई टीम घोषित की है। ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के जनरल सेक्रेटरी केसी वेणुगोपाल ने लिस्ट जारी की है। इनमें 105 प्रदेश महामंत्री और 50 उपाध्यक्ष बनाए गए हैं। सभी जिलाध्यक्षों की नियुक्ति की लिस्ट भी जारी की गई है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के साले संजय सिंह मसानी को फिर मप्र कांग्रेस का उपाध्यक्ष बनाया गया है। दूसरी तरफ भोपाल के शहर और ग्रामीण जिलाध्यक्षों पर कोई फैसला नहीं हुआ है। वहीं, राजीव सिंह को महामंत्री से उपाध्यक्ष बनाया गया है। मानक अग्रवाल की पीसीसी की टीम में वापसी हुई है।

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मप्र कांग्रेस की पॉलिटिकल अफेयर कमेटी का गठन किया है। इस कमेटी में सीनियर और जूनियर नाथ यानी कमलनाथ और नकुलनाथ दोनों को शामिल किया गया है। कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा बनाई गई 21 सदस्यीय कमेटी में मप्र कांग्रेस के अध्यक्ष कमलनाथ, पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और नेता प्रतिपक्ष डॉ. गोविंद सिंह के अलावा कांतिलाल भूरिया, सुरेश पचौरी, अरुण यादव, अजय सिंह, राहुल विवेक तन्खा, राजमणि पटेल, नकुलनाथ, बाला बच्चन, जीतू पटवारी, सुरेंद्र चौधरी, रामनिवास रावत, नर्मदा प्रसाद प्रजापति, सज्जन सिंह वर्मा, आरिफ अकील, कमलेश्वर पटेल, महेंद्र जोशी, रामेश्वर नीखरा और शोभा ओझा को शामिल किया है।

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के महासचिव केसी वेणुगोपाल ने 105 महासचिवों की लिस्ट जारी की है। इनमें अब्दुल नासिर, अब्दुल रहमान फारुकी, अजय रघुवंशी, अजय ओझा, अमित शर्मा, अंजू बघेल, अनुराधा शेंगे, अनुराग गढ़वाल, अशोक दांगी, आसिफ जकी, अवनीश भार्गव, भूपेंद्र सिंह मुहासा, ब्रिज भूषण शुक्ला, चंद्रिका प्रसाद द्विवेदी, चेतन यादव, दशरथ गुर्जर, दीप चंद यादव, देवदत्त सोनी, देवेंद्र टेकाम, देवेंद्र तोमर, धर्मेश घई, दिनेश यादव, कमलापत आर्य, महेंद्र सिंह चौहान, फरजाना खान, गंभीर सिंह, गोविंद मुजाल्दे, गुलाब उईके, गुरमीत सिंह मंगू, हेमंत पाल, हीरासन उईके, जगदीश सैनी, जय श्रीराम बघेल, जय सिंह ठाकुर, जयप्रकाश शास्त्री, जतिन उईके, जीवन पटेल, जेवियर मेडा, जितेंद्र सिंह, केदार सोनी, कैलाश कुंडल, कैलाश परमार, कमल वर्मा, कौशल्या गोटिया, किरण अहिरवार, केके यादव, कृष्ण मोहन मालवीय, कुलदीप बुंदेला, कुंदन मालवीय, मनीष गुप्ता, मनीष राय, महेंद्र सिंह कुर्मी, महेंद्र गुलवानी, मंगेश संघई, मृणाल पंत, मुनव्वर कौशर, मुकुल पुरोहित, नारायण प्रजापति, नरेश सराफ, नव कृष्ण पाटिल, निर्मल मेहता, निशंक जैन, पंकज जैन, पवन पटेल, पारस सकलेचा, प्रभु राठौर, प्रभु सिंह ठाकुर, प्रवीण सक्सेना, प्रिदर्शन गौर, पुरुषोत्तम दांगी, पुष्पा बिसेन, राजेंद्र मिश्रा, राजेश बैरवा, राजेश रघुवंशी, राजेंद्र मिश्रा, राम सिया भारती, रमेश चौधरी, राम लखन दंडोतिया, रशीद सिद्दीकी, रामू टेकाम, सम्मति सैनी, संजय सिंह परिहार, संजीव सक्सेना, सरस्वती सिंह, सौरव शर्मा, नाती सविता दीवान शर्मा, शारदा खटीक, शशि राजपूत, शेखर चौधरी, शिवप्रसाद प्रधान, सुधीर सिंह तोमर, सुनील बोरसे, सुनील जैन, सुनील जायसवाल, ताराचंद साहू, उज्जवल सिंह चौहान, वसुदेव शर्मा, वीर सिंह यादव, विभा बिंदु डोंगरे, विजय कोल, विकास शर्मा, विनय बाकलीवाल, यासमीन शेरानी, युसूफ कडप्पा, योगेश शर्मा महामंत्री बनाए गए हैं।

मप्र कांग्रेस में अभय दुबे, अजय चौरसिया, अजय शाह, अजिता बाजपेई पांडे, अर्चना जायसवाल, अशोक सिंह, आशुतोष वर्मा, बालेंद्र शुक्ला, बटुक शंकर जोशी, चंद्रप्रभाष शेखर, दीपक सक्सेना, गजेंद्र सिंह राजू खेड़ी, गंगा तिवारी, गोविंद गोयल, हमीद काजीख, जेपी धनोपिया, खीजर मोहम्मद कुरैशी, लाल चंद्र गुप्ता, महेंद्र जोशी, महेंद्र सिंह चौहान, मानक अग्रवाल, मानिक सिंह, मुजीब कुरैशी, नन्हे लाल धुर्वे, नरेंद्र नाहटा, नेहा सिंह, नूरी खान, फूल सिंह बरैया, प्रकाश जैन, प्रताप भानु शर्मा, प्रताप सिंह लोधी, राजकुमार पटेल, राजाराम त्रिपाठी, राजीव सिंह, रामप्रकाश यादव, राम गरीब वनवासी, रामेश्वर नीखरा, रामसेवक गुर्जर, साजिद अली, संजय सिंह मसानी, संजीव मोहन गुप्ता, शोभा ओझा, सुभाष सोजतिया, स्वप्निल कोठारी, सैयद साजिद अली, तिलक सिंह लोधी, ताराचंद पटेल, बीके बाथम, रविंद्र तिवारी, विश्वेश्वर भगत ये सभी उपाध्यक्ष बनाए गए हैं। कांग्रेस ने मप्र में 64 जिला अध्यक्षों की लिस्ट भी जारी की है। इसमें अरविंद बागड़ी को इंदौर सिटी का जिला अध्यक्ष बनाया गया है, जबकि इंदौर ग्रामीण जिला अध्यक्ष की जिम्मेदारी सदाशिव यादव को दी गई है। भोपाल के शहर और ग्रामीण जिलाध्यक्षों पर कोई फैसला नहीं हुआ है। जबलपुर शहर जिला अध्यक्ष के पद की जिम्मेदारी जगत बहादुर अन्नू को दी गई है, जबकि जबलपुर ग्रामीण जिला अध्यक्ष डॉ. नीलेश जैन को बनाया गया है। ग्वालियर शहर जिला अध्यक्ष देवेंद्र शर्मा को बनाया गया है, जबकि ग्वालियर ग्रामीण जिला अध्यक्ष प्रभुदयाल जोहारे को बनाया गया है।

● **अरविंद नारद**

10 जिलों में नहीं थे संगठन के मुखिया

कांग्रेस के करीब 10 जिले ऐसे थे जहां जिला अध्यक्ष नहीं थे। इनमें मुरैना ग्रामीण जिलाध्यक्ष, सागर में शहर और ग्रामीण अध्यक्ष, अनूपपुर, रतलाम ग्रामीण, खरगोन में जिलाध्यक्ष के पद रिक्त थे। वहीं निमाड़ अंचल के बुरहानपुर, खंडवा दोनों जिलों में शहर और ग्रामीण इकाईयों में कार्यवाहक जिलाध्यक्ष से काम चल रहा था। शहडोल में सुभाष गुप्ता, कटनी शहर में विक्रम खम्परिया बतौर कार्यवाहक जिलाध्यक्ष काम कर रहे थे। नर्मदापुरम में सोहागपुर के पुष्पराज पटेल को कांग्रेस जिला अध्यक्ष की कमान सौंपी गई है। अभी तक जिलाध्यक्ष का पद संभाल रहे सत्येंद्र फौजदार को फिलहाल कोई नई जिम्मेदारी नहीं दी है। बताया जा रहा है कि सत्येंद्र फौजदार जिले में पिछले कुछ महीनों से पार्टी में सामंजस्य नहीं बैठा पा रहा थे। हाल ही में मप्र कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी के आगमन के दौरान यूथ कांग्रेस और एनएसयूआई के कुछ कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी की थी। जिसका खामियाजा नगर कांग्रेस कमेटी के नगर अध्यक्ष राकेश शर्मा को उठाना पड़ा। उन्हें तब पद से हटाया गया था।

आखिरी टेस्ट में भी भाजपा पास

मप्र में विधानसभा चुनाव को अब बमुश्किल 10 महीने ही बचे हैं। इससे पहले प्रदेश के 19 नगरीय निकायों में हुए चुनाव मिशन 2023 का आखिरी टेस्ट माना जा रहा है। निकायों की संख्या भले ही कम थी, लेकिन संदेश बड़ा निकला। 19 नगरीय निकायों में भाजपा (11) और कांग्रेस (8) में महज 3 का अंतर रहा है। खास बात यह है कि इन निकायों में पिछले चुनाव में भी यही स्थिति थी। इस लिहाज से दोनों पार्टियों को ना नुकसान हुआ, ना फायदा। कुछ निकायों में उलटफेर हुआ, लेकिन संख्या की दृष्टि से फर्क नहीं पड़ा। पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह के गढ़ राघौगढ़ में कांग्रेस का कब्जा बरकरार रहा।

ओवरऑल निकायों की बात करें तो कुल 413 में से 316 पर भाजपा काबिज हो गई है। ओवरऑल आंकड़ें देखें तो साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के लिए बड़ी चुनौती हो सकती है। हालांकि असल इम्तिहान में तैयारी के हिसाब से 9 महीने का ही वक्त बाकी है। थर्ड फेज में जिन 19 निकायों के चुनाव हुए, उनमें भाजपा को 11 और कांग्रेस को 8 में बहुमत मिला है। देखा जाए, तो वर्ष 2015 के चुनाव में भी यही स्थिति थी, लेकिन इस बार 8 निकायों में उलटफेर हुआ है। बड़वानी, धार और मनावर नगर पालिका व अंजड़ नगर परिषद सीट भाजपा ने कांग्रेस से छीन ली, जबकि पीथमपुर नगर पालिका बड़वानी जिले की पलसूद और धार जिले की धामनोद व कुक्षी भाजपा से कांग्रेस ने छीन ली।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने भाजपा की जीत के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं को बधाई दी है। साथ ही जनता का भी आभार व्यक्त किया है। वहीं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने भी 19 में से 8 निकाय में जीत के लिए पार्टी कार्यकर्ताओं को बधाई दी। कमलनाथ ने कहा कि जनता ने एक बार फिर स्पष्ट कर दिया है कि उसका मन कांग्रेस के पक्ष में है। दोनों नेताओं ने परिणामों को लेकर ट्वीट किए हैं। गुना जिले की राघौगढ़ पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह का गढ़ रहा है। यहां कांग्रेस ने 16 वार्डों में जीत हासिल की है, जबकि भाजपा को 8 वार्डों पर जीत मिली है। पिछले चुनाव से तुलना करें, तो भाजपा को 4 सीटें ज्यादा मिली हैं। कारण, यहां संघ के कई पदाधिकारी और भाजपा के प्रदेश स्तर के नेता चुनावी बिसात बिछाने के लिए डेरा डाले थे। बता दें कि गुना जिला केंद्रीय ज्योतिरादित्य सिंधिया का भी गढ़ रहा है। कैबिनेट मंत्री महेंद्र सिंह सिसोदिया ने राघौगढ़ में ऐतिहासिक जीत का दावा भी किया था। इस लिहाज से भाजपा को मनचाहा परिणाम नहीं मिला।

बड़वानी जिले की राजपुर नगर परिषद में भाजपा का कब्जा है। यहां भाजपा ने 11 तो कांग्रेस ने 4 पर जीत दर्ज की। ये पूर्व गृहमंत्री बाला बच्चन का इलाका है। यहां उनकी साख दांव पर थी। हालांकि इस परिषद पर पहले भी भाजपा का कब्जा रहा। बताया जा रहा है कि इस बार बाला बच्चन ने राजपुर से ज्यादा पानसेमल और खेतिया पर फोकस किया था। बावजूद दोनों परिषद भाजपा जीत गई। अनूपपुर की जैतहरी नगर परिषद के 15 वार्डों में से 7 में भाजपा, 6 पर कांग्रेस और 2 पर निर्दलीय ने जीत दर्ज की है। ये प्रदेश के खाद्य मंत्री बिसाहूलाल का इलाका है। कांटे की टक्कर में यहां भाजपा ने जीत जरूर हासिल कर ली है, लेकिन अध्यक्ष पद का पेंच फंसा है। दोनों निर्दलीय जिसकी ओर झुकेंगे, उसी का अध्यक्ष बनेगा।

खास है कि नगर निगम और नगर पालिकाओं में जीत-हार उस शहर में वोटर्स के झुकाव का संकेत देते हैं। इस लिहाज से देखें तो 16 में से 9 नगर निगम में भाजपा के महापौर हैं, जबकि पिछले चुनाव में भाजपा ने सभी पर कब्जा किया था। ऐसे में उसके हाथ से 7 निगम निकल गए। इसमें से कांग्रेस ने 6 पर जीत कर यह संकेत दिए हैं कि उसके प्रति वोटर्स का रुझान बढ़ रहा है। इसी तरह, 98 नगर पालिकाओं में से भाजपा ने 60 और कांग्रेस ने 38 पर कब्जा किया है।

राजनीतिक विश्लेषक कहते हैं कि निकाय चुनाव का दायरा छोटा होता है। इसका समीकरण अलग होता है, इसलिए इसे सत्ता का सेमीफाइनल नहीं मानना चाहिए। विधानसभा चुनाव में मुद्दे अलग होते हैं। यही कारण है कि उसका दायर भी बड़ा होता है। आमतौर पर सत्ताधारी दल ही निकाय चुनाव जीतता है, लेकिन कांग्रेस के लिए संकेत जरूर है। उसे सोचना पड़ेगा। उसे तैयारी और रणनीति नए सिरे से बनानी होगी। विश्लेषकों का मानना है कि विधानसभा चुनाव को संगठनात्मक लिहाज से देखें, तो कांग्रेस में समस्याएं हैं। कांग्रेस से तुलना करें, तो भाजपा सधा हुआ संगठन है। उसकी टीम अच्छी है। वहीं, कांग्रेस को जमीनी कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करना पड़ेगा।

● **जितेंद्र तिवारी**

निकाय चुनाव रिजल्ट का इशारा किस ओर

राजनीतिक जानकार कहते हैं कि निकाय चुनाव ने प्रदेश में बदलते राजनीतिक परिदृश्य के स्पष्ट संकेत दिए हैं। प्रदेश की राजनीति अभी तक मोटे तौर पर दो ध्रुवीय यानी भाजपा और कांग्रेस के बीच ही बंटी रही है। इसमें कुछ हिस्सेदारी बसपा, सपा और गोंगपा आदि की रही है, लेकिन अब इन पार्टियों का वोट भी आम आदमी पार्टी और एआईएमआईएम की तरफ शिफ्ट होने लगा है। आप की तो मप्र में धमाकेदार एंट्री हुई है। सिंगरौली नगर निगम में उसकी महापौर प्रत्याशी रानी अग्रवाल चुनाव जीत गई हैं, तो कटनी में भाजपा से बागी निर्दलीय प्रीति सूरी महापौर बनी हैं। ओवरऑल नतीजों का अंचलवार विश्लेषण करें, तो महाकौशल में अब भाजपा का एक भी महापौर नहीं है। यही स्थिति ग्वालियर-चंबल अंचल में भी है। वहां भाजपा से कांग्रेस ने ग्वालियर और मुरैना दोनों नगर निगम छीन लिए। बघेलखंड में भी भाजपा 3 में से एक नगर निगम ही जीत पाई। इस अंचल के रीवा में कांग्रेस और सिंगरौली में आप की प्रत्याशी ने जीत दर्ज की। अलबत्ता मालवा, निमाड़ और बुंदेलखंड में भाजपा की स्थिति बेहतर रही है।

टूरिस्ट सर्किट का केंद्र बनेगा रीवा

रीवा शहर से लेकर पूरा जिला प्राकृतिक एवं पुरातात्विक स्थलों से भरा है। यहां पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए कई नई योजनाएं बनाई गई हैं। इस साल पर्यटन पर फोकस रहेगा। जिला प्रशासन ने बड़ी कार्ययोजना तैयार की है, जिसके तहत आने वाले समय में पर्यटकों को रीवा में आकर्षित करने के साथ ही यहां पर संसाधनों में वृद्धि करने की तैयारी है। जिले में धार्मिक महत्व के स्थलों के साथ ही पुरातात्विक महत्व के कई स्थल मौजूद हैं। पहाड़, नदियों और जलप्रपातों की भी बड़ी श्रृंखला है। इन सभी स्थानों की अब प्रशासनिक तौर पर ब्रांडिंग शुरू की गई है। रीवा को टूरिस्ट सर्किट के बड़े केंद्र के रूप में स्थापित करने की तैयारी है। यहां पर वाराणसी, प्रयागराज, खजुराहो, जबलपुर, चित्रकूट, मैहर, संजय टाइगर रिजर्व, बांधवगढ़ आदि स्थानों पर आने वाले पर्यटकों को आकर्षित किया जाएगा। इसके लिए स्थानीय स्तर पर आवागमन और ठहराव की व्यवस्था भी की जाएगी। बाहर से आने वाले पर्यटक यदि इस क्षेत्र में आते हैं तो रीवा में ठहरकर आसपास के प्रमुख स्थलों तक तीन से चार घंटे के बीच ही पहुंच सकते हैं।

जिले के देउर कोठार में सम्राट अशोक के शांति संदेशों के स्थापित स्तंभ हैं। रीवा-प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग-30 पर मनगवां, गंगेव, गढ़ से आगे बढ़ते हुए कटरा के समीप स्थित देउर कोठार गांव में बौद्ध स्तूप हैं। रीवा से 65 किलोमीटर दूर स्थित यह स्थल बौद्ध अनुयायियों के साथ ही ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थलों का भ्रमण करने वाले पर्यटकों के लिए प्रमुख केंद्र बनाया जा सकता है। यहां तीन बड़े एवं 44 छोटे पाषाण स्तूप हैं। जिसमें पकी ईंटों का भी उपयोग हुआ है। यहां पर उत्खनन से तोरण द्वार, हर्मिका, रेलिंग वेदिका स्तंभ, सूची, प्रदक्षिणा पथ, अलंकृत शिलापट्ट आदि प्राप्त हुए हैं। यहां से चार ब्राह्मी लिपि (अशोक कालीन) अभिलेख भी मिले हैं। वर्तमान में इसे भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित किया जा रहा है। यह स्थान गौतम बुद्ध की नगरी सारनाथ से मिर्जापुर होते हुए चार घंटे के रास्ते पर है। यहां से प्रयागराज डेढ़ घंटे के रास्ते पर है। जिला प्रशासन ने शासन को प्रस्ताव भेजा है। जिसमें कई टूरिस्ट रूट बताए गए हैं। इसमें बताया गया है कि रीवा आने वाले पर्यटक जिले के जिस हिस्से से गुजरेंगे उन्हें पर्यटन स्थल उपलब्ध रहेगा। इन स्थलों को पर्यटन के नक्शे में जोड़ने के लिए **प्रस्ताव भेजा गया** है। इसमें बेला की ओर से रीवा आने वाले पर्यटकों को पुरवा वाटरफाल, चचाई वाटरफाल, टोंस वाटरफाल, घिनौचीधाम, आल्हाघाट, केवटी वाटरफाल और किला, देउर कोठार होते हुए प्रयागराज जाया जा सकता है। साथ ही यदि बनारस की ओर जाना है तो बहुती वाटरफाल, अष्टभुजा मंदिर, देवतालाब शिवमंदिर होते हुए बनारस पहुंचा जा सकता है। दूसरे रूट में मुकुंदपुर में व्हाइट टाइगर सफारी, गोविंदगढ़ में किला, मंदिर और तालाब, गुढ़ में भैरव बाबा मंदिर, सोलर पॉवर प्लांट, मोहनिया ट्विन ट्यूब टनल होते हुए संजय नेशनल पार्क सीधी, परसिली रिसार्ट, बांधवगढ़ नेशनल पार्क के बाद जबलपुर पहुंचा जा सकता है।

रीवा जिले में अब पर्यटकों की संख्या में बढ़ोत्तरी होने की संभावना है। अब तक बाहर से आने वाले पर्यटक जिले के प्रमुख स्थलों तक इसलिए नहीं पहुंच पाते थे क्योंकि सड़कों की स्थिति ठीक नहीं थी। अब जिले में नेशनल हाईवे की संख्या लगातार बढ़ रही है, साथ ही सड़कों का जाल बिछता जा रहा है। हवाई पट्टी को हवाई अड्डे के रूप में विकसित करने का कार्य भी प्रारंभ हो गया है। आने वाले समय में जिले के हर हिस्से में लोग सहजता से पहुंच सकेंगे। रीवा जिले में पहली बार बड़े पर्यटन स्थलों की तर्ज होम स्टे की व्यवस्था की जा रही है। इसके लिए कुछ क्षेत्र चिन्हित किए गए हैं। वहां के लोगों को तैयार किया जा रहा है कि जिनके पास ऐसे मकान हैं कि वह कुछ दिनों के लिए किराए पर दे सकते हैं। लोगों को प्रशिक्षित किया जाएगा। रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया भी इसके लिए होगी। संबंधित लोगों का पूरा डाटा प्रशासन के पास रहेगा। इसके लिए जवा जनपद के पहाड़ी क्षेत्र के कुछ गांवों को चिन्हित किया गया है। साथ ही त्योंथर के पास के कई गांव हैं। देउर कोठार में घूमा, कटरा के पास कुछ गांवों को चिन्हित किया जा रहा है।

● **लोकेंद्र शर्मा**

पर्यटन के साथ रोजगार भी बढ़ेगा

रीवा के जिला प्रशासन ने पर्यटन को रोजगार से जोड़ने के लिए आइए रीवा नाम से एक अभियान की शुरुआत की है। इससे न केवल जिले के पर्यटन स्थलों की ब्रांडिंग की जा रही है बल्कि इंवेस्टमेंट पैटर्न पर इसे आगे बढ़ाया जा रहा है। आइए रीवा के तहत हाल ही में प्रयागराज में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जहां पर कलेक्टर मनोज पुष्प सहित जिले के कई अधिकारी भी पहुंचे थे और रीवा जिले के धार्मिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक पर्यटन स्थलों की ब्रांडिंग की थी। साथ ही इंवेस्टर्स से मिलकर जिले में उद्योग स्थापित करने के लिए आमंत्रित भी किया है। जिस पर 250 करोड़ रुपए से अधिक के निवेश की सहमति भी हो चुकी है। इसमें खासतौर पर उन्हीं क्षेत्रों में निवेश कराया जाएगा जहां पर्यटन की संभावनाएं अधिक हैं। इसलिए पर्यटन स्थलों में सुविधाओं में वृद्धि के साथ ही रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। स्वसहायता समूहों को पर्यटन स्थलों पर रखरखाव और व्यापारिक संचालन की अनुमति दी जाएगी। इससे स्थानीय कला-संस्कृति के साथ ही कलाकृतियों की ब्रांडिंग भी कराई जाएगी। स्थानीय खानपान को भी देश-दुनिया में प्रचारित किया जाएगा। इंवेस्टमेंट पैटर्न से पर्यटन स्थलों के आसपास छोटे उद्योग स्थापित कराए जाएंगे जहां पर्यटकों की जरूरत से जुड़ी सामग्री निर्मित होगी। इससे पर्यटकों की सुविधाएं बढ़ेंगी साथ ही स्थाई तौर पर क्षेत्र के लोगों को रोजगार भी मिलेगा। टूरिस्ट सर्किट बनाए जाने से एक स्थल से दूसरे स्थल तक पहुंचने के लिए आवागमन के क्षेत्र में रोजगार बढ़ेगा। साथ ही रास्ते में अन्य स्वरोजगार के साधन बढ़ेंगे। जिन स्थानों पर पर्यटक पहुंचेंगे वहां भी लोगों को स्वरोजगार स्थापित करने का मौका मिलेगा।

कोलेजियम पर पुनर्विचार का समय

न्यायाधीशों की नियुक्ति को लेकर न्यायपालिका और सरकार में तकरार जारी है। अब खबर है कि सरकार नियुक्ति पर फैसला लेने वाले कॉलेजियम में अपने प्रतिनिधियों को भी शामिल करना चाहती है। इस संबंध में केंद्रीय कानून मंत्री किरेन रिजिजू की तरफ से मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ को पत्र लिखा गया है। हालांकि, इसे लेकर आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा गया है। सूत्रों के अनुसार रिजिजू ने सीजेआई को पत्र लिखा है, जिसमें कॉलेजियम में सरकार के प्रतिनिधियों को भी शामिल करने का सुझाव दिया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने लिखा कि पैनल में पारदर्शिता लाने के लिए सुप्रीम कोर्ट के शीर्ष न्यायाधीशों को सरकार के प्रतिनिधियों को भी हिस्सा बनाना चाहिए। रिजिजू की तरफ से यह भी कहा गया है कि प्रदेश के प्रतिनिधि हाईकोर्ट कॉलेजियम का हिस्सा होना चाहिए।

खास बात है कि कोर्ट और सरकार में इस मुद्दे को लेकर खींचतान जारी है। बीते साल ही रिजिजू ने कॉलेजियम सिस्टम में जवाबदेही और पारदर्शिता की कमी का मुद्दा उठाया था। उधर, कांग्रेस ने सोमवार को केंद्र सरकार पर न्यायपालिका पर कब्जा करने के लिए उसे डराने का आरोप लगाया है। पार्टी की ओर से यह प्रतिक्रिया तब आई है, जब केंद्रीय कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने कथित तौर सीजेआई को पत्र लिखकर सरकार के प्रतिनिधियों को भी सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम में शामिल करने का सुझाव दिया है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने ट्वीट कर कहा कि उपराष्ट्रपति हमला करते हैं। कानून मंत्री हमला करते हैं। यह सब टकराव न्यायपालिका को डराने और उसके बाद पूरी तरह से कब्जा करने की योजना है। कॉलेजियम में सुधार की आवश्यकता है, लेकिन यह सरकार पूरी तरह से कब्जा चाहती है। न्यायपालिका में सुधार इसके लिए (सरकार) जहर की गोली है। उधर, केजरीवाल ने ट्वीट कर कहा कि यह बेहद खतरनाक है। न्यायिक नियुक्तियों में बिल्कुल भी सरकारी हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

हमारे देश की न्यायपालिका विश्व के श्रेष्ठतम न्यायतंत्रों की श्रेणी में उपस्थिति दर्ज करवाती रही है। स्वतंत्रता के उपरांत इसने समय की चुनौतियों से गुजरते हुए अपनी प्रतिष्ठा एवं गरिमा को सुरक्षित रखा है। संविधान ने इसे प्रजातंत्र के प्रहरी की भूमिका में संविधान की रक्षा का दायित्व सौंपा है। सरकार के शेष दोनों अंगों कार्यपालिका एवं विधायिका के कार्य की समीक्षा का दायित्व भी न्यायपालिका के पास है। पूरी व्यवस्था को सुव्यवस्थित एवं सुचारू बनाने के लिए तीनों ही अंगों को परिसीमित करने वाली लक्ष्मण रेखा भी संविधान में निहित है, ताकि सरकार के सभी अंग अपनी-अपनी सीमा में रहते हुए सामंजस्य एवं संतुलन के साथ अपने कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ते रहें।

प्रजातंत्र का अंतिम सत्य एवं शक्ति प्रजा ही

संविधान द्वारा देश की न्यायपालिका को न्यायिक समीक्षा का अधिकार देने के बाद भी संविधान की मूल भावना का एक सत्य यह भी है कि प्रजातंत्र का अंतिम सत्य एवं शक्ति प्रजा ही है। देश की संसद इस प्रजा का सीधा प्रतिनिधित्व करने वाली सर्वोच्च सभा है। यही कारण है कि स्वयं संविधान ने इसमें संशोधन का अधिकार केवल संसद को ही दिया है। जब संसद ने विशेष तौर से सर्वसम्मति से एक कानून बना दिया और वह भी जो सीधे तौर पर न्यायिक नियुक्तियों से संबंधित था, तो यह न्यायिक समीक्षा का सामान्य मामला नहीं था, जिसे लागू करने से पहले ही निरस्त करने की जल्दबाजी से बचा जा सकता था। यदि इसे लागू होने के उपरांत समय की कसौटी पर खरा उतरने का अवसर दिया जाता तो यह स्थापित न्यायिक व्यवस्था एवं गरिमा के हित में होता। इसके क्रियान्वयन उपरांत गुण-दोष के आधार पर यदि यह समीक्षा होती तो जनमानस में इसकी स्वीकार्यता कहीं अधिक होती। इस संबंध में एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि न्यायपालिका की स्वतंत्रता की मुख्य आधार शक्ति जन आस्था होती है। यह आस्था न्यायपालिका के निष्पक्ष एवं पारदर्शी न्याय दर्शन का प्रतिबिंब होती है, जिसके अविरल प्रवाह को बनाए रखना स्वयं न्यायपालिका का मूल दायित्व है।

उच्च पदों पर न्यायिक नियुक्तियों की वर्तमान कोलेजियम प्रणाली पर हाल में छिड़ी बहस ने आम जनमानस का ध्यान न्यायपालिका पर केंद्रित किया है। इसलिए और भी अधिक, क्योंकि कोलेजियम को लेकर विभिन्न नेताओं की ओर से संसद के भीतर और बाहर लगातार वक्तव्य दिए जा रहे हैं। निसंदेह यह एक गंभीर विषय है। मूल रूप से संविधान में न्यायिक नियुक्तियों की एक सुस्पष्ट व्यवस्था उपलब्ध थी, परंतु कुछ परिस्थितिजन्य घटनाओं ने एक ऐसी स्थिति पर पहुंचा दिया, जहां न्यायपालिका ने अपनी न्यायिक समीक्षा की शक्तियों का प्रयोग करते हुए उच्च न्यायिक नियुक्तियों का अधिकार काफी हद तक अपने पास सीमित कर लिया, जिसे कोलेजियम प्रणाली के रूप में जाना जाता है। अब इस कोलेजियम प्रणाली की कुछ सीमाएं रेखांकित होने लगी हैं। यही कारण है कि इस विषय में प्रबुद्ध वर्ग में चिंतन एवं विवेचन का सिलसिला शुरू हुआ है।

केंद्र में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनने के बाद इस प्रणाली का एक पारदर्शी एवं प्रभावी विकल्प संसद के समक्ष लाया गया और न्यायिक नियुक्ति की इस व्यवस्था को देश की सर्वोच्च विधायिका ने सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया, लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान संशोधन विधेयक के जरिए बनाए गए राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग के अमल में आने से पहले ही अपने न्यायिक समीक्षा के अधिकार का प्रयोग करते हुए उसे निरस्त कर दिया। आम जनमानस के मानस पटल पर इस घटनाक्रम ने अनेक प्रश्न छोड़ दिए। सामान्यत: कोई भी व्यक्ति अपने स्वयं के मामले में न्यायाधीश नहीं हो सकता। इसके लिए हमेशा तीसरे पक्ष से निर्णय की अपेक्षा की जाती है। लगभग पूरी न्यायिक व्यवस्था की एक स्थापित मान्यता है कि यदि किसी मामले से किसी न्यायाधीश का कोई संबंध रहा है तो ऐसे मामलों की सुनवाई से वे स्वयं को अलग कर लेते हैं, किंतु इस मामले में न्यायपालिका ने स्वयं से सीधा संबंध रखने वाले मामले का खुद ही निर्णय कर दिया। यहां यह बात भी स्वाभाविक रूप से आती है कि सर्वोच्च न्यायालय से ऊपर देश में कोई न्यायिक व्यवस्था उपलब्ध ही नहीं है तो इसका निर्णय उसे ही करना था। इसके बाद भी इस विषय पर लीक से हटकर विचार किया जा सकता था, जिसमें इसे मात्र न्यायिक निर्णय मानने की मनोस्थिति से बाहर निकलकर विचार हो सकता था।

● **धर्मेंद्र सिंह कथूरिया**

वाइल्ड लाइफ के लिए मप्र स्वर्ग

अगर धरती का स्वर्ग कश्मीर को कहते हैं तो मप्र को वाइल्ड लाइफ का स्वर्ग कहा जा सकता है। इसकी वजह वन्य प्राणी संरक्षण में मप्र का अग्रणी होना है। राज्य के वन विभाग के मुताबिक फिलहाल मप्र को चीता स्टेट, टाइगर स्टेट, घड़ियाल स्टेट, तेंदुआ स्टेट, भेड़िया स्टेट और गिद्ध स्टेट का गौरवशाली ताज मिला हुआ है। तभी तो मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान बेहद गर्व से पर्यटकों को मप्र के शानदार वाइल्ड लाइफ देखने का आमंत्रण देते हैं। सबसे पहले बात करते है श्योपुर जिले के कूनो नेशनल पार्क की जिसे देश में चीता की पुनर्बसाहट के लिए चुना गया।

देश में अपनी तरह के पहले और अनूठे मिशन के तहत पांच मादा और तीन नर चीतों को भारत लाया गया। नामीबिया की राजधानी विंडहोक से कस्टमाइज्ड बोइंग 747-400 एयरक्राफ्ट से इन चीतों को कूनो नेशनल पार्क लाकर छोड़ा गया। इन चीतों को इंटरनेशनल नॉट-फॉर-प्रॉफिट ऑर्गेनाइजेशन चीता कंजर्वेशन फंड, जिसका हेडक्वार्टर नामीबिया है और यह संस्था चीतों के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है ने उपलब्ध कराया। इसी के साथ मप्र को चीता स्टेट का दर्जा भी मिल गया।

वहीं 526 बाघों के साथ मप्र के पास टाइगर स्टेट का दर्जा भी बरकरार है। मप्र में 6 टाइगर रिजर्व हैं। यहां सतपुड़ा, पन्ना, पेंच, कान्हा, बांधवगढ़ और संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व के अलावा 5 नेशनल पार्क और 10 सैंक्चुअरी हैं। टाइगर के लिए मप्र के पर्यावरण को बेहद मुफीद माना जाता है। पर्यटकों के बीच मप्र के टाइगर बेहद लोकप्रिय भी हैं। आम पर्यटकों के साथ तमाम नामी हस्तियां भी टाइगर का दीदार करने के लिए मप्र आते हैं।

इसके साथ ही **कैट प्रजाति** के तेंदुआ को बेहद चालाक जानवर माना जाता है। ऐसे में मप्र में 3,427 तेंदुआ है, जिसकी बदौलत से इसे तेंदुआ स्टेट का दर्जा भी दिया गया है। तेंदुआ लगभग प्रदेश के हर कोने के जंगल में पाया जाता है। इसी तरह भेड़िया संरक्षण के मामले में भी मप्र अव्वल है। राज्य में भेड़िए की आबादी 772 है। इसके बाद राजस्थान का नंबर आता है, जहां संख्या 532 है। कहा जाता है कि मप्र की आबोहवा और यहां का वातावरण भेड़ियों को भी बहुत पसंद है। यही कारण है लगातार इस वन्यजीव का कुनबा बढ़ता जा रहा है और मप्र को भेड़िया स्टेट का दर्जा मिला हुआ है। मुरैना जिले में चंबल नदी पर बने घड़ियाल अभयारण्य को घड़ियालों का स्वर्ग कहा जाता है। यहां पिछली गणना के मुताबिक बढ़कर 2,227 घड़ियाल होने की जानकारी मिली थी। इसके बाद बिहार की गंडक नदी का नंबर आता है, लेकिन वहां भी आंकड़ा तीन अंकों से ज्यादा नहीं है। जलीय जीव के संरक्षण और संवर्धन के कारण ही मप्र को घड़ियाल स्टेट का तमगा मिला है।

मप्र गिद्ध के मामले में भी देश में सबसे आगे है। पिछली गणना के अनुसार मप्र में 9,448 गिद्ध मिले। इसी के चलते इसे गिद्ध स्टेट का दर्जा हासिल है। भोपाल के केरवा इलाके में 2013 में गिद्ध संरक्षण और प्रजनन केंद्र बनाया गया था। इसे बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी और मप्र सरकार द्वारा संयुक्त तौर पर संचालित किया जा रहा है। मप्र में कुल सात प्रजातियों में गिद्ध पाए जाते हैं। इनमें से चार स्थानीय और तीन प्रजाति प्रवासी हैं, जो शीतकाल समाप्त होते ही वापस चली जाती हैं। प्रदेश में सबसे अधिक पन्ना, मंदसौर, नीमच, सतना, छतरपुर, रायसेन, भोपाल, श्योपुर और विदिशा में गिद्ध पाए गए हैं। इन जिलों के जंगलों में गिद्धों की संख्या तेजी से बढ़ी है। अब वन विभाग गिद्धों की संख्या बढ़ाने के लिए हरियाणा के पिंजोर गिद्ध संरक्षण एवं प्रजनन केंद्र से 20 जोड़े गिद्ध ओर लाएगी। हरियाणा वन विभाग और सेंट्रल जू अथॉरिटी से अनुमति का इंतजार किया जा रहा है। 2004 में शुरू हुए इस सेंटर में 400 गिद्ध हैं। केंद्र का इस वित्तीय वर्ष बजट 57.20 लाख रुपए है। अब तक करीब 40 लाख रुपए मिल चुके हैं। विभाग का दावा है कि 2024 तक 10 से 12 गिद्ध जंगल में छोड़ दिए जाएंगे। गिद्ध एक्सपर्ट्स का कहना है कि यहां उन्हें सिर्फ गोट मीट ही दिया जाता था, जबकि **जंगल में वे जंगली** जानवरों का मांस खाते हैं। ऐसे में इनकी डाइट में बदलाव किया जाना चाहिए। जबकि अभी फंड का एक बड़ा हिस्सा इसी पर खर्च होता। अब विभाग इन्हें 2024 में बुंदेलखंड में छोड़ने की योजना बना रहा है। बक्सवा के जंगल में इन्हें छोड़ा जाएगा। पहले इन्हें छिंदवाड़ा के जंगल में छोड़ने की योजना बनाई गई थी, लेकिन वह जगह इनके लिए सुरक्षित नहीं थी। दमोह, सागर, टीकमगढ़, पन्ना और छतरपुर वाले क्षेत्र को ज्यादा सुरक्षित पाया गया। 2018 के एक सर्वे के अनुसार यहां करीब 1800 गिद्ध थे।

● **श्याम सिंह सिकरवार**

गिद्ध प्रजनन के नाम पर खर्च किए 3 करोड़

वन विभाग की शुरुआती योजना 2019 में गिद्ध को छोड़ने की थी, लेकिन जब सफलता नहीं मिल पाई तो इसे 2024 तक आगे बढ़ा दिया गया। यानी करोड़ों रुपए खर्च करने के बाद भी विभाग अब तक एक भी गिद्ध को आजाद नहीं कर पाया, जबकि गिद्ध संरक्षण एवं प्रजनन केंद्रों का उद्देश्य न केवल गिद्धों की देखभाल व उनका संरक्षण करना है बल्कि उन्हें जंगली क्षेत्रों में छोड़ना भी है। वन विभाग ने 2014 में केरवा में गिद्ध प्रजनन केंद्र शुरू किया था। तामिया से 6 गिद्ध लाए गए। इसी साल कुल 21 गिद्ध आए। इसके बाद 2016 में 10 और 19 गिद्ध यहां लाए गए। यहां 19 व्हाइट-बैक्ड और 41 लॉन्ग बिल्ड लाए गए। अधिकारियों के अनुसार जब ये गिद्ध यहां आए थे, इनकी उम्र 2 साल से कम थी। इनके 21 अंडों में से 10 से ही बच्चे जन्म ले पाए। अधिकारियों का कहना है कि 11 अंडे सक्सेस नहीं हो पाए। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के रोहन श्रृंगारपुरे के अनुसार गिद्ध प्रजनन केंद्र में पिछले साल 6 बच्चे हुए तो इस साल अब तक 12 अंडे दिए। इनका प्रजनन अक्टूबर से मई तक होता है। इसलिए इनकी संख्या ओर बढ़ सकती है। गिद्ध साल में एक ही अंडा देता है। 55 दिन में बच्चा अंडे से बाहर आता है। अब इनकी संख्या बढ़ाने के लिए इंक्यूबेशन सेंटर शुरू किया गया है। यहां आर्टिफिशियल तरीके से अंडों को सेने का काम किया जाएगा। इसकी टेस्टिंग भी हो चुकी है।

बुंदेलखंड में बढ़ेगा टूरिज्म

विंध्य प्रदेश का हिस्सा रहे बुंदेलखंड और बघेलखंड के जिलों के बीच बेहतर सड़क मार्ग की आवागमन सुविधा होने के साथ ही हवाई सेवाओं का भी विस्तार हो रहा है। अब बुंदेलखंड और बघेलखंड में पर्यटन विकास के लिए कॉरिडोर विकसित करने की मांग भी जोर पकड़ने लगी है। विशेषज्ञ इसके विकास की संभावनाएं भी देख रहे हैं। एक सप्ताह के विशेष पर्यटन पैकेज के तहत पर्यटन स्थलों को आपस में जोड़ने की मांग की जा रही है।

बुंदेलखंड और बघेलखंड के जिलों में पर्यटन का केंद्र खजुराहो है। अभी पर्यटन सर्किट का विकास नहीं होने से पर्यटक अपने मनपसंद क्षेत्र के एक-दो स्थलों को देखकर ही वापस लौट जाते हैं। ऐतिहासिक पर्यटन में रूचि रखने वाले पर्यटक खजुराहो के मंदिर देखते हैं लेकिन इसके बाद उन्हें पता नहीं होता है कि और क्या देखा जा सकता है। जबकि पन्ना और सीधी में गुप्त काल 5वीं से 5वीं सदी तक के मंदिर, गुफाएं हैं। इसी प्रकार से धार्मिक पर्यटन में रूचि रखने वाले लोग ओरछा में रामराजा सरकार के दर्शन कर लेते हैं लेकिन वे चित्रकूट, मैहर, पन्ना के मंदिर नहीं देख पाते।

श्रीराम पथगमन मार्ग के स्थलों को भी नहीं देख पाते हैं। इसी तरह वाइल्ड लाइफ में रूचि रखने वाले लोग पन्ना टाइगर रिजर्व का भ्रमण कर बाघ तो देख लेते हैं, लेकिन मुकुंदपुर में सफेद बाघ और संजय टाइगर रिजर्व देखने से चूक जाते हैं। झांसी का किला तो लोग घूम लेते हैं लेकिन कालिंजर, अजयगढ़, के किले नहीं देख पाते। इसी को देखते हुए अब पर्यटन पैकेज की मांग की जा रही है, जिससे आने वाले पर्यटक अपने रूचि के अनुसार एकबार के खर्च में ही कई क्षेत्रों का भ्रमण और अध्ययन कर सकें। अभी पर्यटन विकास के लिए पुरातत्व एवं पर्यटन परिषद, इको पर्यटन बोर्ड, एमपी टूरिज्म सहित कई संस्थाएं अलग-अलग काम कर रही हैं। जरूरत इनको एक करके विकास करने की है। सस्टेनेबल टूरिज्म के विकास की दरकार है। हीरा खनन, उसकी नीलामी प्रक्रिया, कटिंग, पॉलिसिंग और ज्वेलरी मेकिंग का अपना आकर्षण है। हीरा खदानों को भला कौन नहीं देखना चाहेगा। इस दिशा में काम करने की जरूरत है।

वहीं उप्र के जनपद बांदा में प्रदेश सरकार द्वारा बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे बनाने के बाद, अब इसके बगल से इंडस्ट्रियल कॉरिडोर बनाने के लिए किसानों की जमीन अधिग्रहित की जा रही है। जिसका किसानों ने कड़ा विरोध करते हुए कहा है कि अगर हमारी एक्सप्रेस-वे से लगी हुई जमीन अधिग्रहित की गई तो हम सब भूमिहीन हो जाएंगे और परंपरागत पेशे से कटकर तबाह हो जाएंगे। किसानों के विरोध के चलते जिला अधिकारी ने इस संबंध में एक समिति का गठन कर दिया है। इस संबंध में प्रगतिशील किसान प्रेम सिंह ने बताया कि प्रस्तावित इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के लिए बिसंडा ग्रामीण में बिसंडा अतर्रा मार्ग से लगी हुई पश्चिम एवं बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के उत्तर दिशा की ओर स्थित जमीन को प्रस्तावित किया गया है। जिसका रकबा 100 हेक्टेयर बताया जा रहा है। उक्त कृषि भूमि का एक बड़ा हिस्सा बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे में पहले ही अधिग्रहित किया जा चुका है। शेष कृषि भूमि से ही किसानों का जीविकोपार्जन हो रहा है। जिस जमीन को अधिग्रहित किया जा रहा है वह सर्वाधिक उपजाऊ इलाका है। जहां आमतौर पर तीन फसलें ली जाती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इस क्षेत्र का बाजार मूल्य मूल्यांकित सर्किल दर से कई गुना अधिक है।

इस वजह से सर्किल दर पर मुआवजा के निर्धारण में किसानों को भारी नुकसान होगा। जनपद में वर्तमान समय लागू सर्किल रेट 2017-18 से नहीं बढ़ाया गया है। जबकि तब से अभी तक बाजार मूल्य कई गुना बढ़ चुका है। यूपीडा द्वारा क्रय की जाने वाली भूमि में 2017-18 के सर्किल रेट के आधार पर ही सौदा होगा। जो प्रभावित किसानों के पुनर्वास पर कुठाराघात होगा और उनकी संपत्तियां तबाह हो जाएंगी। किसान प्रगतिशील किसान प्रेम सिंह का कहना है कि बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के साथ बिसंडा से पश्चिम की ओर कई गांवों की ऐसी कृषि भूमि भी है जो अपेक्षाकृत कम उपजाऊ, एक फसली, बंजर भूमि है। उन क्षेत्रों में इस प्रोजेक्ट को चिन्हित किए जाने से खाद्यान्न उत्पादन में कम से कम नुकसान होगा। प्रशासन से मांग की गई है कि बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के 5 किलोमीटर इधर और 5 किलोमीटर उधर प्रस्तावित इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के लिए जमीन अधिग्रहित की जा सकती है।

उप्र के लोगों के लिए अच्छी खबर है। झांसी और चित्रकूट शहर भी बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे से सीधे जुड़ेंगे। इसके लिए दो नए लिंक एक्सप्रेस-वे के औचित्य के लिए जल्द अध्ययन शुरू किया जाएगा। उप्र औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीडा) ने प्री फिजिबिलिटी रिपोर्ट (औचित्य के अध्ययन) के लिए टेंडर आमंत्रित किए हैं। इन दोनों परियोजनाओं के धरातल पर उतरने पर डिफेंस कॉरिडोर का झांसी और चित्रकूट भी बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे से जुड़ जाएगा, जो कि औद्योगिक निवेश के लिहाज से काफी अच्छा होगा। बता दें कि मौजूदा समय में बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे कुल 296.07 किमी लंबा है। यह चित्रकूट में भरतकूप से शुरू होता है। बांदा, हमीरपुर, जालौन, औरैया और इटावा से निकलते हुए आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे में जुड़ जाता है। इससे बुंदेलखंड क्षेत्र सीधे राजधानी दिल्ली से कनेक्ट है। लेकिन, अभी तक झांसी और चित्रकूट बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे से नहीं जुड़ पाए हैं।

● **सिद्धार्थ पांडे**

एजेंसियां कर रहीं अलग-अलग काम

द लास्ट वाइल्डरनेश फाउंडेशन के फील्ड को-ऑर्डिनेटर इंद्रभान सिंह बुंदेला का कहना है कि पन्ना, कलिंजर, खजुराहो, चित्रकूट एक पर्यटन सर्किट में आते हैं। इन्हें जोड़ने और विकास के लिए काम किए जाने की जरूरत है। पर्यटन विकास की दिशा में अभी कई एजेंसियां अलग-अलग काम कर रही हैं। इनका टास्क फोर्स गठित कर विकास किए जाने की जरूरत है। एडवेंचर टूरिज्म और वाटर स्पोर्ट्स की बाणसागर संभावनाएं भी हैं। जगह-जगह सूचना केंद्र खोलकर पर्यटकों को आसान परिवहन सुविधा उपलब्ध कराए जाने की जरूरत है। नोडल ऑफिसर जिला पुरातत्व एवं पर्यटन परिषद के अशोक चतुर्वेदी कहते हैं कि पन्ना के पर्यटन स्थलों के विकास के लिए कार्ययोजना बनाकर भेजी गई थी। इसमें पर्यटन स्थलों को विकसित कर वहां पर्यटकों को मूलभूत सुविधाएं दिलाने का प्रयास था। अभी तक इस कार्ययोजना को मंजूरी नहीं मिल पाई है।

वर्ष 2023 आत्मनिर्भर मप्र के लिए मील का पत्थर साबित होने वाला है। इस साल में पहले प्रवासी भारतीय सम्मेलन, फिर ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट और अब खेलो इंडिया यूथ गेम्स से मप्र की पहचान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूत हुई है। खेलो इंडिया यूथ गेम्स से तो मप्र खेलों की दुनिया में छा गया है। इस आयोजन के लिए प्रदेश के 8 शहरों में ओलंपिक की तर्ज पर सारे इंतजाम किए गए हैं। इस पांचवे खेलो इंडिया यूथ गेम्स के आयोजन से मप्र के युवाओं को खेलों की दुनिया में नई उड़ान मिलने वाली है।

● राजेंद्र आगाल

हिंदुस्तान के दिल मप्र की मेजबानी में खेलो इंडिया यूथ गेम्स का शानदार आगाज 30 जनवरी को हो गया है। यह केवल एक खेल का आयोजन भर नहीं है, बल्कि इस आयोजन में मप्र की क्षमताओं का आंकलन भी होगा। इसलिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस आयोजन को ऐतिहासिक बनाने के लिए कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। खेल मैदान को ओलंपिक के स्टेंडर्ड का बनाने के साथ ही खिलाड़ियों, कोच और स्टाफ के रहने और खाने की भी उत्तम व्यवस्था की गई है। मप्र में आयोजित हो रहे इस आयोजन पर केवल भारत की ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व की नजर है। दरअसल, इस आयोजन के बाद भारत बड़े आयोजनों के लिए भी दावेदारी कर सकता है। इसलिए केंद्र और मप्र सरकार ने मिलकर पांचवे खेलो इंडिया यूथ गेम्स को ऐतिहासिक बनाने की कोशिश की है। मप्र के 8 शहरों में की गई तैयारियों को हर कोई सराह रहा है।

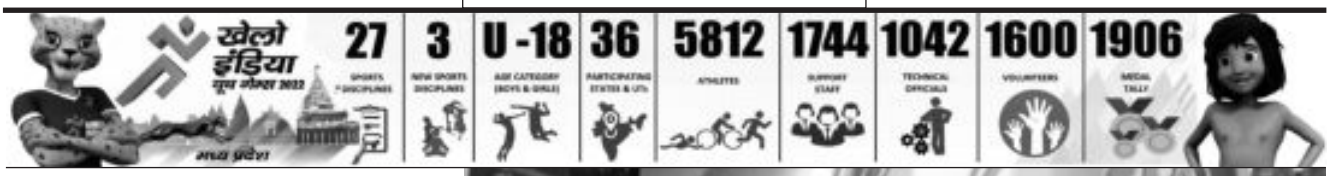

भोपाल के तात्या टोपे नगर स्टेडियम में 30 जनवरी को केंद्रीय खेल और युवा मामलों के मंत्री अनुराग ठाकुर, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय खेल राज्य मंत्री निशीत प्रमाणिक, प्रदेश की खेल एवं युवा कल्याण मंत्री यशोधरा राजे सिंधिया, अरूणाचल प्रदेश के खेल मंत्री मामा नटुंग, गृहमंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा, सांसद वीडी शर्मा, महापौर मालती राय की उपस्थिति में खेल महाकुंभ का रंगारंग शुभारंभ हुआ।

पहली बार मप्र में होने वाले खेलो इंडिया यूथ गेम्स के उद्घाटन समारोह की भव्य तैयारी की गई थी। उद्घाटन समारोह में प्रख्यात टीवी स्टार जय भानुशाली ने एंकरिंग की। वहीं समारोह में मशहूर गायक शान, जिन्होंने खेलो इंडिया यूथ गेम्स के थीम सॉन्ग को आवाज दी है, ने अपनी प्रस्तुति दी। गायिका नीति मोहन ने नर्मदा अष्टक की प्रस्तुति दी। दक्षिण भारत के प्रसिद्ध ड्रम्स शिवामणि और ग्रुप द्वारा एक भारत-श्रेष्ठ भारत की प्रस्तुति 100 लोक कलाकारों के दल द्वारा दी गई। इसके अतिरिक्त अभिलिप्सा पांडा द्वारा हर हर शंभु और नटराज डांस ग्रुप की प्रस्तुति, प्रिंस डांस ग्रुप द्वारा जी-20 की वसुधैव कुटुम्बकम पर शानदार डांस प्रस्तुति दी गई। वहीं खेल प्रतिस्पर्धाओं का भी आयोजन शुरू हो गया है।

10 हजार से अधिक खिलाड़ी लेंगे भाग

खेलो इंडिया यूथ गेम्स का 5वां संस्करण 30 जनवरी से 11 फरवरी तक मप्र के 8 शहर भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर, जबलपुर, मंडला, बालाघाट और खरगोन (महेश्वर) में होगा। एक गेम (साइकिलिंग) दिल्ली में होगा। पहली बार वाटर स्पोर्ट्स अर्थात कयाकिंग कैनोइंग, कैनो सलालम और तलवारबाजी खेलो इंडिया गेम्स के इस संस्करण का हिस्सा होंगे। तेरह दिन तक 27 खेल 9 शहरों के 23 गेम वेन्यू में होंगे। लगभग 6 हजार खिलाड़ी, 303 अंतरराष्ट्रीय और 1089 राष्ट्रीय ऑफिशियल्स इन गेम्स का हिस्सा होंगे। खेलो इंडिया के लिए लगभग 2 हजार वॉलंटियर अलग-अलग गेम वेन्यू में तैनात रहेंगे। देशभर से आए 10,000 से भी ज्यादा एथलीट और अधिकारी हिस्सा लेंगे और कुल 27 खेल के मुकाबले होंगे। खेलो इंडिया के इतिहास में पहली बार वॉटर स्पोर्ट्स को भी शामिल किया जा रहा है। खेलो इंडिया युवा खेल 2022 के शुभंकर 'आशा' और 'मोगली', इसकी स्मार्ट मशाल 'अमरकंटक' और थीम गीत मप्र के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और केंद्रीय खेल राज्यमंत्री निशीत प्रमाणिक ने लॉन्च किए थे। मशाल का नाम नर्मदा नदी के उद्गम स्थल अमरकंटक के नाम पर रखा गया है जो प्रदेश की जीवनदायिनी नदी भी है। मशाल पर महाकालेश्वर मंदिर, दौड़ता हुआ चीता और ऊपर कमल उकेरा गया है। थीम गीत को मशहूर गायक शान ने आवाज दी है।

खेल मंत्री यशोधरा राजे की दिखी स्पोर्ट्स मेन स्प्रिट

मप्र में आयोजित हो रहे खेलो इंडिया यूथ गेम्स के पीछे प्रदेश की खेल मंत्री यशोधरा राजे सिंधिया का बड़ा योगदान है। आयोजन की तैयारियों से लेकर उसकी शुरुआत होने तक वे पूरी तरह स्पोर्ट्स मेन की तरह लगी रहीं। उनकी स्पोर्ट्स मेन स्प्रिट शुभारंभ अवसर पर भी देखने को मिली। सिंधिया ने कहा कि हम सभी जानते हैं कि भोपाल को झीलों की नगरी के रूप में जाना जाता है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में मप्र भारत के स्पोर्ट्स हब के रूप में उभर रहा है। हमारे पास बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर है। यहां बेहतरीन कयाकिंग और कैनोइंग हो सकती है। हमारे पास सर्वोत्तम प्रशिक्षण सुविधाएं, अंतर्राष्ट्रीय कोच हैं और सबसे बढ़कर हम खेलो इंडिया की मेजबानी कर रहे हैं। इसलिए इसका हिस्सा बनना हमारे लिए गर्व की बात है। मंत्री सिंधिया ने कहा कि प्रदेश में वॉटर स्पोर्ट्स को लेकर लंबे समय से काफी काम हुआ है और इसी कारण इन इवेंट्स को लेकर उनके साथ राज्यभर के खिलाड़ियों में अच्छा प्रदर्शन करने का यकीन और उत्साह है। उन्होंने कहा कि हमारे वॉटर स्पोर्ट्स अकादमी के खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में नाम कमाया है। हम भारत में जूनियर्स में कयाकिंग, कैनोइंग और रोइंग के लिए अग्रणी टीम हैं। खेल मंत्री सिंधिया ने कहा कि मप्र की मेजबानी में हो रहे इंडिया यूथ गेम्स हमारे लिए गर्व की बात हैं।

अंतरराष्ट्रीय मंच पर खेल में भागीदारी बढ़ाने के लिए बच्चों को स्कूल स्तर से ही तैयार करने में खेलो इंडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 2018 में खेलो इंडिया स्कूल गेम्स नाम से नई दिल्ली में पहली बार शुरुआत हुई। जिसमें खिलाड़ियों का जबरदस्त उत्साह मिला। इसके बाद स्कूल गेम्स का नाम बदलकर 2019 से खेलो इंडिया यूथ गेम्स कर दिया गया। यूथ गेम्स दो श्रेणियों में आयोजित किया जाता है, जिनमें अंडर-17 वर्ष स्कूली छात्र और अंडर-21 कॉलेज छात्र हिस्सा लेते हैं। खेलो इंडिया विशेष रूप से भारतीय खेलों के लिए एक गेम चेंजर है। इसमें महिलाओं, बच्चों और ग्रामीण क्षेत्रों के समूहों को भारत की खेल संस्कृति का हिस्सा बनाना है। व्यक्तिगत और स्थानीय क्षेत्र के विकास के साथ **राष्ट्रीय विकास** के लिए खेल को मुख्यधारा में लाने के लिए इस योजना में समयानुसार बदलाव किया जाता रहा है।

खेल संस्कृति को दे रहा बढ़ावा

'खेलो इंडिया' योजना युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की प्रमुख केंद्रीय योजना है। इसका उद्देश्य देश में खेल संस्कृति को बढ़ावा देना और खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त करना है। इस प्रकार जनता को खेलों की शक्ति से अवगत कराकर

खेलो इंडिया यूथ गेम्स का यह पांचवा संस्करण

खेलो इंडिया गेम्स का पहला संस्करण साल 2018 में 31 जनवरी को नई दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में किया गया था। खेलो इंडिया यूथ गेम्स का दूसरा संस्करण पुणे में आयोजित किया गया था। महाराष्ट्र 228 पदक के साथ पदक तालिका में शीर्ष पर रहा, जबकि हरियाणा और दिल्ली ने दूसरे और तीसरे स्थान पर कब्जा किया। महाराष्ट्र ने 85 गोल्ड मेडल के साथ खेलो इंडिया 2019 की जनरल चैंपियनशिप हासिल की। खेलो इंडिया यूथ गेम्स का तीसरा संस्करण गुवाहाटी में 18-30 जनवरी तक 2020 में आयोजित किया गया। इस बार खेलों का आयोजन भारतीय स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, ओलंपिक एसोसिएशन और असम को साझेदारी में मेजबान राज्य के रूप में किया गया। इस कार्यक्रम का चौथा संस्करण हरियाणा में हुआ। खेल इंडिया यूथ गेम्स में पदक तालिका में हरियाणा नंबर-1 पर रहा, जबकि महाराष्ट्र दूसरे स्थान पर रहा। मप्र के 8 शहरों में 30 जनवरी से खेलो इंडिया यूथ गेम्स में अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए युवा कमर कसे हुए हैं। प्रदेश के 8 शहरों में हो रहा खेलो इंडिया यूथ गेम्स कई मायनों में खास है। इस आयोजन में पहली बार 27 खेल शामिल किए गए हैं और खास बात यह है कि इनमें से कई खेल पहली बार खेलो इंडिया यूथ गेम्स की शोभा बढ़ाएंगे। इस साल वॉटर स्पोर्ट्स खेलो इंडिया यूथ गेम्स में डेब्यू कर रहा है। मप्र के दो आयोजन स्थलों-राजधानी भोपाल और महेश्वर (खरगोन) इनकी मेजबानी कर रहे हैं। भोपाल स्थित मप्र वॉटर स्पोर्ट्स अकादमी में कयाकिंग, कैनोइंग और रोइंग स्पर्धाएं होंगी, जबकि महेश्वर में वॉटर सलालम का आयोजन होगा।

उचित संसाधन की उपलब्धता से उसके समुचित उपयोग करने का अवसर देना है। खेलो इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत खेल के मैदान का विकास, सामुदायिक प्रशिक्षण का विकास, सामुदायिक खेलों को बढ़ावा देना, प्रतिभाओं की पहचान करना और उनका विकास करना, खेल अकादमियों को सहायता देना, स्कूली बच्चों के लिए राष्ट्रीय शारीरिक फिटनेस अभियान और शांति एवं विकास के लिए खेल का कार्यान्वयन किया जाना शामिल है। सरकार के प्रयास से प्रतिभावान खिलाड़ियों को अपनी क्षमता के प्रदर्शन का अवसर मिल रहा है। खेलो इंडिया योजना मुख्य रूप से खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर देने के लिए राष्ट्रीय स्तर का मंच बनाकर खिलाड़ियों को तैयार करने के साथ-साथ वित्तीय सहायता भी उपलब्ध कर रही है। देश के खिलाड़ियों को खेलो इंडिया स्कूल एंड यूथ गेम्स, खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स और खेलो इंडिया विंटर गेम्स का आयोजन करके प्रतिभाशाली युवा खिलाड़ियों को खेलो इंडिया छात्रवृत्ति जीतने और अत्याधुनिक खेल परिसरों में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षकों द्वारा उच्च स्तरीय प्रतिस्पर्धा के लिए प्रशिक्षण पाने का अवसर दिया गया है। आधुनिक तकनीक का तालमेल आज भारत में एक समृद्ध खेल संस्कृति का निर्माण कर रहा है। सरकार खेल के क्षेत्र में प्रतिभाओं की पहचान, चयन और प्रशिक्षण से लेकर खिलाड़ियों की खेल संबंधी जरूरतों तक देश के प्रतिभाशाली युवाओं के साथ हर कदम पर साथ है। इसका उदाहरण हाल ही में संपन्न हुए चौथे खेलो इंडिया यूथ गेम्स में देखने को मिला। चौथे खेलो इंडिया यूथ गेम्स में देशभर से 8,500 खिलाड़ियों का अब तक का सबसे बड़ा दल शामिल हुआ। देश

कहां होगा कौन-सा खेल

मप्र में खेलो इंडिया यूथ गेम्स के चौथे संस्करण का आयोजन 30 जनवरी से 11 फरवरी तक होगा। इसमें देशभर के 6 हजार से ज्यादा खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। मप्र के 8 शहरों के अलावा दिल्ली में इन इवेंट होंगे। 30 जनवरी को भोपाल के तात्या टोपे नगर स्टेडियम में उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया, वहीं समापन समारोह 11 फरवरी को भोपाल में ही होगा। मप्र के भोपाल, बालाघाट, ग्वालियर, इंदौर, जबलपुर, महेश्वर, मंडला और उज्जैन में खेलों के आयोजन होंगे। खेलो इंडिया यूथ गेम्स में कुल 27 अलग-अलग खेलों में खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। इनमें से एक खेल ट्रैक-साइक्लिंग का आयोजन दिल्ली में होगा। भोपाल को सबसे ज्यादा 9 खेलों की मेजबानी मिली है। दिल्ली के अलावा महेश्वर और बालाघाट ही दो ऐसे जगह हैं जिन्हें सिर्फ एक-एक खेलों की मेजबानी मिली है। खेलो इंडिया यूथ गेम्स में शामिल 11 खेलों का प्रसारण स्टार स्पोर्ट्स पर लाइव किया जा रहा है। एथलेटिक्स, कुश्ती, बॉक्सिंग, शूटिंग, वॉलीबॉल, वेटलिफ्टिंग, टेबल टेनिस, टेनिस, कबड्डी, योगासन और मलखंब का प्रसारण किया जा रहा है। भोपाल में एथलेटिक्स, कुश्ती, बॉक्सिंग, शूटिंग, कायाकिंग-केनोयिंग, रोइंग, वॉलीबॉल, जूडो, स्वीमिंग, बालाघाट में फुटबॉल (महिला), ग्वालियर में बैडमिंटन, हॉकी, जिम्नास्टिक, कलारीपयट्टू, इंदौर में बास्केटबॉल, वेटलिफ्टिंग, टेबल टेनिस, कबड्डी, फुटबॉल (पुरुष), टेनिस, जबलपुर में तीरंदाजी, खो-खो, तलवारबाजी, रोड-साइक्लिंग, मंडला में थांग-ता, गतका, उज्जैन में योगासन, मलखंब, महेश्वर में सलालम, दिल्ली में ट्रैक-साइक्लिंग आदि का आयोजन किया जाना है। भोपाल के शौर्य स्मारक में खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2023 की मशाल, थीम सांग और मस्कट का अनावरण किया गया था। मप्र के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रिमोट का बटन दबाकर यूथ गेम्स के थीम सांग का अनावरण किया और अमरकंटक मशाल को रवाना किया। तब शिवराज सिंह चौहान ने कहा था कि जनवरी मप्र के लिए स्वर्णिम महीना है। इस महीने हो रहे कई आयोजनों से मप्र उत्साह और उमंग से भरा है। यूथ गेम्स के आयोजन से प्रदेश में खेलमय वातावरण है। मैं खिलाड़ियों को कहता हूं कि खूब पढ़ो और खेलो भी। हम खेलों के लिए कोई कमी नहीं छोड़ेंगे।

के कोने-कोने से युवा खिलाड़ियों ने खेलो इंडिया के इस संस्करण में भाग लिया और एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना को मजबूत किया।

पारंपरिक खेल भी हो रहे शामिल

आधुनिक खेलों के साथ ही सरकार देश के पारंपरिक खेलों के संरक्षण पर भी जोर दे रही है। इसी विजन के तहत पारंपरिक खेल-गतका, कलारीपयट्टू, थांग-ता, मलखंब और योगासन को खेलो इंडिया यूथ गेम्स में शामिल किया गया है। खेल मंत्रालय के प्रयास के कारण पारंपरिक खेल से एक बार फिर देश के युवा जुड़ने लगे हैं। इन खेलों में गतका, थांग-ता, योगासन, कलारीपयट्टू और मलखंब शामिल हैं। इनमें गतका, कलारीपयट्टू और थांग-ता पारंपरिक मार्शल आर्ट्स हैं, जबकि मलखंब और योग फिटनेस से जुड़े हुए खेल हैं। खेलो इंडिया यूथ गेम्स के तहत चयनित कई खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मेडल भी जीत चुके हैं, तो कई ओलंपिक में भी हिस्सा ले चुके हैं। इनमें वेटलिफ्टर जेरेमी लालरिननुंगा, शूटर सौरभ चौधरी, मनु भाकर, स्वीमर श्रीहरि नटराज, अभिनव शॉ, फिलिप महेश्वरन तबिताजेरेमी लालरिनुगा और स्वदेश मंडल जैसे खिलाड़ी खेलो इंडिया से ही निकले हैं। खेलो इंडिया यूथ गेम्स की शुरुआत वर्ष 2018 में हुई थी। इसकी शुरुआत करने का श्रेय तत्कालीन खेलमंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर को जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन किया जाता है। इसकी शुरुआत खेल संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए की गई है। इसके तहत देशभर में विभिन्न खेलों के प्रति सभी के मन में रूचि जगाने व देश को इस क्षेत्र में आगे बढ़ाने और खेल का महान खेल राष्ट्र बनाने के लिए सरकार द्वारा प्रयास किए जाएंगे। इस स्कीम के तहत सभी चयनित खिलाड़ियों को सालाना 5 लाख रूपए प्रदान किए जाएंगे जिसे वो अपनी तैयारी के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। ताकि वो राष्ट्रीय खेल आयोजनों के लिए तैयार हो सकें और अपना बेहतरीन प्रदर्शन कर सकें।

इस बार मप्र को बेहतर परफॉर्मेंस की आस

खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2022 के मेजबान मप्र पर इस बार सभी की नजरें होंगी। पिछली बार हरियाणा के कुरुक्षेत्र में आयोजित खेलो इंडिया में प्रदेश ने 12 स्वर्ण, 11 रजत और 15 कांस्य पदक के साथ कुल 38 पदक के साथ 8वां स्थान मिला था। इसमें अधिकांश पदक स्पोर्ट्स अकादमी के खिलाड़ियों ने जीते थे। मध्यप्रदेश इस बार खेलो इंडिया के सभी 27 खेल में भागीदारी कर रहा है। सभी खेलों के प्रदेश के 470 सदस्यीय दल में इस बार अकादमी के 146 खिलाड़ी इस बार शामिल हैं। खेलो इंडिया यूथ गेम्स में भोपाल में एथलेटिक्स, कुश्ती, बॉक्सिंग, शूटिंग, कयाकिंग-कैनोइंग, रोइंग, वॉलीबाल, जूडो और तैराकी के मुकाबले होना हैं। शूटिंग और वॉटर स्पोर्ट्स के लिए भोपाल सबसे बेहतर है। इन दोनों खेलों में अकादमी के खिलाड़ी भी लगातार अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से देश और प्रदेश का नाम रौशन कर रहे हैं। इसके अलावा मार्शल आर्ट अकादमी में बॉक्सिंग, फेंसिंग, जूडो में भी बेहतर संभावनाएँ हैं। प्रदेश में लगभग 11 खेल अकादमियाँ संचालित हैं। सभी अकादमियों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सुविधा, अधो-संरचना और खेल संसाधन उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त खिलाड़ियों के लिए डाईटिशियन, न्यूट्रिशनिस्ट, फिजियोथेरेपिस्ट, सायकोलॉजिस्ट और स्पोर्ट्स साइंस के बेहतरीन डॉक्टर्स उपलब्ध हैं। मध्यप्रदेश में खेल विभाग द्वारा प्रतिभावान बच्चों को टेलेंट सर्च के माध्यम से चयन कर अकादमी में शामिल होने का मौका दिया जाता है।

खेलो इंडिया यूथ गेम्स का उद्देश्य

खेलो इंडिया यूथ गेम्स का उद्देश्य देश में युवाओं के बीच खेल की संस्कृति को बनाए रखना है। इसके साथ ही स्कूलों और कॉलेजों में छात्रों के हुनर को और तराशने के उद्देश्य से इस स्कीम की शुरुआत की गई है। इस स्कीम के माध्यम से सभी चयनित छात्रों को प्रोत्साहित करने व उन्हें और काबिल बनाने के लिए सरकार द्वारा वित्त-पोषण भी दिया जाएगा। जिससे वो स्वयं को आने वाली सभी प्रतियोगिता के लिए तैयार कर पाएं। इस स्कीम की सहायता से सभी बच्चे और युवा आने वाले भविष्य में अपना कैरियर भी बना सकेंगे। इससे सभी लोग खेलों के प्रति आकर्षित होंगे और उनकी रूचि बढ़ेगी। इस स्कीम के तहत प्रशिक्षण व अन्य सुविधाओं के साथ विभिन्न खेलों के क्षेत्र में भी विकास कर पाएंगे। इसके अलावा भारत देश भी एक बड़े खेल राष्ट्र के तौर पर उभरेगा। बताया गया है कि भोपाल के टीटी नगर स्टेडियम में एथलेटिक्स के 26 खिलाड़ी मप्र का प्रतिनिधित्व करते हुए 3 से 5 फरवरी तक पदकों के लिए मुकाबला करेंगे। डीएसवाई डब्ल्यू हॉल में 7 से 11 फरवरी तक कुश्ती के मुकाबले होंगे। बॉक्सिंग के मुकाबले 5 दिन तक भोपाल में 31 जनवरी से 4 फरवरी तक होंगे। शूटिंग एकेडमी में 1 से 6 फरवरी तक चलने वाले मुकाबलों में मप्र के 7 खिलाड़ी निशाना साधेंगे। वॉटर स्पोर्ट्स के दो खेलों के मुकाबले भोपाल के बड़े तालाब स्थित वॉटर स्पोर्ट्स एकेडमी में खेले जाएंगे।

इंदौर में खेलो इंडिया के 30 जनवरी को उद्घाटन समारोह के बाद दूसरे दिन 31 जनवरी को इंदौर में ही बास्केटबॉल के मुकाबले खेले गए, जो 4 फरवरी तक आयोजित होंगे। इंदौर के अभय प्रशाल में 30 जनवरी से टेबल टेनिस के मुकाबले शुरू हुए। इंदौरवासी 5 से 9 फरवरी तक कबड्डी के शानदार मुकाबले अभय प्रशाल में देख सकेंगे। इंदौर के एमरॉल्ड हाइट्स इंटरनेशनल स्कूल में एक से 10 फरवरी तक युवा फुटबॉलर्स (पुरुष) को शानदार प्रदर्शन करते हुए देख सकेंगे। खेलो इंडिया यूथ गेम्स के टेनिस के मुकाबले 6 से 10 फरवरी तक इंदौरवासियों का दिल जीतेंगे।

ग्वालियर में मप्र की मेजबानी में होने वाले खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2022 में बैंडमिंटन, हॉकी, जिम्नास्टिक और कलारीपयट्टू के मुकाबले होंगे। उज्जैन में एक से 10 फरवरी तक योग और मलखंब के शानदार मुकाबले होंगे।

माधव सेवा न्यास उज्जैन में 1 से 3 फरवरी तक योगासन और 6 से 10 फरवरी तक मलखंब के 12 खिलाड़ी प्रदर्शन करेंगे। जबलपुर में खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2022 में 30 जनवरी से 10 फरवरी तक खो-खो, तीरंदाजी, फेंसिंग साइकिलिंग (रोड) प्रतियोगिताएं होंगी। मंडला में 2 से 10 फरवरी तक दर्शक खेल थांगता और गटका का मजा ले सकेंगे। बालाघाट में 10 दिन तक महिला युवा फुटबॉलर्स का रंग जमेगा। महेश्वर (खरगोन) में 6 और 7 फरवरी को सहस्त्र धारा में सलालम के मुकाबले खेले जाएंगे। नई दिल्ली के आईजी स्टेडियम में 2 से 4 फरवरी तक साइकिलिंग के मुकाबले होंगे।

शहर से गांव तक प्रचार

मशाल रैली मप्र के 52 जिलों से होकर गुजरी। खेलो इंडिया यूथ गेम्स को इस साल मप्र के 8 शहरों में आयोजित किया जा रहा है। ये मेजबान शहर भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर, मंडला, बालाघाट, खरगोन और जबलपुर हैं। खेलो इंडिया का ये 5वां एडिशन महीने की 30 तारीख से शुरू हुआ। बता दें कि खेलो इंडिया का 2021 संस्करण कोरोना वायरस के चलते स्थगित कर दिया गया था और इसे फिर 2022 में हरियाणा में आयोजित किया गया था।

जिला प्रशासन की ओर से खेलो इंडिया यूथ गेम्स की ब्रांडिंग के लिए शहर के अलावा गांवों में भी प्रचार-प्रसार कराया गया है। अनाउंसमेंट के अलावा बैनर, पोस्टर भी लगवाए गए हैं। जिला प्रशासन के अलावा नगर निगम के अधिकारी भी जिम्मेदारियां निभा रहे हैं। ग्वालियर के महाराज बाड़ा, किला, किला गुरुद्वारा, जयविलास पैलेस, मोहम्मद गौस का मकबरा, सूर्य मंदिर, जलविहार, बैजाताल, कटोरा ताल, चिड़िया घर, बारादरी, इटेलियन गार्डन को सुसज्जित किया जा रहा है। इन स्थलों पर खिलाड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच भ्रमण करेंगे। शहर के रेलवे स्टेशन तथा एयरपोर्ट पर खिलाड़ियों के लिए हेल्प डेस्क स्थापित किए जाने की तैयारी की जा रही है। ग्वालियर में

प्रवेश के दौरान खिलाड़ियों का अभूतपूर्व स्वागत किए जाने के लिए वॉलेंटियर्स प्रशिक्षित किए जा रहे हैं। खिलाड़ी, कोच, रेफरी, एंपायर व टेक्नीशियन के लिए आवास, परिवहन तथा मेडिकल टीम की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिस दिन जिन खिलाड़ियों का विश्राम रहेगा, उस दिन उन्हें प्रशासन की ओर से पर्यटन स्थलों का भ्रमण कराया जाएगा। 1100 खिलाड़ियों को अलग-अलग दिन ग्रुपों में ले जाकर ऐतिहासिक धरोहरों को दिखाया जाएगा। इसके लिए प्रबंध समिति की ओर से शेड्यूल तैयार किया जा रहा है।

इंदौर शहर में खेलो इंडिया गेम्स के लिए आने वाले खिलाड़ियों को इंदौर की पहचान वाली सामग्रियों के साथ गिफ्ट हैंपर दिए जाएंगे। खेलो इंडिया के वातावरण निर्माण के लिए शहर में पोस्टर्स, बेनर्स, सेल्फी पाइंट के साथ स्कूलों में खेलकूद स्पर्धाएं भी आयोजित होंगी। इसके अलावा बाइक, साइकल रैलियां निकाली जाएंगी और मैराथन भी आयोजित की जाएगी। मप्र खेलो इंडिया यूथ गेम्स की मेजबानी करने वाला भारत का पांचवा राज्य है। नई दिल्ली में पहले संस्करण के बाद महाराष्ट्र ने 2019 में इस इवेंट की मेजबानी की थी। जबकि असम ने साल 2020 में और पिछला संस्करण हरियाणा में आयोजित किया गया। इस साल खेलो इंडिया यूथ गेम्स में पहली बार वॉटर स्पोर्ट्स को शामिल किया गया है।

खेलो इंडिया से बच्चों को एक्सपोजर मिलेगा। जो यहां अच्छा परफॉर्म करेंगे, वे नेशनल के लिए दावेदारी कर पाएंगे। इस खेल में जब गांव का खिलाड़ी खेलेगा तो पूरे जिले में उस खेल के प्रति लोगों में दीवानगी बढ़ेगी। जब वो मेडल जीतेगा तो उसके साथी प्रेरित होंगे कि हम भी ये कर सकते हैं। इसका फायदा प्रदेश को मिलेगा। आने वाले समय में कॉम्पीटिशन और तगड़ा होगा। सरकार ने अकादमी स्तर पर अच्छा काम किया है। अब गांवों तक इसे पहुंचाने की जरूरत है। अभी स्कूल-कॉलेज गेम्स को गंभीरता से नहीं लिया जाता है। जब टीचर और कोच बच्चों को बताएंगे कि ये टूर्नामेंट और मेडल भी उतना ही जरूरी है, जितना ओलंपिक में जीता मेडल। इससे खिलाड़ी दोगुनी ऊर्जा से खेलेगा। इसके लिए जरूरी है कि इन खेल मैदान और खिलाड़ियों के ठहरने की जगहों, खान-पान पर खर्चकर उनकी ब्राडिंग कर उन्हें भव्यता दी जाए। बच्चों को भी अपने खेल का खुद आंकलन करना होगा। खिलाड़ियों को तकनीक को शामिल कर खेल को निखारना होगा।

मप्र 470 खिलाड़ियों के साथ 27 खेलों में दिखाएगा अपना जलवा

खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2022 की मेजबानी कर रहे मप्र पर इस बार सभी की नजरें हैं। पिछली बार हरियाणा के कुरुक्षेत्र में हुए खेलो इंडिया गेम्स में मप्र ने 12 स्वर्ण, 11 रजत और 15 कांस्य पदक के साथ कुल 38 पदक लेकर 8वां स्थान प्राप्त किया था, जिसमें अधिकांश पदक अकादमी के खिलाड़ियों ने जीते थे। मप्र इस बार खेलो इंडिया के सभी 27 खेलों में भागीदारी कर रहा है। सभी खेलों के 470 सदस्यीय दल में अकादमी के 146 खिलाड़ी इस बार शामिल हैं। खेलो इंडिया यूथ गेम्स में भोपाल में एथलेटिक्स, कुश्ती, बॉक्सिंग, शूटिंग, क्याकिंग-कैनोइंग, रोइंग, वॉलीबाल, जूडो और तैराकी के मुकाबले होना है। शूटिंग और वॉटर स्पोर्ट्स के लिए भोपाल सबसे बेहतर है। इन दोनों खेलों में अकादमी के खिलाड़ी भी लगातार अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से देश और प्रदेश का नाम रोशन कर रहे हैं। मार्शल आर्ट अकादमी के बॉक्सिंग, फेंसिंग, जूडो के खिलाड़ियों से भी बेहतर संभावनाएं हैं। हर व्यक्ति के जीवन में खेल और स्वस्थता का अमूल्य महत्व है। खेल खेलना टीम भावना पैदा करता है। सामरिक और सोच नेतृत्व कौशल, लक्ष्य निर्धारण और जोखिम लेने का आत्म विश्वास उत्पन्न करता है। एक फिट और स्वस्थ व्यक्ति एक स्वस्थ समाज और शक्तिशाली राष्ट्र निर्माण का नेतृत्व करता है। खेल हमारे देश के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। भारत ने पिछले कुछ वर्षों से खेलों के क्षेत्र में लगातार प्रगति की है। इस ग्लोबल मंच पर इस अपार क्षमता को प्रदर्शित करने की आवश्यकता है। यह वह समय है जब हम युवा प्रतिभाओं को प्रेरित करें और उन्हें शीर्ष स्तर तक ले जाने के लिए उच्चस्तरीय बुनियादी सुविधाएं और प्रशिक्षण उपलब्ध कराएं।

PRISM®
CEMENT

प्रिज़्म® चैम्पियन प्लस

ज़िम्मेदारी मज़बूत और टिकाऊ निर्माण की.

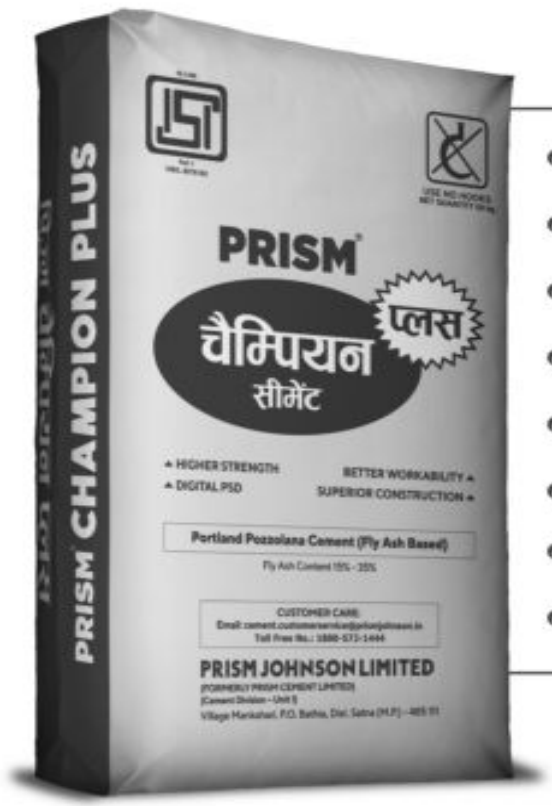

- ज्यादा मज़बूती
- ज्यादा महीन कण
- ज्यादा वर्कबिलिटी
- बेहतरीन निर्माण कार्य
- इको–फ्रेन्डली
- कन्सिसटेंट क्वालिटी
- ज्यादा प्रारम्भिक ताक़त
- ज्यादा बचत

PRISM®
चैम्पियन प्लस
सीमेंट

दूर की सोच®

Toll free: 1800-572-1444 Email: cement.customerservice@prismjohnson.in

चुनावी साल, चुनौतियां बेमिसाल!

2023 को चुनावी साल कहा जा रहा है। इसकी वजह यह है कि इस साल करीब 10 राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। इसलिए राजनीतिक पार्टियों के सामने चुनौतियों का पहाड़ खड़ा है। हर पार्टी इस चुनौती से निपटने में लगी हुई है।

2022 का साल खट्टी-मीठी यादों को समेटे गुजर गया है, 2023 का आगाज हो चुका है। नए साल में आम लोगों के साथ-साथ राजनीतिक पार्टियां भी नए जोश और उत्साह के साथ 2023 की चुनौतियों के साथ दो-दो हाथ करने को तैयार हैं। पॉलिटिकल पंडित 2023 को चुनावी चुनौतियों का साल करार दे रहे हैं, क्योंकि इस साल अलग-अलग कालखंड में 9 राज्यों में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं जबकि 10वें राज्य जम्मू-कश्मीर में भी अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद चुनाव कराए जाने की पूरी-पूरी संभावना बनती दिख रही है। फरवरी-मार्च में पूर्वोत्तर के 3 राज्यों त्रिपुरा, मेघालय और नागालैंड में चुनाव के साथ 2023 के चुनावी कैलेंडर की शुरुआत होने वाली है। अप्रैल-मई में कर्नाटक में विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया पूरी होगी। साल के आखिरी एक-दो महीनों में मप्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़, मिजोरम और तेलंगाना में भी विधानसभा के चुनाव कराए जाने हैं। केंद्र सरकार 2024 लोकसभा चुनावों से पहले केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में भी चुनाव करा लेना चाहती है। ऐसे में माना जा रहा है कि अगर सबकुछ ठीक-ठाक रहा तो जम्मू-कश्मीर में भी इसी साल चुनाव कराए जा सकते हैं। इनके अलावा उप्र में त्रिस्तरीय शहरी निकाय के चुनाव होने वाले हैं। 17 नगर निगमों समेत करीब 800 नगर पालिका और नगर पंचायतों के ये चुनाव भी विधानसभा के मिनी चुनाव माने जाते हैं।

चुनावी राज्यों की बात की जाए तो इनमें राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार है। दोनों ही राज्यों में भाजपा सत्ता में वापसी की कोशिशों में जुटी हुई है। कांग्रेस के सामने राजस्थान में बागियों और कलह से निपटना बड़ी चुनौती है तो वहीं छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के 2 बड़े अधिकारियों पर ईडी की कार्रवाई उनकी सरकार की छवि पर भारी पड़ सकती है। हालांकि, बघेल ईडी की कार्रवाई को राजनीतिक बदले की कार्रवाई करार देते हैं। वहीं, पिछली बार 2018 में चुनाव के बाद मप्र और कर्नाटक में भले ही कांग्रेस की सरकार बनी, लेकिन अब वह सत्ता में नहीं है। इसे भाजपा की जोड़-तोड़ कहिए या कांग्रेस की कलह, लेकिन आज की तारीख में इन दोनों राज्यों में सत्ता पलट चुकी है। अब मप्र और कर्नाटक में भाजपा सत्ता बचाने उतरेगी। तेलंगाना में भी विधानसभा चुनाव होने हैं, तेलंगाना के मुख्यमंत्री और सत्ताधारी पार्टी पहले टीआरएस लेकिन अब बीआरएस के प्रमुख के चंद्रशेखर राव भाजपा से सबसे ज्यादा खतरा महसूस कर रहे हैं। कई बार उन्होंने खुले मंचों से इसका जिक्र भी किया है और शायद इसी खतरे को समझते हुए उन्होंने चुनाव से पहले ही जेडीयू, आरजेडी, समाजवादी पार्टी, कांग्रेस, टीएमसी और लेफ्ट पार्टियों समेत सभी विपक्षी दलों से संपर्क तेज कर दिया है। अभी कुछ महीने पहले ही उन्होंने दिल्ली में तकरीबन सभी बड़ी विपक्षी पार्टियों के नेताओं से मुलाकात की थी। 2014 के बाद से ही ना सिर्फ भाजपा का बल्कि खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विशेष फोकस पूर्वोत्तर के राज्यों पर रहा है। पूर्वोत्तर के 7 में से 4 राज्यों में भाजपा अपने दमखम पर सरकार चला रही है। जबकि 2 राज्य में गठबंधन सरकार की पार्टनर है। असम, मणिपुर, त्रिपुरा और अरुणाचल प्रदेश में भाजपा की सरकार है। वहीं मेघालय और नागालैंड में गठबंधन सरकार में भाजपा शामिल है। भाजपा चाहती है कि वो आने वाले चुनावों में मेघालय और नागालैंड में अपने दम पर सरकार बनाने में कामयाब हो।

पूर्वोत्तर के 4 राज्यों त्रिपुरा, मेघालय, नागालैंड और मिजोरम में भी इसी साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। भले ही ये चारों राज्य बाकी राज्यों के मुकाबले छोटे हैं, लेकिन देश का राजनीतिक माहौल बनाने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। त्रिपुरा में भाजपा ने 2018 में सीपीएम के 'लाल दुर्ग' को ध्वस्त कर शून्य से सत्ता के शिखर तक का सफर तय किया था। 2023 में भाजपा के सामने 2018 की कामयाबी को दोहराने की चुनौती बड़ी होगी क्योंकि उसे त्रिपुरा विधानसभा में खाता खोलने के लिए 35 साल का इंतजार करना पड़ा था। भाजपा ने 1983 में पहली बार त्रिपुरा विधानसभा चुनाव में अपने 4 उम्मीदवार उतारे थे, लेकिन चारों में से कोई भी उम्मीदवार अपनी जमानत तक नहीं बचा पाया था। भाजपा के लिए त्रिपुरा का आगामी चुनाव कितना अहम है इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि चुनाव से सिर्फ 9 महीने पहले ही मई 2022 में पार्टी ने मुख्यमंत्री को बदल दिया। 2018 में भाजपा ने युवा चेहरे के तौर पर बिप्लब देव को मुख्यमंत्री बनाया था, लेकिन उनके कामकाज के तरीके से विधायकों में नाराजगी को देखते हुए

2023 में ही तय होगा 2024 का रास्ता

लोकसभा चुनावों में अब डेढ़ साल से भी कम का समय रह गया है। 2023 में होने वाले इन 9 राज्यों के विधानसभा चुनावों को 2024 के सेमीफाइनल के तौर पर माना जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि विधानसभा चुनावों के नतीजे 2024 की चुनावी लड़ाई की रणनीति तय करेंगे। इन 9 राज्यों से ही लोकसभा की कुल 116 सीटें आती हैं। इनमें से 90 से ज्यादा सीटों पर भाजपा का कब्जा है। भाजपा की कोशिश होगी कि यह संख्या बरकरार रहे। दूसरी ओर, कांग्रेस की कोशिश होगी कि वह क्षेत्रीय दलों के साथ मिलकर अपनी स्थिति सुधार सके। चुनावी साल में हर नेता हाईली एक्टिव होगा। कभी जनता के बीच, कभी सभा, कभी रैली और जब फुर्सत मिलेगी, तब नई रणनीति पर सोच विचार। आने वाले कुछ दिन मप्र के प्रमुख और दिग्गज नेताओं का यही हाल होगा जिनके कंधों पर जीत की जिम्मेदारी होगी।

पार्टी ने माणिक साहा को मुख्यमंत्री बना दिया। साफ है भाजपा आने वाले चुनावों में कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहती है। दूसरी ओर, मुख्यमंत्री बदलने से विपक्षी पार्टियों को बैठे-बिठाए एक मुद्दा मिल गया है। वे जनता को यह बताना चाहेंगी कि मुख्यमंत्री बदलने का सीधा मतलब है कि सरकार ठीक काम नहीं कर पा रही है। त्रिपुरा की तरह ही मेघालय की लड़ाई भी भाजपा के लिए शुरू से ही मुश्किलों भरी रही है। पहली बार 1993 में भाजपा ने मेघालय की चुनावी लड़ाई में कदम रखा, 20 उम्मीदवार उतारे लेकिन जीत एक सीट पर भी नहीं मिली। बहरहाल, सफर जारी रहा। मेघालय की मौजूदा विधानसभा में भाजपा के सिर्फ 2 विधायक हैं, बावजूद इसके पार्टी सत्ता में है। आने वाले चुनावों में भाजपा मेघालय में सभी 60 सीटों पर चुनाव लड़ने का मन बना रही है, क्योंकि पिछले कुछ समय से भाजपा और एनपीपी के बीच दरार दिख रही है। एनपीपी और गठबंधन की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी यूडीपी ने भी सभी सीटों पर चुनाव लड़ने का ऐलान किया है। मेघालय में जनाधार बढ़ाने के लिए खुद प्रधानमंत्री मोदी ने भी मोर्चा संभाला है, पिछले महीने उनका शिलांग दौरा इस बात का प्रमाण है।

त्रिपुरा और मेघालय से अलग भाजपा की स्थिति नागालैंड में किंग मेकर वाली रही है। पिछली बार यानी 2018 के चुनावों में 12 सीटें जीतकर भाजपा ऐसी स्थिति में पहुंच गई कि उसके बिना कोई भी सरकार नहीं बन सकती थी। इस बार भी भाजपा ने नेफियो रियो की पार्टी एनडीपीपी के साथ मिलकर ही चुनाव लड़ने का ऐलान किया है। दोनों पार्टियों में सीटों का फॉर्मूला भी करीब-करीब तय हो चुका है। पिछले साल जुलाई में ही दोनों पार्टियों की ओर से साझा बयान जारी किया गया, बताया गया कि भाजपा 20 और एनडीपीपी 40 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। हालांकि, पहले ये खबरें भी खूब गर्म हुईं कि भाजपा नागालैंड में भी अकेले दम पर चुनाव लड़ेगी, लेकिन नागालैंड की सत्ता में बने रहने के लिए भाजपा को फिलहाल एनडीपीपी के साथ गठबंधन में बने रहना ज्यादा मुफीद लग रहा है।

● विपिन कंधारी

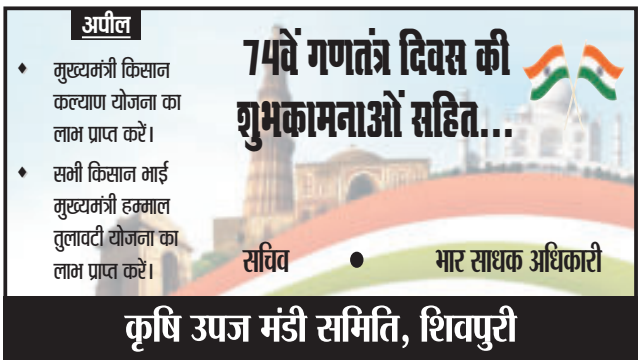

दक्षिण भारत के तेलंगाना में केसीआर के नेतृत्व में विपक्षी एकता का शक्ति प्रदर्शन किया गया, जिसमें अखिलेश यादव से लेकर अरविंद केजरीवाल, पिनराई विजयन तक ने शिरकत की। केसीआर के मंच पर उन्हीं नेताओं को बुलाया गया था, जो भाजपा और कांग्रेस दोनों के खिलाफ है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या 2024 के लिए बन रहा थर्ड फ्रंट भाजपा से ज्यादा कांग्रेस के लिए चिंता का सबब बनेगा?

कांग्रेस का विकल्प बनने में जुटे क्षत्रप

कांग्रेस छोड़कर सभी विपक्षी दलों को एक मंच पर लाया जाए

विपक्ष में अभी काफी बिखराव है। मसलन कांग्रेस अलग है, जबकि अन्य दलों में भी एकजुटता नहीं आ पाई है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव सभी प्रधानमंत्री बनने का सपना देख रहे हैं। समय-समय पर तीनों ने विपक्षी दलों को एकजुट करने का काम किया, लेकिन नहीं कर पाए। इसका कारण यही था कि कोई भी दूसरे दल के नेता के नेतृत्व में काम नहीं करना चाहता था। अब विपक्ष के कई दलों ने मिलकर इसका रास्ता निकाला है। इसके अनुसार, कांग्रेस छोड़कर सभी विपक्षी दलों को एकसाथ एक मंच पर लाने की तैयारी है। हालांकि, चुनाव से पहले किसी तरह के गठबंधन का ऐलान नहीं होगा।

लोकसभा चुनाव को लेकर सियासी तानाबाना बुना जाने लगा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2024 में सत्ता की हैट्रिक लगाने के लिए अपना एजेंडा सेट कर दिया है तो राहुल गांधी भारत जोड़ो यात्रा के जरिए माहौल बनाने में जुटे हैं। भाजपा से 2024 में मुकाबले के लिए कांग्रेस की कोशिशों से अलग केसीआर की अगुवाई में विपक्षी दल के क्षत्रप नेताओं ने तेलंगाना के खम्मम में एकजुट होकर शक्ति प्रदर्शन किया। ऐसे में क्षेत्रीय दलों की कोशिश अपने विस्तार के साथ-साथ कांग्रेस को यथास्थिति में बनाए रखने की है?

तेलंगाना के मुख्यमंत्री केसीआर के नेतृत्व में हुई रैली में सपा प्रमुख अखिलेश यादव से लेकर आम आदमी पार्टी के अरविंद केजरीवाल, भगवंत मान, केरल के मुख्यमंत्री पिनरई विजयन और सीपीआई नेता डी राजा ने शिरकत की। विपक्षी दिग्गजों के इस जुटान को 2024 के लोकसभा चुनाव में केसीआर के तीसरे मोर्चे और कांग्रेस के विकल्प बनने की कवायद के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि तेलंगाना की रैली में कांग्रेस से जुड़े किसी भी दल के नेता को नहीं बुलाया गया था। हालांकि, केसीआर की रैली में विपक्ष के दो बड़े नेता नीतीश कुमार और ममता बनर्जी नदारद दिखे।

केसीआर ने अपनी महत्वाकांक्षा के तहत पिछले महीने अपने दल तेलंगाना राष्ट्र समिति का नाम बदलकर भारत राष्ट्र समिति किया है। इसी कड़ी में अब 2024 के चुनाव में भाजपा के खिलाफ विपक्षी एकता की कवायद तेज कर दी है। उनकी रैली में उन्हीं पार्टी के नेताओं को आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने भाजपा और कांग्रेस से समान दूरी बना रखी है। इसीलिए न तो नीतीश कुमार को बुलाया गया और न ही अपने करीबी लालू प्रसाद के पुत्र तेजस्वी यादव को। इससे समझा जा सकता है कि केसीआर किस तरह से कांग्रेस से अलग-थलग रहकर विपक्षी एकता बनाने में जुटे हैं।

केसीआर ने केंद्र सरकार और भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि मेक इन इंडिया पहल जोक इन इंडिया बन गई है। उन्होंने किसानों को मुफ्त बिजली देने के वादे के साथ ही केंद्र में बीआरएस प्रस्तावित सरकार बनने पर सेना में भर्ती के लिए शुरू की गई अग्निपथ योजना को भी खत्म करने का ऐलान किया। भाजपा को हटाएंगे, भारत को बचाएंगे जैसे नारे लगाए गए। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा, भाजपा 399 दिनों के बाद देश की सत्ता से बाहर होगी और 400वें दिन नई सरकार बनेगी।

अखिलेश ने कहा कि केसीआर ने खम्मम की इस ऐतिहासिक धरती पर इतनी भारी भीड़ इकट्ठी की है और पूरे देश को एक संदेश दिया है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने अपने भाषण में कहा, अब देश बदलाव चाहता है। लोगों को पता चल गया है कि एनडीए सरकार देश को बदलने नहीं आई है। वे सिर्फ देश को बर्बाद करने आए हैं। वर्ष 2024 का चुनाव लोगों लिए एक अवसर है। दस साल होने जा रहे हैं...आप कब तक इंतजार करेंगे? पिनरई विजयन ने कहा, मुझे उम्मीद है कि जन प्रतिरोध की भूमि खम्मम में, हमारे एक नए प्रतिरोध की शुरुआत होगी। यह प्रतिरोध हमारी धर्मनिरपेक्षता, हमारे लोकतंत्र और देश की रक्षा के लिए है। खम्मम में रैली में शामिल होने वाले चारों नेताओं की राजनीति भाजपा की लाइन से भले ही अलग है, लेकिन कांग्रेस के सियासी आधार पर उनकी सियासत खड़ी है। वह फिर चाहे उप्र में समाजवादी पार्टी हो या फिर दिल्ली-पंजाब में अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी। इतना ही नहीं केरल में कांग्रेस और लेफ्ट पार्टी के बीच ही सीधी लड़ाई है। इससे एक बात स्पष्ट है कि सबकी नजर भाजपा विरोधी वोटों पर है, लेकिन कांग्रेस को साथ लिए बिना। ये सभी क्षत्रप कांग्रेस को किसी भी सूरत में दोबारा से मजबूत नहीं होने देना चाहते हैं। वहीं, राहुल गांधी भारत जोड़ो यात्रा के जरिए कांग्रेस को फिर से ताकतवर बनाने और अपने खोए हुए सियासी जनाधार को वापस लाने का प्रयास कर रहे हैं। कांग्रेस की नजर उप्र में अपने पुराने वोटबैंक दलित और मुस्लिमों पर है तो तेलंगाना में भी कांग्रेस अपने पुराने मुस्लिम, दलित और रेड्डी वोटों को सहेजने में जुटी हैं। दिल्ली एमसीडी के चुनाव में मुस्लिम वोट कांग्रेस की तरफ लौटे दिखे तो उसका असर आम आदमी पार्टी के नतीजे पर भी पड़ा। कांग्रेस की वापसी की बेचैनी साफ दिखाई दे रही है, क्योंकि कांग्रेस का कद जितना बढ़ेगा तो इन सभी चारों क्षेत्रीय दलों का सियासी आधार घटेगा। अखिलेश यादव से

लेकर केजरीवाल और केसीआर तक कांग्रेस से दूरी बनाए रखना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें आशंका है कि कांग्रेस को साथ रखने से उसे पुनर्जीवित होने का मौका मिलेगा। इसीलिए इन्हें यह डर है कि अगर उनका आधार कांग्रेस में लौटता है तो उनका राजनीतिक वजूद खतरे में पड़ जाएगा। ये चारों ही क्षेत्रीय दलों की कोशिश अपने विस्तार के साथ-साथ कांग्रेस को भी यथास्थिति में रखने की है। दक्षिण भारत में कांग्रेस की स्थिति कमजोर है और भाजपा का भी उत्तर भारत की तरह प्रभुत्व नहीं है। ऐसे में हिंदी पट्टी के क्षेत्रीय दल अपने लिए संभावना तलाश रहे हैं। आम आदमी पार्टी को राष्ट्रीय दल का दर्जा मिलने के बाद से अरविंद केजरीवाल की लगातार कोशिश पार्टी विस्तार के लिए नए प्रदेशों की तलाश है।

अरविंद केजरीवाल ने गुजरात, गोवा, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के विधानसभा चुनावों में भी काफी जोर लगाया है और 2023 में मप्र, राजस्थान और कर्नाटक में चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। इन राज्यों में उन्हें कांग्रेस के बीच अपने आपको मजबूत करने की रणनीति है। अखिलेश यादव को उप्र में अपने जनाधार को बचाए रखते हुए अपनी पार्टी का विस्तार भी करना है। केसीआर की रणनीति भी कुछ इसी तरह की है, जिसमें तेलंगाना की सत्ता को बचाए रखते हुए अपना सियासी आधार दूसरे राज्य में बढ़ाना चाहते हैं। लोकसभा चुनाव से पहले तेलंगाना में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव हैं। यहां कांग्रेस ही बीआरएस की मुख्य प्रतिद्वंद्वी है। भाजपा भी तेलंगाना में अपना आधार बढ़ाने की कोशिश कर रही है। ऐसे में केसीआर **राष्ट्रीय स्तर** पर किसी ऐसे गठबंधन में शामिल होना चाहते हैं, जिसमें कांग्रेस या भाजपा शामिल न हो। केसीआर की रणनीति से साफ है कि वह एक ऐसा मोर्चा बनाना चाहते हैं जो भाजपा के खिलाफ हो, लेकिन उसमें कांग्रेस न शामिल हो। इसीलिए वो ऐसे दलों को साथ लेकर आगे बढ़ रहे हैं, जिनके कांग्रेस के साथ छत्तीस के आंकड़े हों। खम्मम में रैली के जरिए मुख्यमंत्री केसीआर ने यह संकेत देने की कोशिश की कि वह तेलंगाना में बहुत मजबूत हैं और उन्हें भाजपा या कांग्रेस के आक्रामक रुख से कोई खतरा नहीं है। वो 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के खिलाफ और कांग्रेस के विकल्प के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा मोर्चा बनाने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। उन्होंने साफ कर दिया है कि कांग्रेस से इतर देश में एक थर्ड फ्रंट भी है, जो भाजपा को हराने के लिए तैयार है।कांग्रेस से इतर थर्ड फ्रंट बनाने की सिफारिश करने वाले नेताओं में ममता बनर्जी का नाम सबसे ऊपर आता है। खम्मम रैली में उन्होंने शिरकत न करके कई सवाल खड़े कर दिए हैं। माना जा रहा है कि ममता बनर्जी केसीआर के नेतृत्व में खड़े हो रहे थर्ड फ्रंट में वामदलों की एंट्री से खफा हैं। क्योंकि, पश्चिम बंगाल में टीएमसी और वामदल की सीधी लड़ाई है। लिहाजा, ममता बनर्जी नहीं चाहती कि थर्ड फ्रंट में वामदल की एंट्री हो। वहीं, नीतीश कुमार भी विपक्ष एकता की कवायद कर रहे हैं, जिसमें कांग्रेस को रखते हुए सभी विपक्षी दलों को साथ लाना चाहते हैं, जिस पर न केसीआर तैयार है और न ही अरविंद केजरीवाल और अखिलेश यादव। ऐसे में देखना है कि 2024 के चुनाव में कांग्रेस के विकल्प बनने के लिए तेलंगाना से शुरू हुई तीसरे मोर्चे की कवायद कितनी जमीन पर उतर पाती है? कांग्रेस महासचिव तारिक अनवर ने कहा कि विपक्ष के जो भी दल भाजपा को हराना चाहते हैं, वो कांग्रेस को लिए बिना कोई मोर्चा बनाने की कोशिश नहीं करेंगे। कांग्रेस ही एक पार्टी है, जो राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा को जवाब दे रही है और प्रधानमंत्री मोदी से सवाल पूछ रही है। कांग्रेस को अलग-थलग कर कोई मोर्चा अगर बनाने का प्रयास होगा तो ये सीधे-सीधे भाजपा की मदद होगी। विपक्ष का मतलब ही है कि सभी लोग इसमें शामिल रहें। नीतीश कुमार और दूसरे नेताओं ने कहा है कि बिना कांग्रेस के कोई मोर्चा नहीं बन सकता है। इस पर **विशेषज्ञों** का कहना है कि देश में इस वक्त तीन बड़े राजनीतिक गुट बनते दिख रहे हैं। पहली भाजपा है, जो सत्ता में है। दूसरी कांग्रेस जो मुख्य विपक्षी दल है और तीसरा एक नया मोर्चा बनता दिख रहा है। इस मोर्चे में कई क्षेत्रीय दल शामिल हैं। मसलन समाजवादी पार्टी, आम आदमी पार्टी, टीआरएस, वामदल, आरजेडी, जेडीयू जैसे दल। कुछ ऐसे भी दल हैं, जो किसी भी गुट में शामिल नहीं हैं। जैसे बसपा, अकाली दल। विशेषज्ञ कहते हैं कि जब सपा मुखिया अखिलेश यादव को कांग्रेस ने राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के लिए निमंत्रण दिया तो वह नहीं गए। लेकिन राव के बुलावे पर वह तेलंगाना पहुंच गए। ये बड़ा राजनीतिक संदेश है। इससे साफ है कि देश में तीसरे मोर्चे के गठन की तस्वीर साफ होती दिख रही है। इस मोर्चे ने तीन बड़ी रणनीति पर काम शुरू किया है।

● **इन्द्र कुमार**

क्या रमन की छग से होगी छुट्टी?

पिछले कुछ दिनों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कैबिनेट में विस्तार को लेकर चर्चा चरम पर है। खासकर जिन राज्यों में चुनाव होने वाले हैं, वहां के भाजपा नेताओं को केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह देने की लेकर चर्चा सुर्खियों में है। साल 2023 में छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव भी होना है। ताजा जानकारी के मुताबिक छत्तीसगढ़ के नेताओं को भी केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह मिलने की चर्चा तेजी से चल रही है। इसके अलावा, राजनीतिक गलियारों में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह को भी दिल्ली भेजने की चर्चा हो रही है। इस पर रमन सिंह ने बड़ा बयान दिया है। पिछले कुछ दिनों में छत्तीसगढ़ के 9 लोकसभा सांसदों में से कई सांसदों ने दिल्ली दौरा किया है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव और पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह भी दिल्ली दौरे पर गए थे।

दिल्ली दौरे के पीछे की वजह ये बताई जा रही है कि केंद्रीय मंत्रिमंडल में छत्तीसगढ़ के नेताओं को मौका मिल सकता है। खासकर, शीर्ष नेतृत्व इस विषय पर ध्यान दे रही है कि 2023 यानी इसी साल के अंत में राज्य में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं तो एससी, एसटी और ओबीसी को साधने के लिए उसी वर्ग के नेताओं को केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह मिले। छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा चर्चा राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के नाम को लेकर है। कांग्रेस ने तो रमन सिंह को बधाई देना भी शुरू कर दिया है। इस मामले में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने पहली बार अपना पक्ष रखा है। रायपुर में रमन सिंह ने कहा कि मैं छत्तीसगढ़ में अच्छा लगता हूं। छत्तीसगढ़ मुझे अच्छा लगता है। अभी दिल्ली जाने का कोई इरादा नहीं है। रमन सिंह ने आगे कांग्रेस के बधाई पर जवाब देते हुए कहा कि कांग्रेस नेता यही चाहते हैं। वहीं, राज्य में दूसरे नेताओं को केंद्रीय कैबिनेट में जगह मिलने के सवाल पर रमन सिंह ने कहा कि ऐसे बहुत लोग हैं, जिन्हें स्थान मिल सकता है।

इधर, कांग्रेस ने रमन सिंह के दिल्ली नहीं जाने के बयान पर कहा कि भाजपा रमन सिंह का चेहरा सामने रखना नहीं चाहती है। इसलिए रमन सिंह अपनी इज्जत ढंकने की कोशिश कर रहे है। कांग्रेस के संचार विभाग प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा उनको दिल्ली जाने से रोक रही है। भाजपा को ये मालूम है कि रमन सिंह को राज्य से बाहर करेंगे तो लोगों को पता है कि छत्तीसगढ़ भ्रष्टाचार के मामले में भाजपा की दुर्गति हो गई है। देश के दूसरे राज्य जाएंगे तो उनको पूछा जाएगा, इतना पैसा कहां से कमाया? आपने कैसा शासन चलाया था कि विपक्ष के पूरे नेता मार दिए गए? इसकी आपने जांच नहीं करवाई। यही वजह है कि रमन सिंह का चेहरा भाजपा सामने नहीं रखना चाहती है। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली, लेकिन वो आज तक कहीं नहीं गए। छत्तीसगढ़ में चुनाव के नजदीक आते ही राजनीतिक हलचल तेज हो गई है। सियासी पारा इस कदर चढ़ा है कि सर्दियों के मौसम में भी राजनीतिक गलियारों में गर्माहट महसूस की जा रही है। रोज नए-नए दावे, वादे, आरोप-प्रत्यारोप की खबरों के बीच राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह को लेकर भी चर्चा तेज है। 15 साल तक छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रहने वाले डॉ. रमन सिंह के राजनीतिक अस्तित्व की चर्चा भी खूब होने लगी है। ये चर्चा भले ही भाजपा के अंदरखाने में हो रही हो, पर सत्ताधारी दल के नेता अब खुलेआम डॉ. रमन सिंह के राजनीतिक भविष्य को लेकर सवाल खड़े करने लगे हैं। ऐसा ही एक बयान कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता ने भी दिया है, तो वहीं भाजपा प्रदेश प्रवक्ता भी सामने आ गए हैं।

छत्तीसगढ़ की सियासत में 15 साल राज कर इतिहास बनाने वाले भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के राजनीतिक कैरियर पर सवाल उठने लगे हैं। कभी छत्तीसगढ़ भाजपा के हर बैनर, पोस्टर में प्रमुखता से दिखने वाले रमन सिंह अब दिखाई नहीं दे रहे हैं और शायद यही वजह है कि सत्ताधारी दल कांग्रेस के नेता ऐसी परिस्थितियों पर चुटकी लेते नजर आ रहे हैं। दरअसल, बिलासपुर में भाजपा कार्यसमिति की बैठक में आए संगठन प्रभारी ओमप्रकाश माथुर के स्वागत में भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के पोस्टर में पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. रमन सिंह की तस्वीर नजर नहीं आई। इधर भाजपा के बैनर, पोस्टर में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह की तस्वीर गायब करने को लेकर कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता अभय नारायण रॉय ने तंज कसते हुए कहा कि भाजपा में सिर्फ डबल इंजन की सरकार चलती है।

● रायपुर से टीपी सिंह

ट्रिपल इंजन सरकार की मुहिम

लोकसभा चुनाव के नतीजे भी विधानसभा जैसे ही हों, जरूरी नहीं होता। महाराष्ट्र को लेकर भी भाजपा नेतृत्व के मन में कहीं न कहीं ये सवाल जरूर होगा और यही वजह है कि भाजपा छोटी से छोटी चूक की भी गुंजाइश नहीं छोड़ रही है। 2018 के मप्र, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में हुए विधानसभा चुनाव और उसके छह महीने के भीतर ही 2019 के लोकसभा चुनाव के नतीजों को देखें तो ये फर्क आसानी से समझ में आ जाता है। विधानसभा चुनाव में भाजपा जहां तीनों ही राज्यों में सत्ता गंवा चुकी थी, लोकसभा की ज्यादातर सीटें बड़े आराम से हासिल कर ली थीं।

महाराष्ट्र में भाजपा ने शिवसेना को अपनी तरफ से तहस-नहस करने में कोई कमी नहीं की है, लेकिन जड़ों तक असर हुआ है या नहीं ये तो आम चुनाव के नतीजों से ही मालूम हो सकता है। आम चुनावों में जनता का क्या मूड होगा ये बीएमसी चुनावों के जरिए आसानी से समझा जा सकता है। भाजपा नेतृत्व का पूरा जोर अभी बीएमसी चुनाव पर ही है। जब तक बीएमसी से उद्धव ठाकरे वाली शिवसेना का दबदबा खत्म नहीं हो जाता, भाजपा का दिल तेजी से धड़कता रहेगा। अभी ये तो नहीं मालूम कि बीएमसी के चुनाव कब होंगे, लेकिन ये जरूर पक्का है कि 2024 के आम चुनाव से पहले तो हो ही जाएंगे। खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मुंबई दौरे और वहां उनकी बातें सुनने के बाद तो ये बात पूरी तरह कन्फर्म हो गई है। प्रधानमंत्री मोदी के महाराष्ट्र दौरे से जो बातें समझ में आ रही हैं, ऐसा लगता है कि मिशन 2024 को कामयाब बनाने के लिए भाजपा छोटे से छोटा चुनाव भी जीतने की कोशिश करना चाहती है। अव्वल तो तैयारियों का सही अंदाजा लगेगा ही, बड़ा फायदा ये होगा कि हर इलाके से सही फीडबैक भी वक्त रहते मिल जाएगा। और जहां कहीं भी कमजोरियों का पता चला, मजबूत करने की कोशिश हो सकती है। ऐसा करने के लिए पास में ठीकठाक वक्त भी होगा। अब तक तो यही मालूम पड़ा था कि प्रधानमंत्री मोदी 2024 से पहले होने वाले सभी विधानसभा चुनावों में भाजपा का चेहरा होंगे, बीएमसी को लेकर मोदी की हालिया तत्परता से तो ऐसा लगने लगा है कि वहां भी मोदी ही मोदी करने की तैयारी हो चुकी है। कम से कम भाजपा की तैयारी तो ऐसी ही है। बाकी विपक्ष कितना काउंटर कर पाता है, ये वो ही जाने।

ट्रिपल इंजन विकास की बात भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मुंबई से ही आगे बढ़ा रहे हैं। इससे पहले उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भी पंचायत चुनावों को लेकर ट्रिपल इंजन सरकार की बातें करते सुना जा चुका है। हाल के कम से कम दो चुनाव भाजपा के लिए तकलीफ भरे जरूर रहे हैं – दिल्ली नगर निगम चुनाव और हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव। भाजपा कार्यकारिणी के दौरान हिमाचल प्रदेश का जिक्र करते हुए भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने आने वाला हर चुनाव जीतने का संकल्प दोहराया था और बीएमसी को लेकर प्रधानमंत्री मोदी का अभी से एक्शन मोड में आ जाना भी वही चीज समझा रहा है। ये भी देखने को मिला है कि मोदी के मुंह से हिमाचल प्रदेश और एमसीडी चुनावों का ज्यादा जिक्र सुनने को नहीं मिला है। बस नतीजे वाले दिन ही मोदी ने हिमाचल प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस के वोट शेयर में 0.9 फीसदी फर्क वाली बात की थी, उसके बाद से प्रधानमंत्री मोदी फिर से गुजरात मॉडल की दुहाई देने लगे हैं। अमित शाह के त्रिपुरा में अयोध्या में मंदिर निर्माण की तारीख बताने से पहले पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी ने भाजपा कार्यकर्ताओं को गुजरात मॉडल से सबक लेने की ही सलाह दी थी।

भाजपा के नए गुजरात मॉडल से मतलब बड़ा लक्ष्य तय करके उसे अंजाम तक पहुंचाने का तरीका है। भाजपा कार्यकर्ताओं को यही समझाया जा रहा है कि कैसे अमित शाह ने गुजरात में 150 सीटें जीतने का लक्ष्य रखा था और भाजपा ने आगे बढ़कर 156 सीटें जीत ली। मोदी भले ही हिमाचल प्रदेश और एमसीडी चुनावों का जिक्र न करें लेकिन बीएमसी के नतीजे किसी भी सूरत में वैसे नहीं होने देना चाहते हैं। हाल की भाजपा कार्यकारिणी में मोदी ने जो बातें कही थीं, अब हर जगह घुमा फिराकर समझाने लगे हैं। कर्नाटक दौरे में भी और मुंबई दौरे में भी ये देखने को मिला है। भाजपा कार्यकारिणी से आई खबरों से मालूम हुआ, मोदी ने कहा था- देश का सबसे अच्छा दौर आने वाला है और उसे कोई भी रोक नहीं सकता। ये भी वैसे ही समझाने की कोशिश हो रही है, जैसे भाजपा की तरफ से ये समझाने का प्रयास होता है कि कांग्रेस के अड़ंगे डालने के बावजूद अयोध्या में मंदिर बनकर तैयार हो रहा है। चुनावी साल में जिस तरीके से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब अमृतकाल की बात करने लगे हैं, वो मौजूदा अमृत महोत्सव से बिलकुल अलग है। वो आगे के 25 साल की तैयारी है। 2047 में भाजपा की सरकार में ही आजादी का शताब्दी महोत्सव मनाने की तैयारी है। ये बात भी प्रधानमंत्री मोदी ने कार्यकारिणी में ही भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं को समझा दी थी, अमृतकाल को कर्तव्य काल में बदलने की जरूरत है।

● **बिन्दु माथुर**

कांग्रेस में रार पड़ सकती है भारी

राजस्थान में दिसंबर महीने में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस पार्टी पूरी तरह चुनावी मूड मे लग रही है। प्रदेश में 18 दिनों तक चली राहुल गांधी की भारत जोड़ो पदयात्रा के बाद कांग्रेस संगठन भी सक्रिय हो गया है। कांग्रेस के नए प्रदेश प्रभारी बने सुखजिंदर सिंह रंधावा ने पद संभालते ही प्रदेश कांग्रेस में लंबे समय से रिक्त पड़े संगठन के पदों पर नियुक्तियां करवानी प्रारंभ करवा दी हैं। जिससे कांग्रेस संगठन में हलचल होने लगी है। लंबे समय से सुस्त पड़े कांग्रेस कार्यकर्ता भी अब तरोताजा लग रहे हैं। प्रदेश प्रभारी रंधावा ने जहां प्रदेश कांग्रेस के रिक्त पड़े सभी 400 ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्षों में से अधिकांश ब्लॉक अध्यक्षों का मनोनयन करवा दिया है। वहीं पहली बार मंडल इकाई का भी गठन करवाया जा रहा है। यह कांग्रेस में एक नई शुरुआत है। इससे बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं को संगठन में पदाधिकारी बनाया जा सकेगा। जिससे कार्यकर्ता पार्टी प्रत्याशी के साथ जुटकर चुनाव में काम करेंगे।

18 दिसंबर को अलवर के मालाखेड़ा में भारत जोड़ो यात्रा के तहत आयोजित जनसभा में राहुल गांधी ने कहा था कि मुझे भाजपा वाले बुरे नहीं लगते हैं। मैं रास्ते में जाता हूं तो इशारा करके पूछते हैं कि क्या कर रहे हो? मैं उन्हें जवाब देना चाहता हूं कि नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोल रहा हूं। आइए आप भी बाजार में मोहब्बत की दुकान खोलिए। महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, सरदार पटेल, अंबेडकर साहब ने भी मोहब्बत की दुकान खोली थी। राहुल गांधी के भाषण की इन लाइनों को अब प्रदेश कांग्रेस कमेटी घर-घर पहुंचाने का काम करेगी। इसके लिए पार्टी ने काम शुरू कर दिया है। कांग्रेस पदाधिकारी घर-घर जाएंगे और लोगों से सीधे बात करेंगे। इसी अभियान के तहत राहुल गांधी के पत्र हर घर तक पहुंचाए जाएंगे। राहुल गांधी का व्यक्तिगत पत्र प्रदेश के हर घर में पहुंचाने के लिए पार्टी पदाधिकारियों को टास्क दे दिया गया है। अगले दो महीने में प्रदेश के हर कोने तक राहुल गांधी के इस संदेश को लोगों तक पहुंचाया जाएगा। इस अभियान की निगरानी के लिए प्रदेश में वरिष्ठ नेताओं को पर्यवेक्षकों बनाया गया है। बताया जा रहा है कि ये पत्र घर जाकर दिया जाएगा ताकि जनता से सीधा संवाद भी हो और उनकी परेशानी व मुद्दों को सुना जाए। इस कार्यक्रम के लिए आयोजित होने वाली पदयात्रा दो महीने तक गांवों में रहेगी। एक महीने में सभी पॉलिंग बूथ कवर किए जाएंगे। हर गांव में मीटिंग होंगी। इसके बाद कांग्रेस कार्यकर्ता घर-घर संदेश लेकर जाएंगे। पत्र में राहुल गांधी के संदेश के साथ मोदी सरकार की नाकामियां भी बताई जाएंगी। गांवों में यात्रा का वीडियो भी दिखाया जाएगा। हर गांव के ग्रुप भी बनेंगे। गांवों में युवक कांग्रेस व एनएसयूआई बाइक रैली निकालेंगी। जिला स्तर पर कार्यकर्ता मेला लगाया जाएगा। इसमें प्रदेशाध्यक्ष, मुख्यमंत्री व वरिष्ठ नेता भाग लेंगे। प्रदेश स्तर पर महासंगम होगा। कांग्रेस महारैली का भी आयोजन किया जाएगा। इसमें कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष व अन्य बड़े नेता आएंगे। राजस्थान का बजट भी इस बार अलग हटकर होगा। माना जाता है कि राजस्थान का बजट पूरे देश को रास्ता दिखाता है। राजस्थान में सरकारी कर्मचारियों के लिए फिर से पुरानी पेंशन योजना लागू करने के बाद कांग्रेस शासित व अन्य कई राज्यों ने भी इस योजना को लागू करने की घोषणा कर दी है। इसके अलावा आने वाले बजट में प्रदेश को बहुत कुछ खास मिलने वाला है। कांग्रेस का बजट आम आदमी का बजट होता है। राहुल गांधी की यात्रा के दौरान राजस्थान सरकार द्वारा गरीब परिवारों को 500 रुपए में गैस सिलेंडर देने की घोषणा की जा चुकी है। चुनावी वर्ष में प्रशासन को भी और अधिक सक्रिय किया जा रहा है। सियासी तापमान नापने के लिए सभी जिला कलेक्टर और मंत्री भी जल्द ही गांव-कस्बों में महीने में दो बार जन सुनवाई कर रात्रि चौपाल लगाएंगे। चुनावी वर्ष में गुड गवर्नेंस को प्रभावी बनाने के लिए मुख्यमंत्री के निर्देश पर ऐसा होने जा रहा है।

● जयपुर से आर.के. बिन्नानी

हाथी चलेगा अब अकेला

बसपा सुप्रीमो मायावती ने भाजपा के खिलाफ विपक्षी एकता की कोशिशों को तगड़ा झटका दिया है। 15 जनवरी अपने जन्मदिन के अवसर पर मायावती ने 2024 को लेकर बसपा की रणनीति का खुलासा किया। उन्होंने साफ किया कि बहुजन समाज पार्टी लोकसभा चुनाव अकेले अपने दम पर लड़ेगी। किसी के साथ कोई भी गठबंधन नहीं होगा। यही नहीं 2023 में जिन राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं वहां भी कोई गठबंधन नहीं किया जाएगा। बसपा सुप्रीमो मायावती अपने 67वें जन्मदिन के मौके पर अलग अंदाज में नजर आईं। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस में मीडिया के हर एक सवाल का जवाब दिया। फिर चाहे वो बसपा को चुनाव में मिल रही हार पर सवाल हो या भाजपा के पसमांदा प्रेम पर। मायावती ने हर सवाल का खुलकर जवाब दिया। मायावाती ने कहा कि 2023 में कर्नाटक, मप्र, छत्तीसगढ़ और 2024 के लोकसभा के चुनाव बसपा अकेले लड़ेगी। किसी के साथ कोई गठबंधन नहीं करेगी, क्योंकि कांग्रेस ने कुछ दिनों से ये भ्रम फैला रखा था कि वो बसपा से गठबंधन करेंगे, लेकिन बसपा ये नहीं करेगी। बसपा प्रमुख मायावती ने कहा कि कांग्रेस और कुछ अन्य दल हमारी पार्टी से गठबंधन करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन हमारी विचारधारा अन्य पार्टियों से एकदम अलग है। बसपा लोकसभा चुनाव और विधानसभा चुनावों में किसी भी पार्टी से कोई गठबंधन नहीं करेगी।

बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्ष मायावती ने अपने जन्मदिन के मौके पर एक बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहा है कि आने वाले विधानसभा चुनावों और लोकसभा चुनाव 2024 में पार्टी किसी भी दल के साथ गठबंधन नहीं करेगी। मतलब, बसपा का हाथी अब अकेला चलेगा और मायावती अब अपने दम पर चुनावी मैदान में उतरेगी और जीत दर्ज करेगी। इस प्रकार के कयास पहले से लगाए जा रहे थे। माना जा रहा था कि बसपा किसी भी राजनीतिक दल के साथ गठजोड़ करने को अब इच्छुक नहीं है। इसका कारण बसपा के वोट बैंक के बीच बनता एक निगेटिव माहौल है।

उप्र की राजनीति में बहुजन समाज पार्टी करीब 25 फीसदी वोट बैंक की राजनीति करती रही है। लेकिन, लोकसभा चुनाव 2014 के बाद से पार्टी की स्थिति लगातार खराब होती गई। वर्ष 2007 में उप्र विधानसभा चुनाव के समय मायावती ने पार्टी के बहुजन को सर्वजन में बदलकर प्रदेश में अकेले दम पर सरकार बनाने लायक बहुमत दिला दिया था। इस चुनाव में बसपा के कोर वोट बैंक दलित, मुस्लिम और ओबीसी के साथ ब्राह्मण वोट को जोड़ा गया। हालांकि, यह दांव मायावती पर भारी पड़ गया। इस चुनाव के बाद पार्टी लगातार प्रदेश के चुनावी मैदान में पिछड़ती चली गई। करीब 2 साल बाद ही हुए लोकसभा चुनाव 2009 में पार्टी को आशातीत सफलता नहीं मिली। वर्ष 2009 के लोकसभा चुनाव में बसपा ने 20 सीटों पर जीत दर्ज की थी। सत्ता में रहने के बावजूद प्रदेश में पार्टी तीसरे स्थान पर रही। बसपा के आगे समाजवादी पार्टी और कांग्रेस थी। सपा को 23 और कांग्रेस को 21 सीटों पर जीत मिली थी। 2007 के उप्र चुनाव में बसपा के साथ गया ब्राह्मण वोट बैंक कांग्रेस से जुड़ा और पूरा खेल पलट गया। मायावती ने अपने शासनकाल में विकास और कानून व्यवस्था की स्थिति का जिक्र अब तक करती हैं, लेकिन इसे अपने वोट बैंक तक पहुंचाने में वे कामयाब नहीं रहीं।

2007 से 2012 तक उप्र की सत्ता में रहने और प्रभावी कानून व्यवस्था के बावजूद मायावती प्रदेश की राजनीति में वह छाप नहीं छोड़ पाई, जिससे उनकी वापसी संभव हो सके। ऐसे में उन्होंने आगामी राजस्थान, कर्नाटक, मप्र जैसे राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव और वर्ष 2024 के आम चुनाव से पहले गठबंधन न करने की घोषणा कर बड़ा संदेश अपने वोट बैंक को देने का प्रयास किया है। लोकसभा चुनाव 2014 के बाद से हुए चुनाव परिणाम इसकी गवाही देते हैं। बसपा ने इस दरम्यान कई राजनीतिक दलों के साथ गठबंधन किया, लेकिन उसका परिणाम पार्टी के पक्ष में उस स्तर पर निकलकर नहीं आया।

● लखनऊ से मधु आलोक निगम

जैसे को तैसा!

नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव अपने-अपने बुद्धि चातुर्य, राजनीतिक कौशल और अनुभव के हिसाब से एक-दूसरे को शिकस्त देने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। तेजस्वी यादव के पास नीतीश कुमार जैसा अनुभव तो है नहीं, लिहाजा अपने पिता लालू यादव के अनुभव का हर संभव फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं। वैसे अभी तक तेजस्वी यादव ने अपनी तरफ से या अपनी बदौलत कुछ खास प्राप्त तो किया नहीं है, जो भी हासिल है वो लालू यादव के बेटे होने के चलते ही है। लेकिन ये तो कहा ही जा सकता है कि आरजेडी की विरासत को वो अपने आगे-पीछे के समकालीन नेताओं राहुल गांधी और अखिलेश यादव से बेहतर ढंग से संभाले हुए हैं और उसके आगे अपने और अपनी पार्टी के उज्ज्वल भविष्य की तरफ मजबूत इशारे भी कर रहे हैं।

राहुल गांधी और अखिलेश यादव की ही तरह तेजस्वी यादव को भी एक ऐसे मजबूत नेता से मुकाबला करना पड़ रहा है। तेजस्वी यादव के सामने नीतीश कुमार भी करीब-करीब वैसे ही खड़े हो गए हैं जैसे राहुल गांधी के सामने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अखिलेश यादव के सामने योगी आदित्यनाथ। नीतीश कुमार की स्थिति मोदी और योगी के मुकाबले बिलकुल भी अच्छी नहीं है, बल्कि गाड़ी पूरी तरह जुगाड़ पर ही चल रही है। ऐसा लगता है जैसे पहली बार नीतीश कुमार का किसी मजबूत नेता से पाला पड़ा है। एक वजह ये भी है कि तेजस्वी यादव अपने राजनीतिक कैरियर के शुरुआती पड़ाव पर हैं, जबकि नीतीश कुमार आखिरी छोर पर पहुंच चुके हैं। और ये भी विडंबना ही है कि अपने ट्रैक रिकॉर्ड की वजह से नीतीश कुमार करीब-करीब सारे ही ऑप्शन खत्म भी कर चुके हैं। अब तक वो आरजेडी और भाजपा में से किसी एक को पकड़कर काम चलाते रहे हैं, लेकिन दोनों के साथ उनका दो-दो बार साथ रहने का कोटा पूरा भी हो गया लगता है। ये भी वक्त का ही तकाजा है कि नीतीश कुमार की राजनीति भी अब उसी मोड़ के करीब पहुंच चुकी है, जहां कभी समाजवादी नेता जॉर्ज फर्नांडिस और शरद यादव उनके कृपापात्र बनकर रह गए थे और नीतीश कुमार ने मौके का भरपूर फायदा उठा लिया था। और ये भी वक्त की ही डिमांड है कि नीतीश कुमार एक तरीके से तेजस्वी यादव के कृपा पात्र बन चुके लगते हैं। इसकी पहली झलक तो तेजस्वी यादव के जन्मदिन पर ही देखी गई थी जब वो सामने बैठे लोगों से उठकर ताली बजाते हुए बधाई देने को कहने लगे थे और उस दिन तो पक्का ही कर दिया था, जिस दिन ये घोषणा कर दी कि 2025 में महागठबंधन के नेता तेजस्वी यादव ही होंगे।

नीतीश कुमार ने मन ही मन जो भी रणनीति तैयार कर रखी हो, लेकिन ऊपर से तो साफ तौर पर यही लगता है कि अब लालू परिवार के सामने हथियार डाल देने के अलावा कोई चारा भी नहीं बचा है क्योंकि भाजपा तो अब नीतीश कुमार को भाव देने से रही। जब नाइटवॉचमैन के रूप में भाजपा के पास चिराग पासवान जैसा चमकता सितारा है, तो मार्गदर्शक मंडल कैटेगरी के भरोसे रहने की जरूरत भी क्या है? लेकिन ऐसा क्यों लगता है, जैसे नीतीश कुमार ने समता पार्टी पर दांव खेलकर जेडीयू पर कब्जा कर लिया, आरजेडी पर भी अब उनकी वैसी ही नजर है, लेकिन ऐन उसी वक्त वो ये भूल जा रहे हैं कि उनका पाला लालू यादव से पड़ा है, जो नीतीश कुमार के हर खेल को बेहद करीब से देखते आए हैं और अच्छी तरह समझते हैं। लालू यादव ने जो खाका खींचा है, तेजस्वी यादव को तो बस उसी लाइन पर धीरे-धीरे एक-एक कदम रखते जाने की जरूरत है। अपने दौर के बड़े समाजवादी इंफ्लुएंसर जॉर्ज फर्नांडिस की उंगली पकड़कर ही नीतीश कुमार राष्ट्रीय राजनीति में पहुंचे थे, लेकिन बिहार का मुख्यमंत्री बन जाने के बाद मुजफ्फरपुर से उनका टिकट भी काट दिया था, जिसे न तो वो ताउम्र भूले होंगे और न ही दोनों के करीब से जानने वाले ही। कालांतर में शरद यादव के साथ भी नीतीश कुमार बिलकुल वैसे ही पेश आए। बल्कि जॉर्ज फर्नांडिस को किनारे लगाने के लिए भी शरद यादव का इस्तेमाल कर लिया था। जॉर्ज और शरद के अलावा दो और भी नाम दिग्विजय सिंह और आरसीपी सिंह के लिए जा सकते हैं। लेकिन थोड़ा फर्क भी है। नीतीश कुमार ने आरसीपी सिंह को नहीं बल्कि आरसीपी सिंह ने अपने नेता के ट्रैक रिकॉर्ड से सबक लेते हुए नीतीश कुमार को ही धोखा दे दिया और अब तो भाजपा को अपना कंधा भी दे दिया है ताकि वो नीतीश कुमार को जितना डैमेज कर सके कर ले। 1994 में जॉर्ज फर्नांडिस के साथ मिलकर नीतीश कुमार ने पहले समता पार्टी बनाई थी, लेकिन 2003 आते-आते समता पार्टी टूट गई।

● **विनोद बक्सरी**

कंगाल हुआ पाकिस्तान

पाकिस्तान आज दाने-दाने को मोहताज है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार खत्म होने की कगार पर है और महंगाई अपने चरम पर पहुंच गई है। हालात ये बन गए हैं कि आटे का अकाल पड़ गया है और लोगों की थाली से रोटी गायब हो गई है। क्या आज जानते हैं आज से करीब 60 साल पहले पाकिस्तान, भारत से भी खुशहाल था...लोगों की जेब में पैसा था, लेकिन प्राकृतिक आपदा के अलावा देश की आतंकनीति ने आज ये हालात पैदा कर दिए हैं कि इकोनॉमी धराशायी हो चुकी है और देश अमेरिका-यूएई जैसे देशों से मदद की गुहार लगा रहा है।

पाकिस्तान में हर बीतते दिन के साथ हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। सरकार भी ये मान चुकी है कि देश की आर्थिक स्थित खराब हो चुकी है। ताजा हालातों की बात करें तो गेहूं की किल्लत के चलते आटे के दाम 150 रुपए प्रति किलो के पार पहुंच गए हैं, चिकन 650 रुपए प्रति किलो औद दूध भी 150 रुपए प्रति लीटर बिक रहा है। विदेशी मुद्रा भंडार खत्म होने की कगार पर पहुंच जाने के चलते सरकार जरूरी सामानों का आयात करने में भी सक्षम नहीं है। इसके चलते रोजमर्रा के सामानों की कमी से लोग जूझ रहे हैं। रसोई गैस सिलेंडर का दाम 10,000 पाकिस्तानी रुपए तक पहुंच चुका है। आज हालात ये हो गए हैं कि देश में महंगाई दर 25 फीसदी के करीब पहुंच चुकी है और कभी भारत से ज्यादा प्रति व्यक्ति आय वाले पाकिस्तान के लोगों की जेब में पैसा नहीं बचा है। देश की ये स्थिति एकदम से नहीं हुई है, बल्कि धीरे-धीरे पाकिस्तान की हालत पतली होती चली गई। एक ओर जहां पाकिस्तान इकोनॉमी में घुन लगती गई, तो देश का फोकस जनता की भलाई से ज्यादा आतंकनीति पर रहा। इसके साथ ही बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं ने भी पाकिस्तान को मस्त से पस्त करने का काम किया। पाकिस्तान को 14 अगस्त 1947 भारत से अलग एक नए मुल्क के तौर पर पहचान मिली थी। साल 1960 आते-आते देश के हालात भारत से भी बेहतर थे और लोगों की जेब में ज्यादा पैसा था। वर्ल्ड बैंक के आंकड़ों पर गौर करें तो साल 1960 में पाकिस्तान की प्रति व्यक्ति आय जहां 6,797 पाकिस्तानी रुपए थी, तो वहीं उस समय भारत में यह आंकड़ा इससे कम यानी 6,708 रुपए था। यानी भारत के मुकाबले ये 89 रुपए ज्यादा थी। लेकिन साल 2021 आते-आते भारत की प्रति व्यक्ति आय 1,85,552 रुपए पहुंच गई और पाकिस्तान की 1,25,496 पाकिस्तानी रुपए रह गई। इन 60 सालों में भारत ने रॉकेट की रफ्तार से आगे बढ़ने का काम किया, जबकि पाकिस्तान आतंकवादियों की शरणस्थली बनकर लगातार गर्त में जाता रहा।

● ऋतेन्द्र माथुर

निर्णायक दौर से गुजरता ईरान

अफगानिस्तान और ईरान में इस समय हिंसा और रोष का माहौल है। जहां अफगानिस्तान में शिक्षा के अधिकार और हिजाब से मुक्ति की मांग कर रही युवतियों पर तालिबान शासन गोलियां दाग रहा है, वहीं ईरान में इस्लामी निजाम के विरूद्ध प्रदर्शन जारी है। सितंबर में हिजाब न पहनने को लेकर हुई महसा अमिनी की हत्या के बाद से ईरान में शुरू हुए विरोध-प्रदर्शनों को सौ से ज्यादा दिन हो गए हैं। ईरान स्थित ह्यूमन राइट्स एक्टिविस्ट न्यूज एजेंसी एचआरएएनए के अनुसार इन प्रदर्शनों में अब तक 516 प्रदर्शनकारियों की जान जा चुकी है और 19,200 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। मरने वालों में महिलाओं और नाबालिगों की संख्या 70 है और 689 लोगों को कारावास से लेकर मृत्युदंड की सजा सुनाई गई है।

प्रदर्शनकारियों का समर्थन करने के कारण ईरान की जानी-मानी अभिनेत्री हेंगमेह गाजियानी और केतोयून रिआही के बाद विश्वविख्यात अभिनेत्री तरानेह अलीदूस्ती को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। अभिनेता अश्कान खतीबी को रिहाई के बाद भी सादी वर्दी वाले सुरक्षाकर्मियों ने सड़कों पर कई बार पीटा है। तमाम फुटबाल खिलाड़ियों और गायकों को भी मौजूदा शासन की बर्बरता का सामना करना पड़ा है। फुटबाल खिलाड़ी अमिर नस्र आजादानी को भी हाल में मृत्युदंड की सजा सुनाई गई है। कुल मिलाकर अब तक करीब सौ लोगों को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई है, जिनमें से 11 लोगों को फांसी पर लटकाया जा चुका है।

● राजेश बोरकर

हाउसवाइफ का महत्व

वह मां है, पत्नी है, बहू है और इसी का फर्ज निभाती है। वह दिन रात चकरी की तरह भागती ही रहती है। जैसे उसके अंदर रोबोट फिट कर दिया गया हो। आखिर उसकी कभी छुट्टी क्यों नहीं होती? आखिर वह कभी आराम क्यों नहीं करती? क्या कभी आपने सोचा है कि एक हाउसवाइफ को कितनी सैलरी मिलनी चाहिए? शायद इस बात का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है, क्योंकि घर की महिला दिन-रात काम करती है। वह कभी छुट्टी भी नहीं लेती है। उसका इंक्रीमेंट नहीं होता। उसे कोई बोनस नहीं मिलता। उसकी ड्यूटी सबसे पहले शुरू हो जाती है और देर रात तक चलती रहती है।

वह सबसे पहले जग जाती है और सबसे आखिरी में सोती है। वह सबके लिए चाय-नाश्ता बनाती है। टिफिन पैक करती है। वह पति, बच्चे, सास-ससुर सभी की देखभाल करती है। घर की साफ-सफाई करती है। घर में क्या है और क्या खत्म होने वाला है सबका ध्यान रखती है। किसका बर्थ डे आ रहा है, किसकी एनिवर्सरी है, किसके घर में शादी है... इन सारी बातों का ध्यान रखती है। वह घर को मैनैज करती है। रिश्तेदारों की खातिरदारी करती है। रविवार के दिन सबकी छुट्टी होती है तो उसका काम डबल हो जाता है। उसे कभी आराम नहीं मिलता है। त्योहार वाले समय में वह और अधिक मेहनत करती है। उसकी कभी छुट्टी नहीं होती है। वह दिन रात सिर्फ काम में लगी रहती है। तो आप बताइए उसकी सैलरी कितनी होनी चाहिए? शायद इसका कोई पैमाना नहीं है। वह ही केयर टेकर है। वह ही कुक है। घर का मैनेजमेंट वही देखती है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) की साल 2011 की एक रिपोर्ट कहती है कि एक औसत भारतीय महिला दिन में करीब छह घंटे ऐसे काम करती है, जिसके लिए उन्हें कोई मेहनताना नहीं मिलता। यही काम अगर किसी बाहरी से करवाया जाता तो उसे सैलरी देनी पड़ती।

घर की महिलाओं का क्या है वे तो इतना काम करने के बाद भी खर्च के पैसे बड़े संकोच के साथ मांगती है। उनसे तो पूछ भी लिया जाता है कि तुम दिनभर करती क्या हो? वे घर खर्च के पैसे में से भी बचत ही करती हैं। उन्हें ऐसा महसूस करवाया जाता है कि तुम मुफ्त की रोटियां तोड़ रही हो। हाउसवाइफ के ऊपर खर्च करने के बाद से ऐसे जताया जाता है कि जैसे कोई फिजूलखर्ची हो गई। वे सबको अपना समझकर अपना सबकुछ न्यौछावर कर देती है। कई महिलाएं तो घर को संभालने के लिए अपनी अच्छी-खासी नौकरी तक छोड़ देती हैं। वे बच्चे पालने में लग जाती हैं। उनकी सीवी में सालों का गैप हो जाता है, जिससे दोबारा नौकरी मिलने में भी परेशानी आती है। ऐसा लगता है कि महिलाओं की जिंदगी घरवालों के लिए ही बनी है। वह उनको संभालने के लिए ही जन्म ली हैं। तभी तो उसे सबकी सेवा में 24 घंटे हाजिर होना पड़ता है।

हाउसवाइफ की वजह से सभी घरवालों को बना बनाया खाना मिल जाता है। पति को समय पर नाश्ता-खाना और धुले-स्त्री किए हुए कपड़े मिल जाते हैं। जिससे वे सही समय पर ऑफिस पहुंच पाते हैं। हाउसवाइफ बच्चों के होमवर्क से लेकर स्कूल प्रोजेक्ट की तैयारी कराती हैं। वह बूढ़े माता-पिता की दवाइयों और सेहत का ध्यान रखती है जैसे कि वह कोई नर्स हो। इस पर ईटी का कहना है कि एक मध्यम वर्गीय परिवार की हाउसवाइफ को कम से कम 45,000 रुपए की सैलरी मिलनी चाहिए। महिलाएं घर के छोटे-मोटे काम खुद ही कर लेती हैं। वे सबकी सेहत का ख्याल रखती हैं। घर का हिसाब किताब भी वही देखती हैं। वे ही बच्चों को ट्यूशन और स्कूल छोड़ने जाने का काम करती हैं।

महिलाएं शादी करके इन जिम्मेदारियों को अपने सिर ले लेती हैं। कई महिलाओं के ऊपर तो इतना काम होता है कि वे अपने खाने-पीने का भी ख्याल नहीं रख पाती हैं। हालांकि हमें कई ऐसे लोग मिल जाएंगे जो यह एहसास कराते हैं कि महिलाओं को तो यह सब करना ही पड़ता है। यह उनका ही काम है। आखिर यह कहां लिखा है कि यह सब करना सिर्फ महिलाओं का काम है? इतना कुछ करने के बाद अगर महिलाएं थोड़ी देर टीवी देख लें या लेट जाएं तो भी उन्हें टोक दिया जाता है। यह नहीं कि घर का कोई सदस्य कभी उनके लिए एक कप चाय बनाकर पिला दे और यह कह दे कि कितना काम करती हो, थोड़ा आराम कर लो। घर के सभी लोग अपना काम उस औरत पर डाल देते हैं कोई यह नहीं सोचता कि वह अपना काम किस पर डालेगी?

● ज्योत्सना अनूप यादव

भोपाल में बही अध्यात्म की धारा

मप्र की राजधानी में पहली बार 2 ऐसे कथाकार जुटे जिन्होंने राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी कथाओं से पहचान पाई है। इनमें एक थीं जयाकिशोरी और दूसरे थे जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज। भोजपाल महोत्सव मेला समिति द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में भोपाल ही नहीं बल्कि आसपास के लोग कथा सुनने पहुंचे। भेल दशहरा मैदान पर सबसे पहले जया किशोरी ने भागवत कथा की। यह कथा 15 जनवरी से 21 जनवरी तक चली। प्रसिद्ध कथावाचक जया किशोरी ने भजनों की धुन से राजधानी में खूब रंग जमाया। उन्होंने कथा के श्रोताओं में युवाओं के आने पर खुशी जताते हुए कहा कि मैं खुद एक युवा हूं शायद इसलिए मेरी कथाओं में यूथ काफी आता है। मुझे देखकर उनको शायद ऐसा लगता है कि उनके जैसा कोई इस मंच तक से उनकी भावनाएं कह रहा है। भोपाल के अपने कार्यक्रम के बारे में उन्होंने कहा- मुझे बहुत खुशी है कि मैं यहां भोपाल में श्रीमद्भागवत कथा लेकर आई हूं। भक्त आएं और कथा का आनंद लें, हमारी यही कोशिश है कि उनको रूचिकर लगे।

अपनी कथा में जया किशोरी ने कहा कि मनुष्य के पास जो होता है, वह उससे खुश नहीं होता, बल्कि जो उसके पास नहीं होता है, उसके लिए दुखी रहता है। हम दूसरों की चीजों को देखकर तो खुश होते हैं, लेकिन अपनी चीजों को महत्व नहीं देते। हमें अपनी ही चीजों पर तब तक भरोसा नहीं होता, जब तक दूसरे लोग या देश उस पर मुहर नहीं लगा देते, ऐसे ही शिक्षा का अपना ही खजाना हम भूल चुके हैं, जबकि सबसे पहले शिक्षा हमने ही दी थी। हमारे देश में पहले साढ़े सात लाख गुरुकुल थे। इस मौके पर उन्होंने माखन चोरी लीला की प्रस्तुति दी। कथा के दौरान जया किशोरी ने कहा कि भगवान जिसके घर में चोरी करते थे, वहां से वे माखन ही नहीं, बल्कि मोह, माया, क्रोध आदि को समाप्त कर भक्ति का दान देते थे। गाय का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि मां के बाद जो दूध होता है वह गाय का होता है, इसीलिए गाय को मां का दर्जा दिया गया है। इस मौके पर सुमधुर भजनों की प्रस्तुति पर श्रद्धालु भक्ति नृत्य करते हुए नाचने, झूमने लगे। इस मौके पर उन्होंने गोवर्धन लीला प्रसंग की कथा भी विस्तार से सुनाई। इस मौके पर उन्होंने माखन चोरी लीला की प्रस्तुति दी। कथा के दौरान जया किशोरी ने कहा कि भगवान जिसके घर में चोरी करते थे, वहां से वे माखन ही नहीं, बल्कि मोह, माया, क्रोध आदि को समाप्त कर भक्ति का दान देते थे। गाय का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि मां के बाद जो दूध होता है वह गाय का होता है, इसीलिए गाय को मां का दर्जा दिया गया है। इस मौके पर सुमधुर भजनों की प्रस्तुति पर श्रद्धालु भक्ति नृत्य करते हुए नाचने, झूमने लगे। इस मौके पर उन्होंने गोवर्धन लीला प्रसंग की कथा भी विस्तार से सुनाई।

वहीं 23 से 31 जनवरी तक जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज ने रामकथा सुनाई। श्रीराम कथा की शुरुआत कलश यात्रा से हुई। बरखेड़ा स्थित श्रीकृष्ण मंदिर से कलश यात्रा निकाली गई। यात्रा में करीब 500 महिलाएं सिर पर कलश लेकर चलीं। हजारों की संख्या में श्रद्धालु भी साथ चले। कथा के शुरुआत में जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज के स्वागत में गुफा मंदिर के महंत रामप्रवेश दास महाराज ने गाय का महत्व बताते हुए- गैया लगै मोहे प्यारी, जगपालन हारी... भजन की प्रस्तुति दी।

कथा की शुरुआत सीताराम संकीर्तन से हुई। श्रीराम कथा के दौरान जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज ने बताया कि वे अभी तक 1360 कथा कर चुके हैं। भोपाल में होने वाली कथा 1361वीं है।

● ओम

आखिर क्यों?

सौतेली मां के दुर्व्यवहार की पीड़ा झेलती किरण एक शहर में ससुराल आई। सीधा-सादा पति तो मिला; पर सास-ननद की एक खतरनाक जोड़ी से उसका पाला पड़ा। वैसे पति से कोई शिकायत नहीं थी; क्योंकि बचपन में उसने पिता नाम का एक पुरुष देखा था। ससुराल में मिली गरीबी की दंश से बचने के लिए किरण दूसरे के घर काम करने जाने लगी।

फिर यहां मालकिन रूपी एक विषैली औरत की फुंकार सुनने को मिलने लगी- 'आओ महारानी। अभी तुम्हारा समय हुआ। देखो, अभी कितना काम पड़ा। कौन करेगा यह सब? पेमेंट किसका लेती हो आखिर? एडवांस ही एडवांस चलता है तुम्हारा।' किरण एक शब्द नहीं बोली। चुपचाप अपने काम में लग गई।

उसे समय का पता ही नहीं चला। रात हो गई। आठ-साढ़े आठ हो गया। घर लौटते वक्त मालकिन ने आखिर सुना ही दिया- 'अगर आना होगा तुम्हें, तो सुबह छः बजे आ जाना; वरना कहीं और जगह काम देख लेना।' फटाक... से दरवाजे की आवाज किरण के कानों पर पड़ी। अपने घर पहुंचते तक अंतरात्मा से घायल किरण असमंजस में पड़ गई। उसके अंदर एक ही बात चल रही थी कि नारी ही नारी का शोषण क्यों करती है? आखिर क्यों...आखिर क्यों...?

- टीकेश्वर सिन्हा

सोच

झांसी वाला रिश्ता हमें नहीं जम रहा। मां ने कहा-

क्या कमी है उसमें? अच्छा कमा रहा है, इकलौता बेटा है। पापा ने अपनी बात रखी।

शिवानी के मैच का नहीं है, रंग कितना दबा है। इससे तो कानपुर वाला- मायके आई बड़ी दीदी आगे कुछ बोलतीं, कि दादी ने टोक दिया।

अरे लड़के का कहीं रूप रंग देखा जाता है। ऐसे मीन-मेख करतीं रहीं तो हो चुका ब्याह शिवानी का।

मम्मी, शिवानी दीदी का ब्याह हो जाएगा तो उनका कमरा मुझे मिल जाएगा न? छोटा मिंटू अपनी जुगाड़ में था।

सब शिवानी के बारे में सोच रहे थे, शिवानी अपने बारे में क्या सोचती है, यह किसी ने नहीं सोचा।

- सुनीता मिश्रा

कुश्ती महासंघ में विवाद क्यों?

वर्ष 2016 में आयोजित रियो ओलंपिक में जाने के लिए कुश्ती के 74 किलो भार वर्ग में ट्रायल होना था। ट्रायल में जीतने वाले पहलवान को रियो भेजा जाना था। सुशील कुमार और नरसिंह यादव इस भार वर्ग में जाने के दावेदार थे, लेकिन सुशील कुमार ने ट्रायल में भाग नहीं लिया और भारतीय कुश्ती महासंघ पर दबाव बनाया कि वह देश के लिए ओलंपिक में दो बार पदक जीत चुके हैं, लिहाजा उन्हें बिना ट्रायल रियो भेजा जाए। पहले ऐसा होता रहा है। कुश्ती महासंघ, जिसके अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह थे, ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। महासंघ ने कहा कि सुशील ने 66 किलोग्राम भार वर्ग में ओलंपिक पदक जीते हैं। 74 किलो भार वर्ग में चयन के लिए ट्रायल देना होगा, लेकिन सुशील ने ट्रायल नहीं दिया। दूसरी ओर नरसिंह यादव ने ट्रायल दिया और जीत के बाद उनका चयन रियो ओलंपिक जाने के लिए हो गया।

सुशील कुमार को महासंघ की चयन प्रक्रिया रास नहीं आई और वे इसके खिलाफ दिल्ली हाईकोर्ट चले गए। कोर्ट ने मामला सुनने के बाद सुशील की याचिका खारिज कर दी, जिसके बाद सुशील के रियो जाने का सपना खत्म हो गया। इसी बीच छत्रसाल स्टेडियम में तैयारी कर रहे नरसिंह यादव रहस्यमयी ढंग से डोप टेस्ट पॉजिटिव पाए गए। नरसिंह ने आरोप लगाया कि सुशील कुमार के इशारे पर उनके खाने में कुछ मिलाया गया है ताकि वह रियो ना जा पाएं। आरोप लगा कि खुद रियो जाने के लिए सुशील ने यह षड्यंत्र रचाया है। जांच कमेटी बनाई गई, लेकिन छत्रसाल स्टेडियम में सुशील कुमार के श्वसुर नामी पहलवान सतपाल का वर्चस्व था, लिहाजा सुशील कुमार के खिलाफ कुछ नहीं हुआ तथा जांच में भी लीपापोती कर दी गई। डोपिंग टेस्ट सेंटर से नरसिंह को रियो में जाने की मंजूरी मिली, लेकिन वाडा ने उनके रियो जाने पर रोक लगाते हुए चार साल के लिए प्रतिबंध लगा दिया और एक उभरते हुए पहलवान का भविष्य खत्म हो गया।

कुश्ती महासंघ ने नरसिंह के अयोग्य घोषित होने के बावजूद 74 किलो वर्ग में सुशील कुमार को रियो नहीं भेजा। सुशील खुद छत्रसाल के ओएसडी हो चुके थे। अपने श्वसुर और रिश्तेदार पहलवानों के दम पर वह अपना वर्चस्व साथी पहलवानों पर जमाने लगे। योगेश्वर दत्त का भी सुशील से विवाद हुआ तब योगेश्वर छत्रसाल स्टेडियम छोड़कर चले गए। दरअसल, सुशील एवं उनके साथियों का कुश्ती में इस कदर वर्चस्व हो गया कि वो किसी का कैरियर बनाने-बिगाड़ने की हैसियत में आ चुके थे। इस मजबूत लॉबी को हरियाणा के कांग्रेस नेता भूपिंदर सिंह हुड्डा और उनके बेटे दीपेंदर सिंह हुड्डा, जो हरियाणा कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष रहे, का संरक्षण था। वहीं भारतीय कुश्ती महासंघ चुनाव में 2011 में दीपेंदर को हराकर अध्यक्ष बने बृजभूषण शरण सिंह, जो खुद बाहुबली राजनेता हैं, हरियाणा लॉबी से टकराव लेने लगे। बृजभूषण ने बिना ट्रायल चयन के नियमों में बदलाव कर हरियाणा की लॉबी को बड़ी चुनौती दी। उन्होंने कोटा नियम में बदलाव कर अन्य राज्यों के खिलाड़ियों को भी मौका देने की पहल की। इससे बड़े टूर्नामेंट में हरियाणा के पहलवानों की संख्या सीमित होने लगी। डोप प्रकरण में भी बृजभूषण खुलकर सुशील कुमार के विरोध में नरसिंह यादव के साथ खड़े रहे। लेकिन बृजभूषण शरण सिंह यहीं नहीं रुके, बल्कि कुश्ती महासंघ के नियम-कानूनों में समय-समय पर बदलाव करके हरियाणा के पहलवानों पर अपना अंकुश लगाने लगे। यहां तक कि पहलवानों को मिलने वाली प्राइवेट स्पॉन्सरशिप पर भी रोक के लिए नियम बना दिया कि उनकी मर्जी के बिना कोई पहलवान प्राइवेट स्पॉन्सर से सीधे डील नहीं कर सकता। सत्ताधारी पार्टी के सांसद और बाहुबली होने के नाते बृजभूषण शरण सिंह की कुश्ती महासंघ चुनावों में लगातार जीत होती गई। बाहुबली राजनेता के प्रभुत्व को रोकना खिलाड़ियों के लिए संभव नहीं था। अध्यक्ष पद पर तीन कार्यकाल पूरा होने के बाद बृजभूषण शरण सिंह कुश्ती महासंघ अध्यक्ष का चुनाव नहीं लड़ सकते थे।

● आशीष नेमा

श्रीदेवी के स्टारडम से घबराते थे सलमान खान

80 और 90 के दशक में बॉलीवुड में राज करने वाली अभिनेत्री श्रीदेवी ने अपने कैरियर में कई करिश्मे किए हैं। साउथ इंडस्ट्री से अभिनय की शुरुआत करने वाली श्रीदेवी की दमदार एक्टिंग और अदाओं का जलवा पूरे देश में छा गया। कुछ ही फिल्मों में काम कर श्रीदेवी बॉलीवुड की पहली लेडी सुपरस्टार बनीं।

श्रीदेवी की स्टार्डम इस कदर हावी थी कि सिनेमा के बड़े मेल सितारे उनके साथ फिल्म करने से घबराते थे। अपने अकेले के दम पर फिल्म कराने का दम रखने वाली श्रीदेवी ने कई बेहतरीन पर्फोमेंस दिए हैं। एक बार तो सलमान खान ने भी यह कबूल किया था कि वे श्रीदेवी के साथ फिल्म करने पर नर्वस हो गए थे। सलमान खान ने एक पुराने इंटरव्यू में खुद इसका खुलासा किया था।

सलमान खान और श्रीदेवी साल 1993 में चंद्रमुखी और 1994 में चांद का चेहरा फिल्म साथ में की है। इसके अलावा कभी भी साथ में काम नहीं किया। सलमान खान ने बताया था कि वे श्रीदेवी की स्टार्डम से नर्वस हो गए थे। दरअसल सितारों को लाइम लाइट मिलने का भी डर रहता है। 90 के दशक में श्रीदेवी का जलवा हुआ करता था। 51 सालों तक पर्दे पर अपनी अदाओं जलवा बिखेरने वाली अभिनेत्री का साल 2018 में दुबई में निधन हो गया था। साल 1963 में जन्मी श्रीदेवी ने महज 4 साल की उम्र से बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट अभिनय की शुरुआत की थी। इसके बाद तेलगू, तमिल और मलयालम फिल्मों में काम किया। बाद में बॉलीवुड में एंट्री ली और धूम मचा दी। श्रीदेवी ने बॉलीवुड में कई शानदार फिल्में की हैं। जिनमें इंग्लिंश विंग्लिश, खुदा गवाह, मिस्टर इंडिया, सदमा, चालबाज जैसी कई फिल्में शामिल हैं।

श्री भूपेंद्र सिंह
नगरीय प्रशासन मंत्री

श्री राव उदयप्रताप सिंह
सांसद

श्री डॉ. सीतासरन शर्मा
विधायक

श्री पंकज चौरे
अध्यक्ष नगर पालिका इटारसी

7५वें गणतंत्र दिवस की शुभकामनाओं सहित...

- कचरा चार भागों (सूखा, गीला, घरेलू हानिकारक और सेनीटरी) के रुप में अलग-अलग कर रखें।
- अपने आसपास सफाई रखें, न गंदगी करें, न किसी को करने दें।
- सार्वजनिक स्थानों को साफ रखने में हमेशा सहयोग करें।

श्रीमती हेमेश्वरी पटले
मुख्य नगर पालिका अधिकारी

हम सब शहरवासी शहर को स्वच्छ बनाकर
शहर को प्रदेश में अव्वल लाने का संकल्प लें

नगर पालिका परिषद, इटारसी, जिला-नर्मदापुरम (म.प्र.)

दोषी कोई और है, मैं नहीं...

इस असार संसार में एकमात्र निर्मल प्राणी यदि कोई है, तो वह मनुष्य ही हो सकता है। इस बात को सिद्ध करने के लिए मनुष्य से अच्छा प्रमाण मिलना संभव नहीं है। उदाहरण के लिए यदि आपसे कोई गलत, अनैतिक, अनुचित, असामाजिक, अवैध या देश, कानून और समाज की दृष्टि में गलत कार्य जाने या अनजाने में हो जाता है, तो बिना सोचे-समझे आप यही कहेंगे कि यह मैंने नहीं फलां व्यक्ति ने अथवा किसी और ने किया है; मैंने नहीं किया। आप शत-प्रतिशत नकार जाएंगे कि उसे आपने ही अंजाम दिया है। किसी भी तरह आप अपना दोष स्वीकार नहीं करेंगे। स्वदोष स्वीकार न करने की यह कला, प्रवृत्ति या संस्कार मनुष्य मात्र में स्वभावगत है। आपके स्थान पर मैं या कोई अन्य व्यक्ति भी होगा तो वह भी वही करेगा, जो आपने किया है।

यदि मनुष्य स्व दोषों को सहजता से स्वीकार कर लेता तो आज के संसार की दशा और दिशा कुछ और ही होती। ये कचहरियां, दीवानियां, अदालतें, जज, अधिवक्ता, स्टाम्प वेंडर आदि कुछ भी न होते। हजारों लाखों लोगों का व्यवसाय ही चौपट हो जाता। अदालतें अदालतें न होकर दंगल के मैदान हैं, जहां लड़ाई झूठ और झूठ के बीच नहीं, बल्कि सच और सच के बीच है। वादी अपने को सच कहता है, और प्रतिवादी अपनी सच्चाई का बिगुल बजाता है। फिर ये झूठ क्या वकील साहब के काले कोट की जेब में छिपा बैठा रहता है। यदि प्रतिवादी के खिलाफ मजबूत प्रमाण मिल गए और उन्होंने सही सिद्ध भी कर दिया तो प्रतिवादी पराजित हो जाता है। वह दोषी सिद्ध हो जाता है। यदि सहजता से उसके द्वारा अपना दोष स्वीकार कर लिया जाता तो कोर्ट कचहरी (जहां मुकदमा लड़ते-लड़ते कच का हरण हो जाए) का इतना सारा बखेड़ा क्यों खड़ा होता। पर इससे कुछ लोगों का रोजगार चलना भी तो जरूरी था, इसलिए दूध का दूध पानी का पानी करने के लिए काले कोटों के बीच सफेदी की लड़ाई करनी आवश्यक हो गई।

इसके विपरीत स्थिति में विचार करके देखें तो स्पष्टत: यह तथ्य प्रत्यक्ष होता है कि मनुष्य बुरे और बुरे से भी बुरे कार्य करने का दायित्व दूसरों पर डालता है। किंतु यदि अच्छा कार्य करता है तो फोटो खिंचवाकर, वीडियो बनवाकर, अखबारों, टीवी और सोशल मीडिया पर प्रसारित करवाकर स्व श्रेय लूटने में पीछे नहीं रहता। मात्र स्वदोष का प्रक्षेपण ही दूसरों पर किया जाता है। मनुष्य की इसी प्रवृत्ति की देन हैं ये समस्त प्रकार के कोर्ट, हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट। इसका अर्थ यह भी हुआ कि कोर्ट अच्छे कार्य के लिए न होकर उसके दोषों को उजागर करने और उसकी सचाई बाहर लाने के लिए ही बनाए गए हैं, किंतु क्या इन सबके बावजूद उसने गलत काम करना, अपराध करना अथवा झूठ से दूर रहना छोड़ा है? इस कार्य में कोई कमी न आकर और भी बढ़ोत्तरी हुई है। आदमी दिन-प्रतिदिन किस दिशा में जा रहा है, स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। उसके निरंतर दिशा-विवर्तन के कारण ही उसकी दशा का सुरूप-कुरूप होता जा रहा है।

अपने को खटाई में न डालकर दूसरों को खटाई में झोंक देने का स्वभाव मनुष्य की काइयांपन की प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रहा है। मैं सुरक्षित बचा रहूं, सब भाड़ में जाएं। यह सोच उस आदमी की है जो बहुत अधिक धार्मिक, पवित्र, उदार, मानवतावादी, आध्यात्मिक, परोपकारी, जनसेवी और करुणाशील होने के दंभ में चूर रहता है। लेकिन जब समय, कानून और न्याय का डंडा उसकी पूंछ उठाकर उसका नग्न यथार्थ जग जाहिर कर देता है, तो उसे अपना मुंह छिपाने के लिए भी सुरक्षित जगह की खोज करनी पड़ती है।

इस प्रकरण की एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि पढ़े-लिखों और बिना पढ़े-लिखों में कुछ तो अंतर अवश्य होता ही है। साधारणत: जितने काइयांपन और चतुराई से पढ़ा-लिखा व्यक्ति स्वदोष पर आवरण डालने में कुशल होता है, उतनी कुशलता एक सीधा और सरल व्यक्ति नहीं दिखा पाता। पढ़-लिखकर स्वदोषों को छिपाने की कलाओं, युक्तियों, बुद्धि-चातुर्य, जुगाड़बाजी आदि की मात्रा में कई गुना वृद्धि हो जाती है। पढ़ा ही इसीलिए जाता है। पढ़ा-लिखा व्यक्ति कोरी स्लेट नहीं होता। पढ़-लिखकर भी यदि कोई कोरी स्लेट बना रह गया तो उसका पढ़ना-लिखना ही अकारथ! इसलिए स्वदोष प्रक्षालनार्थ पढ़ाई एक अनिवार्य कर्म है। स्वदोष प्रक्षालन का साबुन है पढ़ाई। वही दोष के मैल को रगड़-रगड़ कर साफ कर देती है।

● **डॉ. भगवत स्वरूप 'शुभम**

SCIENCE HOUSE MEDICAL PVT. LTD.

26 January Republic Day

For Any Medical & Pathology Equipments Contact Us

D-10™ Hemoglobin Testing System

For HbA_{1c}, HbA_2 and HbF

Flexible
to solve more testing needs

Comprehensive
B-thalassemia and diabetes testing

Easy
for simple operation

Dependability is about more than keeping your laboratory running smoothly; It's about the quality diabetes care you support. That's why we developed the D-10™ System with reliability and efficiency in mind.

A simple, fully-automated solution, the D-10™ System Combines diabetes and B-thalassemia testing, enabling rapid HbA_{1c} or HbA_2/F/A_{1c} testing using pripary tube sampling-so you can accomplish more in fewer steps, With the D-10™ System, It's easier to deliver a full picture of diabetes treatment progress-and that can be the difference for the people who count on you most.

Add:- C-65, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023
GST.No. : 23AAPCS9224G1Z5 Email : shbple@rediffmail.com
Phone : +91-0755-4241102, 4257687, Fax : +91-0755-4257687

RK GROUP
WONDER CEMENT
EK PERFECT SHURUAAT
वंडर सीमेंट
PORTLAND POZZOLANA CEMENT (FLY ASH BASED)
जब दिल में हो जज़्बात
तभी होती है एक परफेक्ट शुरुआत
Scan to watch our latest film
WONDER CEMENT
EK PERFECT SHURUAAT
Toll-free No.: 1800 31 31 31 | wondercement.com